CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5027

ॐ श्री वीतरागाय नमः ॐ

श्री वीतराग विज्ञान साहित्य प्रकाशन समिति उत्तर प्रदेशीय
मुमुक्षु मंडल का पुष्प नं० २

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला

[द्वितीय भाग]

106

प्रकाशक

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल
देहरादून-आगरा

पुस्तक प्राप्ति स्थान

नेमचन्द जैन
जैन बन्धु
पलटन बाजार,
देहरादून (यू० पी०)

पदमचन्द जैन सर्राफ
चैतन्य विलास ३/२०
महात्मा गांधी रोड,
आगरा-२

दूसरी बार ५०००
भगवान महावीर के पच्चीससौवें,
निर्वाण महोत्सव के अन्तर्गत प्रकाशित

मूल्य लागत मात्र
रु० १-४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर के पच्चीस सौवे
निर्वाण महोत्सव के अन्तर्गत प्रकाशित
वीतराग विज्ञान साहित्य प्रकाशन समिति
उत्तर प्रदेशीय मुमुक्षु मण्डल पुष्प—२

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला

द्वितीय भाग

(दूसरा संस्करण)

प्रकाशक :

वीतराग विज्ञान साहित्य प्रकाशन समिति

उत्तर प्रदेशीय मुमुक्षु मण्डल

पुस्तक प्राप्ति स्थान

सेमचन्द्र जैन
जैन बंधु
पलटन बाजार
देहरादून

पद्मचन्द्र जैन सर्राफ
चैतन्य विलास
३/२० महात्मा गांधी रोड
आगरा—२

मूल्य लागत मात्र
१ रु० ४० पै०

मुद्रक : आदर्श प्रेस, अलीगढ़ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय-सूची

मुख्य विषय	पृष्ठ	प्रश्न नं० से	प्रश्न नं० तक
कर्ता-कर्मादि छह कारक अधिकार पृष्ट २ से ६२ तक			
कारक का स्वरूप	२	२	७
व्यवहारकारक को सच्चा मानने वाले को क्या कहा	५		
व्यवहार के विषय में क्या समझना	५	१८	३१
कर्ता कारक	११	३८	६६
कर्म कारक	१७	६७	८२
सात तत्वों सम्बन्धी कथन	२२	८४	१२३
करण कारक	२८	१२७	१५३
सम्प्रदान कारक	३३	१५४	१६०
अपादान कारक	३४	१६१	१७८
अधिकरण कारक	३८	१७९	१८८
आठ कर्मों की सिद्धि	४२	१८९	२१३
चारों प्रकार के कारकों को कैसे लगाना	४८	२२३	२३२
विकारी भावों को निरपेक्ष क्यों कहा	५५	२४०	२४१
व्याप्य-व्यापक का स्वरूप	५७	२५३	२८०
उपादान-उपादेय, निमित्त-नैमित्तिक अधिकार	पृष्ठ ६३ से १४४ तक		
कार्य किस प्रकार होता है	६३	१	५
कारणानुविधायिनी कार्याणि को कब माना	६४	७	२३
उपादान किसे कहते हैं	७३	४२	५३
कुम्हार ने घड़ा बनाया(विशेष रूप से देखो)	७६	५७	६६
बाई ने रोटी बनाई (विशेष रूप से देखो)	८१	६८	७९
योग्यता	८७	८६	९४
उपादान-उपादेय	९१	९५	१०१
निमित्त कारण	९२	१०२	११६
निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध	९८	११७	२००
निमित्त उपादान को जानने का फल	११३	२०१	२०२
समयसार गाथा १०० के चार बोल	१२१	२३२	२४५
उपादान निमित्त-भैया भगवती दास जी	१३१	२७०	२७३
एक वाक्य पर से कितने प्रश्न उठते हैं ?	१४४	२७४	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला द्वितीय भाग की प्रस्तावना

सन् १९६९ श्रावण मास में प्रथमबार पं० कैलाशचन्द्र जी वुलन्दशहर वालों की शुभ प्रेरणा से हमको अध्यात्म सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के दर्शन हुए।

जगत के जीव दुःख से छूटने के लिए और सुख प्राप्त करने के लिए सतत् प्रयत्नशील हैं। परन्तु मिथ्यात्व के कारण जगत के जीवों के समस्त उपाय मिथ्या हैं। सुखी होने का उपाय एकमात्र अपने शुद्धस्वरूप की पहचान, उसका नाम सम्यग्दर्शन है। ऐसे सम्यग्दर्शन का उपदेश ही श्री कानजी स्वामी के प्रवचनों का सार है। हमें लगता है कि भव्य जीवों के लिए इस युग में श्री कानजी स्वामी के उपकार करोड़ों जबानों से कहे नहीं जा सकते हैं।

सोनगढ़ में श्री खेमचन्द भाई तथा श्री राम जी भाई से जो कुछ हमने सीखा पढ़ा है उसके अनुसार श्री कैलाशचन्द्रजी द्वारा गुन्थित प्रश्नोत्तरों का हमने बारम्बार मनन किया तो हमें ऐसा लगा कि हमारे जैसे तुच्छ बुद्धि जीवों की बहुलता है। अपना हित करने में निमित्त रूप से प्रश्नोत्तरों के रूप में जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला द्वितीय भाग बहुत ही उपयोगी ग्रन्थ होगा। हमने पंडित कैलाश चन्द्र जी से इस ग्रन्थ को छपा देने की इच्छा व्यक्त की। उनकी अनुमति पाकर, मुमुक्षुओं को सद्मार्ग पर चल कर अपना आत्महित करने का बल मिले-ऐसी भावना से यह पुस्तक आपके हाथ में है।

इस रत्नमाला में मुमुक्षुओं के अध्ययन के लिए अत्यन्त उपयोगी विषय छहकारक, उपादान-उपादेय, निमित्त-नैमित्तिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधिकार लिये गये हैं। इसके अभ्यास से अवश्य ही पर में कर्ता-भोक्ता की खोटी बुद्धि का अभाव होकर जीवों को धर्म की प्राप्ति का अवकाश है। ऐसी भावना से ओतप्रोत होकर हम आत्मार्थियों से निवेदन करते हैं कि इस पुस्तक का अभ्यास कर अपने हितमार्ग पर आरूढ़ होवें।

विनीत
मुमुक्षु मंडल
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
सरनीमल हाऊस, देहरादून।

प्रकाशकीय दूसरी आवृत्ति का निवेदन

प्रथम आवृत्ति बहुत शीघ्र बिक जाने से, दूसरी आवृत्ति की धर्म जिज्ञासुओं द्वारा बहुत माँग रही है अतः जिन दर्शन के रहस्य को स्पष्ट करने वाली अपनी विशेषता को लिए हुए यह जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला की दूसरी आवृत्ति है।

श्रीमान् माननीय श्री खेमचन्द जी भाई, माननीय श्री बाबू भाई चुन्नीलाल मेहता तथा पं० कैलाश चन्द्र जी ने अपना अमूल्य समय देकर ग्रन्थ के संरक्षण में पूरा योगदान दिया है, हम सब मुमुक्षु इन सबके हृदय से अत्यन्त आभारी हैं।

निवेदक
(१) नेमचन्द्र जैन देहरादून (२) पदमचन्द्र जैन सर्राफ आगरा
श्री वीतराग विज्ञान साहित्य प्रकाशन समिति, उत्तर प्रदेशीय मुमुक्षु मंडल।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूमिका

अनादि काल से परमगुरु सर्वज्ञदेव, अपरगुरु गणधरादि ने जिस वस्तु स्वरूप का वर्णन किया है, वही वस्तु स्वरूप वर्तमान में पूज्य श्री कानजी स्वामी बतला रहे हैं। उसी वस्तु स्वरूप का ज्ञान हर वर्ष कक्षाओं द्वारा श्री रामजी भाई तथा श्री खेमचन्द्र जी भाई कराते रहे हैं। उन सबके द्वारा विवेचित वस्तु स्वरूप जो मेरे ज्ञान में आया उसे मैं सदैव प्रश्नोत्तरों के रूप में लेख बद्ध करता रहा हूँ। धीरे-धीरे सरल प्रश्नोत्तरों के रूप से समस्त जैन शासन का सार लेखबद्ध हो गया।

मेरे विचार में सत्य बात समझ में ना आने का मुख्य कारण जिनेन्द्र देव की आज्ञा का पता ना होना और जिनागम का रहस्य दृष्टि में ना आने से अपनी मिथ्याबुद्धि के अनुसार शास्त्रों का मिथ्या अभ्यास करना है। जिसके फल स्वरूप अज्ञानी जीव स्वयं की मिथ्याबुद्धि से संसार-मार्ग का आचरण करते हैं। वस्तुतः किसी भी जैन शास्त्र का स्वाध्याय करने से पूर्व यदि निम्न प्रश्नोत्तरों का मनन कर लिया जाये तो शास्त्रों का सही अर्थ समझने में सुविधा रहेगी तथा संसार मार्ग से बचने का अवकाश रहेगा।

प्रश्न १—चारों अनुयोगों के प्रत्येक वाक्य में से चार बातें कौन-कौनसी निकालनी चाहिए ?

उत्तर—(१) जिन, जिनवर और जिनवरवृषभ क्या कहते हैं ? (२) जिन, जिनवर और जिनवरवृषभों के कथन को सुन कर ज्ञानी क्या करते हैं ? (३) मिथ्यादृष्टि पात्र भव्य जीव क्या करता है ? (४) मिथ्यादृष्टि अपात्र जीव क्या करता है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २—किसी भी अनुयोग का एक वाक्य लेकर चार बातें स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर—(१) जिन, जिनवर और जिनवर वृषभों ने कहा है कि "अनादि निधन वस्तु न्यारी-न्यारी अपनी-अपनी मर्यादा लिए परिणमें है; कोई किसी का परिणमाया परिणमता नाहीं, किसी को परिणमाने का भाव मिथ्यादर्शन है" इससे पता चल जाता है कि सम्पूर्ण ज्ञानियों का एक ही मत है। (२) इस वाक्य का रहस्य ज्ञानी जानता है, वह अपने में स्थिरता करके श्रेणी मांडकर क्रम से सिद्ध दशा की प्राप्ति कर लेता है। (३) अज्ञानी पात्र भव्यजीव अपनी भूल जानकर, भूलरहित स्वभाव का आश्रय लेकर, ज्ञानी बनकर ज्ञानी की तरह क्रम से सिद्धदशा की प्राप्ति कर लेता है। (४) अज्ञानी अपात्र जीव इसका विरोध करके मिथ्यात्व की पुष्टि करके निगोद में चला जाता है।

प्रश्न ३—किस-किस बात का निर्णय करके शास्त्राभ्यास करें, तो कल्याण का अवकाश है ?

उत्तर—(१) व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध एक द्रव्य का उसकी पर्याय में होता है, दो द्रव्यों में व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध कभी भी नहीं होता। (२) अज्ञानी का व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध शुभाशुभ विकारी भावों के साथ कहो तो कहो, परन्तु पर द्रव्यों के साथ तथा आठकर्मों के साथ तो व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध किसी भी अपेक्षा नहीं; (३) ज्ञानी का शुद्ध भावों के साथ व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध है, द्रव्यकर्म, नोकर्म और भावकर्म का व्यवहार से ज्ञेय-ज्ञायक सम्बन्ध है; (४) मैं आत्मा व्यापक और शुद्धभाव मेरा व्याप्य है ऐसा विकल्प भी रहेगा तो धर्म की प्राप्ति नहीं होती, (५) मैं अनादि अनन्त एक रूप भगवान हूँ और मेरी पर्याय में मेरी मूर्खता के कारण एक समय का बहिरात्मपना है; ऐसा जानकर अनादि अनन्त एकरूप स्वभाव की दृष्टि करें तो संसार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का अभाव हो जाता है। इन पाँच बातों का निर्णय करके शास्त्राभ्यास करे तो कल्याण का अवकाश है।

प्रश्न ४—शास्त्रों में जहाँ दो द्रव्यों को मिलाकर, दो गुणों को मिलाकर तथा दो पर्यायों को मिलाकर निरूपण किया हो वहाँ क्या समझना चाहिए ?

उत्तर—यह उपचार से कथन किया है। इसका अर्थ "ऐसा है नहीं, निमित्तादिक की अपेक्षा कथन किया है" ऐसा जानना चाहिए।

प्रश्न ५—कैसा जाने-माने तो सम्पूर्ण दुख का अभाव हो ?

उत्तर—जैसा पदार्थों का स्वरूप है वैसा ही श्रद्धान-ज्ञान-आचरण करे तो सम्पूर्ण दुःख का अभाव हो।

प्रश्न ६—पदार्थों का स्वरूप कैसा है, जिसके श्रद्धान-ज्ञान-आचरण से सम्पूर्ण दुःख का अभाव हो जाता है ?

उत्तर—जीव अनन्त, पुद्गल अनन्तानन्त, धर्म-अधर्म-आकाश एक-एक और लोक प्रमाण असंख्यात कालद्रव्य हैं; प्रत्येक द्रव्य में अनन्त-अनन्त गुण हैं; प्रत्येक गुण में एक-एक समय में एक पर्याय का उत्पाद, एक पर्याय का व्यय और गुण ध्रौव्य रहता है; ऐसा प्रत्येक द्रव्य के प्रत्येक गुण में हो चुका है, हो रहा है और होता रहेगा। इसके जानने-मानने और आचरण करने से सम्पूर्ण दुःख का अभाव तुरन्त हो जाता है।

प्रश्न ७—आगम के प्रत्येक वाक्य का मर्म जानने के लिए क्या जानकार स्वाध्याय करे ?

उत्तर—चारों अनुयोगों के प्रत्येक वाक्य में शब्दार्थ, नयार्थ मतार्थ, आगमार्थ और भावार्थ निकालकर स्वाध्याय करने से आगम का रहस्य समझ में आ सकता है।

प्रश्न ८—किसके समागम से रहकर तत्व का अभ्यास करना चाहिए ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—जैसे हीरे जवाहरात की दुकान का कार्य उस कार्य को भलिभाँति से जानने वाला ही चला सकता है; उसी प्रकार जिन धर्म के रहस्य का वक्ता ज्ञानी ही हो सकता है, इसलिए ज्ञानियों के समागम में रहकर ही तत्व का अभ्यास करना चाहिए।

प्रश्न ९—ऐसा कहाँ लिखा है कि ज्ञानियों के समागम में ही रहकर अभ्यास करना चाहिए ?

उत्तर—पं० टोडरमल जी ने मोक्षमार्गप्रकाशक पृष्ठ १७ में लिखा है कि विशेष गुणों के धारी वक्ता का संयोग मिले तो बहुत भला है ही और ना मिले तो श्रद्धानादिक गुणों के धारी वक्ताओं के मुख से ही शास्त्र सुनना। इस प्रकार के गुणों के धारक मुनि अथवा श्रावक सम्यग्दृष्टि उनके मुख से शास्त्र सुनना योग्य है।

प्रश्न १०—किसका सहवास नहीं करना चाहिए ?

उत्तर—पाहुड़ दोहा २०वें दोहे में लिखा है कि "विष भला विष-धर सर्प भला, अग्नि या वनवास का सेवन भी भला, परन्तु जिन धर्म से विमुख ऐसे मिथ्यात्वियों का सहवास भला नहीं।"

प्रत्येक प्रश्न व उत्तर जैन शास्त्रों से लिये गये हैं और साथ ही स्थान-स्थान पर शास्त्रों का उल्लेख भी किया है। पूरा प्रयत्न किया गया है कि कोई अशुद्धि न रह सके, फिर भी यदि कोई अशुद्धि रह गई हो तो उसके लिये पात्र जीवों से क्षमा चाहता हूँ।

निवेदक—

कैलाशचन्द्र जैन

C/o आजाद ट्रेडिंग कम्पनी जैन मन्दिर के नीचे

बुलन्दशहर (यू. पी.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

卐 श्री वीतरागाय नमः 卐

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला

द्वितीय भाग

* मंगलाचरण *

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं कुन्दकुन्दार्यो जैन धर्मोऽस्तु मंगलम् ॥
आत्मा ज्ञानं स्वयं ज्ञानं; ज्ञानादन्यत करोति किम् ।
परभावस्य कर्तात्मा, मोहोऽयं व्यवहारिणाम् ॥
अज्ञानं तिमिरान्धानाम्, ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलित येन, तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥
गुरु अरु देव दोनों खड़े, किसके लागू पाँव ।
बलिहारी श्री गुरुदेव की, भगवन दियो बताय ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्ता कर्मादि छह कारक अधिकार

प्रश्न १—छह कारक अधिकार में "अधिकार" शब्द क्या बताता है ?

उत्तर—अपने त्रिकाली स्वभाव पर अधिकार माने तो सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होकर क्रम से मोक्ष की प्राप्ति होती है। पर वस्तुओं में या विकारी भावों में अपना अधिकार माने तो निगोद की प्राप्ति होती है। जो जीव परवस्तुओं में या विकारी भावों में अपना अधिकार मानता है उसे हजार बार धिक्कार "यह अधिकार" शब्द बताता है।

प्रश्न २—कारक किसे कहते हैं ?

उत्तर—(१) जो क्रिया का जनक हो अर्थात् क्रिया को उत्पन्न करने वाला हो, उसे कारक कहते हैं। (२) जो किसी न किसी रूप में क्रिया-व्यापार के प्रति प्रयोजक होता है, कारक वही हो सकता है, अन्य नहीं।

प्रश्न ३—क्रिया शब्द के पर्यायवाची नाम क्या-क्या हैं ?

उत्तर—क्रिया को कर्म, अवस्था, पर्याय, हालत, दशा, परिणाम, परिणति भी कहते हैं।

प्रश्न ४—संसार में क्या देखा जाता है ?

उत्तर—कार्य देखा जाता है।

प्रश्न ५—कार्य पर से कितने प्रश्न उठते हैं ?

उत्तर—छह ही प्रश्न उठते हैं, कम ज्यादा नहीं उठते हैं ?

प्रश्न ६—कार्य पर से छः प्रश्न कौन-कौन से उठते हैं ?

उत्तर—(१) किसने किया ? कर्ता। (२) क्या किया ? कर्म। (३) किस साधन के द्वारा किया ? करण। (४) किसके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिए किया ? सम्प्रदान। (५) किसमें से किया ? अपादान। (६) किसके आधार से किया ? अधिकरण। इस प्रकार छह ही प्रश्न उठते हैं।

प्रश्न ७—कारक कितने हैं और कौन-कौन से हैं ?

उत्तर—छह हैं—(१) कर्ता (२) कर्म (३) करण (४) सम्प्रदान (५) अपादान (६) अधिकरण।

प्रश्न ८—विभक्ति कितनी हैं ?

उत्तर—सम्बोधन सहित आठ हैं।

प्रश्न ९—कारकों में से कौन-कौनसी विभक्ति निकाल दी ?

उत्तर—छठी विभक्ति और सम्बोधन को निकाल दिया।

प्रश्न १०—छठी विभक्ति और सम्बोधन को क्यों निकाल दिया ?

उत्तर (१) छठी विभक्ति सम्बन्ध को बताती है—जैसे, मेरा मकान, मेरा भगवान। कारक की परिभाषा में, "जो क्रिया का जनक हो उसे कारक कहते हैं"। छठी विभक्ति में कार्यपना नहीं पाया जाता और ज्ञानी किसी के साथ सम्बन्ध नहीं मानते इसलिए छठी विभक्ति को निकाल दिया। (२) सम्बोधन में—हे राम, हे लक्ष्मण पना पाया जाता है, क्रियापना नहीं पाया जाता। और ज्ञानी किसी को सम्बोधते नहीं, क्योंकि प्रत्येक आत्मा ज्ञान का कन्द है।

प्रश्न ११—विभक्ति के कितने अर्थ हैं ?

उत्तर—दो हैं (१) वि=विशेष रूप से। भक्ति=लीनता करना अर्थात् अपनी आत्मा में विशेष प्रकार लीनता करना, यह निश्चय भक्ति अर्थात् विभक्ति का पहला अर्थ है। (२) वि अर्थात् विशेष प्रकार से, भक्त अर्थात् पृथक होना, यह विभक्ति का दूसरा अर्थ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १२—दूसरा विभक्ति का अर्थ जो आपने "विशेष प्रकार से पृथक होना" किया है यह किस किस से पृथक होना है ?

उत्तर—(१) अत्यन्त भिन्न परपदार्थों से पृथक होना, (१) आँख-नाक-कान रूप औदारिक शरीर से पृथक होना, (२) तैजस-कार्माण शरीर से पृथक होना, (४) शब्द और मन से पृथक होना, (५) शुभाशुभ विकारी भावों से पृथक होना, (६) अपूर्ण-पूर्ण शुद्ध पर्यायों के पक्ष से पृथक होना, (७) भेदकर्म के पक्ष से पृथक् होना, (८) अभेदकर्म के पक्ष से पृथक होना, (९) भेदाभेद कर्म के पक्ष से पृथक होना।

प्रश्न १३—प्रथम विभक्ति का अर्थ "जो आत्मा में विशेष प्रकार से लीनता" उसकी प्राप्ति कैसे हो ?

उत्तर—नौ प्रकार के पक्षों से मेरी आत्मा का कोई सम्बन्ध नहीं है, ऐसा जानकर, अपनी आत्मा जो अनन्त गुणों का अभेद पिण्ड है उसकी ओर दृष्टि करे तो "आत्मा में विशेष प्रकार से लीनता की प्राप्ति होवे"।

प्रश्न १४—अपने में विशेष प्रकार से भक्ति करने से क्या होता है ?

उत्तर—अनादि काल से नौ प्रकार के पक्षों की जो कर्ता-कर्मादि की बुद्धि है उसका अभाव हो जाता है और अपने भगवान का पता चल जाता है। क्रम से वृद्धि करते करते, पूर्ण परमात्मापना पर्याय में प्रगट हो जाता है।

प्रश्न १५—छह कारकों के ज्ञान से क्या होगा ?

उत्तर—अनादि काल से यह जीव अपने को भूल कर पर में, विकार में या किसी पक्ष में पड़कर पागल हो रहा है। यदि छह कारकों का ज्ञान करले, तो पागलपने का अभाव हो जावे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १६—छह कारकों का ज्ञान करके हम ज्ञानी माने जावें, और लोग हमारा आदर करें, हमें रुपयों-पैसों की प्राप्ति हो, ऐसा मानकर जो छह कारकों का ज्ञान करे, तो क्या होता है ?

उत्तर—ऐसा जीव अनन्त संसार का पात्र होता है क्योंकि छह कारकों के ज्ञान से तो अनन्तकाल की परमे कर्त्ता भोक्ता की खोटी बुद्धि का अभाव होता है। उसके बदले उसने सांसारिक प्रयोजन साधा, जो परम्परा निगोद का कारण है।

प्रश्न १७—कारक का निरुपण कितने प्रकार से है ?

उत्तर—दो प्रकार से है—निश्चयकारक, व्यवहारकारक।

प्रश्न १८—जो व्यवहार कारक है, उन्हीं को सर्वथा सच्चा माने, तो उसे शास्त्रों में क्या-क्या कहा है ?

उत्तर—(१) पुरुषार्थ सिद्धिपाय में 'तस्य देशना नास्ति' कहा है, (२) समयसार कलश ५५ में 'यह अहंकार रूप मोह अज्ञान-अन्धकार है, उसका सुलटना दुर्निवार है' ऐसा कहा है। (३) प्रवचनसार में 'पद पद पर धोखा खाता है' ऐसा कहा है। (४) आत्मावलोकन में 'हरामजादीपना' कहा है। (५) समयसार में 'मिथ्यादृष्टि तथा उसका फल संसार है' ऐसा कहा है। (६) मोक्षमार्गप्रकाशक में 'उसके सब धर्म के अंग मिथ्यात्व भाव को प्राप्त होते हैं' तथा 'मिथ्यादर्शन' व अकार्यकारी तथा 'अनीति' आदि शब्दों से संबोधन किया है इसलिए जो व्यवहार के कथन को सच्चा मानता है उससे मिथ्यात्व होता है और उसे कभी भी धर्म की प्राप्ति नहीं होती है।

प्रश्न १९—व्यवहारकारक के विषय में क्या समझना, और क्या याद रखना चाहिए ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—"परमार्थतः कोई द्रव्य किसी का कर्ता-हर्ता नहीं हो सकता"; इसलिए यह व्यवहारकारक असत्य है। वे मात्र उपचरित असदभूत व्यवहारनय से कहे जाते हैं। निश्चय से किसी द्रव्य के साथ कारकपने का सम्बन्ध है ही नहीं।

प्रश्न २०—जहाँ शास्त्रों में व्यवहारकारक और निश्चयकारक का कथन किया हो वहाँ क्या जानना चाहिए ?

उत्तर—जहाँ व्यवहारकारक का निरुपण किया हो उसे असत्यार्थ मानकर उसका श्रद्धान छोड़ना और जहाँ निश्चयकारक का निरुपण किया हो उसे सत्यार्थ मानकर उसका श्रद्धान अंगीकार करना, क्योंकि समयसार कलश १७३ में कहा है कि व्यवहारकारक में जो अध्यवसाय है सो समस्त ही छोड़ना—ऐसा जिनदेवों ने कहा है। इसलिए समस्त व्यवहारकारक को छोड़कर निश्चयकारक को जानकर अपने ज्ञानघन रूप में प्रवर्तना युक्त है।

प्रश्न २१—निश्चयकारक और व्यवहारकारक के विषय में कुन्द कुन्द भगवान ने मोक्षपाहुड गाथा ३१ में क्या कहा है ?

उत्तर—जो व्यवहारकारक की श्रद्धा छोड़ता है वह योगी अपने कार्य में जागता है, तथा जो व्यवहारकारकों से लाभ मानता है वह अपने कार्य में सोता है। इसलिए व्यवहारकारक का श्रद्धान छोड़कर निश्चयकारक का श्रद्धान करना योग्य है।

प्रश्न २२—व्यवहारकारक का श्रद्धान छोड़कर निश्चयकारक का श्रद्धान क्यों करना योग्य है ?

उत्तर—व्यवहारनय-निश्चयकारक और व्यवहार को किसी को किसी में मिलाकर निरुपण करता है। सो ऐसे ही श्रद्धान से मिथ्यात्व है, इसलिये उसका त्याग करना। तथा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निश्चयनय-निश्चयकारक और व्यवहारकार को यथावत् निरूपण करता है, किसी को किसी में नहीं मिलाता है, सो ऐसे ही श्रद्धान से सम्यक्त्व होता है, इसलिये उसका श्रद्धान करना।

प्रश्न २३—आप कहते हो—व्यवहारकारक का श्रद्धान छोड़ो और निश्चयकारक का श्रद्धान करो, सो कैसे ?

उत्तर—जिन मार्ग में जहाँ निश्चयकारक की मुख्यता लिये व्याख्यान है, उसे तो "सत्यार्थ ऐसे ही है"—ऐसा जानना। तथा जहाँ व्यवहारकारक को मुख्यता लिये व्याख्यान है, उसे "ऐसे है नहीं, निमित्तादि को अपेक्षा उपचार किया है"—इस प्रकार जानने का नाम ही निश्चयकारक और व्यवहारकारक का ग्रहण है।

प्रश्न २४—कोई कोई विद्वान दोनों कारकों के व्याख्यान को समान सत्यार्थ जानकर ऐसे भी हैं, ऐसे भी है—इस प्रकार कहते हैं, क्या उनका कहना गलत है ?

उत्तर—गलत है, क्योंकि निश्चयकारक-व्यवहारकारक दोनों कारकों के व्याख्यान को समान जानकर ऐसे भी हैं, ऐसे भी है—इस प्रकार भ्रम रूप प्रवर्तन से तो दोनों कारकों का ग्रहण करना नहीं कहा है।

प्रश्न २५—यदि व्यवहारकारक असत्यार्थ है तो उसका उपदेश जिन मार्ग में किसलिये दिया ?—एक निश्चयकारक का ही निरुपण करना था।

उत्तर—व्यवहारकारक के बिना निश्चय कारक का उपदेश अशक्य है;इसलिए व्यवहार कारक का उपदेश है। निश्चय कारक का ज्ञान कराने के लिये व्यवहार कारक द्वारा उपदेश देते हैं। व्यवहार कारक है सो अंगीकार करने योग्य नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २६—कार्य के कारक कितने कहे जाते हैं।

उत्तर—चार कहे जाते है—(१) उस समय की योग्यता; (२) अनन्तर पूर्व क्षणवर्तीपर्याय; (३) त्रिकाली; (४) निमित्त; इस प्रकार कार्य के कारक चार कहे जाते हैं।

प्रश्न २७—शास्त्रों में कहीं कार्य का कारक उस समय की योग्यता को, कहीं अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय को, कहीं त्रिकाली को और कहीं निमित्त को क्यों कहा जाता है ?

उत्तर—(१) जहाँ शास्त्रों में कार्य का कारक उस समय की योग्यता को कहा हो, वहाँ यह ही सच्चा कारक है— ऐसा जानना। (२) जहाँ कहीं कार्य का कारक अनन्तर पूर्व क्षणवर्तीपर्याय को कहा हो, वहाँ अभाव रूप कारक का ज्ञान कराने की अपेक्षा कहा है—ऐसा जानना। (३) जहाँ कहीं कार्य का कारक त्रिकाली को कहा हो, वहाँ निमित्तकारक की दृष्टि छुड़ाने के लिए कहा है—ऐसा जानना।

प्रश्न २८—निश्चयकारक स्वाश्रितो निश्चयकारक और व्यवहारकारक पराश्रितो व्यवहरकारक की अपेक्षा किस-किस प्रकार हैं ?

उत्तर—(१) कार्य का कारक उस समय की योग्यता स्वाश्रित निश्चयकारक कहा हो, उसकी अपेक्षा अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय को पराश्रित व्यवहारकारक कहा जाता है। (२) कार्य का कारक अनन्तर पूर्वक्षणवर्ती पर्याय को स्वाश्रित निश्चयकारक कहा हो, उसकी अपेक्षा त्रिकाली को पराश्रित व्यवहार कारक कहा जाता है। (३) कार्य का कारक त्रिकाली का स्वाश्रित निश्चयकारक कहा हो, उसकी अपेक्षा निमित्त को पराश्रित व्यवहारकारक कहा जाता है।

प्रश्न २९—जिन-जिनवर और जिनवर वृषभों ने चार कारकों के विषय में क्या बतलाया है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—(१) कार्य का कारक उस समय की योग्यता ही है। परन्तु जब-जब कार्य होता है बाकी के तीन कारक भी होते है क्योंकि "जिसने पूर्व अवस्था प्राप्त की है ऐसा द्रव्य भी जो कि उचित बहिरंग साधनों के सान्निध्य के सद्भाव में अनेक प्रकार की बहुत सी अवस्थायें करता है"—ऐसा जानना।

प्रश्न ३०—कोई मात्र कार्य का कारक उस समय की योग्यता को ही माने बाकी का सर्वथा निषेध करे—तो क्या वह ठीक है?

उत्तर—ठीक नहीं है क्योंकि जब कार्य होता है बाकी के तीन कारण होते हैं ऐसा वस्तु स्वभाव है। उसको न मानने के कारण वह झूठा है।

प्रश्न ३१—इन चार कार्य के कारकों में क्या रहस्य है?

उत्तर—(१) कोई अकेले उस समय की योग्यता, कार्य के कारक को माने किन्तु अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय, त्रिकाली और निमित्त को न माने वह झूठा है। (२) कोई अकेले अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय कारक को ही माने किन्तु त्रिकाली, निमित्त और उस समय की योग्यता को न माने वह झूठा है। (३) कोई मात्र त्रिकाली कारक को ही माने किन्तु उस समय की योग्यता, अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय और निमित्त को न माने वह झूठा है। (४) कोई अकेले कार्य का कारक निमित्त को ही माने किन्तु त्रिकाली, अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय और उस समय की योग्यता रूपकारक को न माने वह भी झूठा है; क्योंकि जब-जब कार्य होता है चारों एक साथ होते हैं।

प्रश्न ३२—छह कारक द्रव्य है, गुण है, या पर्याय है?

उत्तर—छह कारक गुण हैं?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न ३३—छह कारक गुण हैं, तो सामान्य हैं या विशेष ?

उत्तर—छह कारक प्रत्येक द्रव्य में पाये जाने वाले सामान्य और अनुजीवी गुण हैं।

प्रश्न ३४—छह कारक गुण हैं यह कहाँ आया है ?

उत्तर—श्री समयसार जो की ४७ शक्तियों में आया है।

प्रश्न ३५—छह कारकों का ज्ञान, विद्या बढ़ाने के लिए, लोगों को बताने के लिए, हम विद्वान हैं या और किसी कार्य के लिए है ?

उत्तर—(१) जो जीव छह कारकों का ज्ञान मान-बड़प्पन के लिए करता है वह अनन्त संसार का कारण है। (२) वास्तव में छह कारकों के ज्ञान से पर में करूँ-करूँ की और भोक्ता-भोग्य की बुद्धि का अभाव हो जाता है और सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होकर क्रमशः निर्वाण की ओर गमन हो जाता है। (३) पांच संसार के कारणों का अभाव (४)पंच परावर्तन का अभाव (५) चार गति के अभावरूप पंचम गति की प्राप्ति (६) पंचम परिणामिक का महत्व आ जाता है। (७) पंच परमेष्ठियों में उसकी गिनती होने लगती है।

प्रश्न ३६—पर्याय (कार्य) पर से किसका माप निकालना चाहिए ?

उत्तर—पर्याय पर से सच्चे कर्ता का माप निकालना चाहिए ?

प्रश्न ३७—पर्याय पर से सच्चे कर्ता का माप क्यों निकालना चाहिए ?

उत्तर—कार्य हुआ—इसमें तो सब एकमत हैं। परन्तु करनेवाला कौन है, इसमें भूल है। कर्ता का सही ज्ञान ना होने से संसार का पात्र बना हुआ है। कर्ता का सही ज्ञान हो जावे, तो संसार का अभाव हो जावे, इसलिए पर्याय पर से सच्चे कर्ता का माप निकालना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्ताकारक

प्रश्न ३८—कर्ता किसे कहते हैं ?

उत्तर—जो स्वतंत्रता से (स्वाधीनतापूर्वक) अपने परिणाम को करे, वह कर्ता है।

प्रश्न ३९—प्रत्येक द्रव्य किसका कर्ता है ?

उत्तर—प्रत्येक द्रव्य अपने में स्वतंत्र व्यापक होने से अपने ही परिणाम का स्वतंत्र रूप से कर्ता है।

प्रश्न ४०—प्रत्येक द्रव्य अपने ही परिणाम का कर्ता है, दूसरे का का नहीं, यह कहाँ आया है ?

उत्तर—(१) अनादिनिधन वस्तु न्यारी-न्यारी अपनी-अपनी मर्यादा लिए परिणमै है, कोई किसी का परिणमाया परिणमता नाही। और किसी को परिणमाने का भाव अनन्त संसार का कारण मिथ्यात्व है।

[मोक्षमार्ग प्रकाशक पृष्ठ ५२]

(२) सब पदार्थ अपने-अपने द्रव्य में अन्तर्मग्न रहने वाले अपने अनन्त धर्मों के चक्र को (समूह को) चुम्बन करते हैं-स्पर्श करते हैं तथापि वे (सब द्रव्य) परस्पर एक दूसरे को स्पर्श नहीं करते। [समयसार गा० ३ की टीका से]

(३) जो कुछ किया है वह सब ही द्रव्य से भिन्न नहीं है इससे विरुद्ध मानने वाला मिथ्यादृष्टिपने के कारण सर्वज्ञ मत से बाहर है। [समयसार गा० ८५ की टीका से]

(४) सर्वद्रव्यों की प्रत्येक पर्याय में छहकारक एक साथ वर्तते हैं, इसलिए आत्मा और पुदगल शुद्ध दशा में या अशुद्ध दशा में स्वयं छहों कारक रूप परिणमन करते हैं और दूसरे कारकों की (निमित्तकारणों की) अपेक्षा नहीं रखते।

[पंचास्तिकाय गा० ६२ से]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५) निश्चय से पर के साथ आत्मा का कारकपने का संबंध नहीं है कि जिससे शुद्धात्म स्वभाव की प्राप्ति के लिए सामग्री (बाह्य साधन) खोजने की व्यग्रता से जीव (व्यर्थ ही) परतंत्र होते हैं। [प्रवचनसार गा० १६ की टीका से]

(६) देखो, समयसार गा० १०३, ३७२, ४०६।

(७) समयसार कलश ५१, ५२, ५३ ५४ तथा कलश २००।

प्रश्न ४१—प्रत्येक द्रव्य अपने ही परिणाम का कर्ता भोक्ता है दूसरे का नहीं, परन्तु जो लोग इस बात को नहीं मानते और कहते हैं, कि हम शरीर-स्त्री-पुत्रादि के करता हैं उसका क्या फल होगा ?

उत्तर—(१) जैसे सीता को रावण चुराकर ले गया और रावण ने बहुत प्रयत्न किया कि जैसे सीता राम को प्यार करती है वैसा मुझे प्यार करे। उसका फल उसे तीसरा नरक जाना पड़ा; उसी प्रकार जो संसार के पदार्थों को अपने अनुसार परिणमाना चाहता है उसका फल नरक में जाना पड़ेगा। (२) एक बार बम्बई में हंगामा हो गया। लोगों ने पुकारा "बम्बई हमारा, बम्बई हमारा" तो सरकार तंग आ गई तब बड़े जनरल को छोटे जनरल ने टेलीफोन किया, कि इसका एकमात्र उपाय यह है सुबह समाचारपत्र में दे दो जो अपने घर से बाहर निकलेगा, उसे गोली मार दी जावेगी, ऐसी ही सुबह समाचार पत्र में आ गया। जब कोई अपने घर से बाहर निकला उसे तुरन्त गोली मार दी गई, जो नहीं निकला वह ठीक रहा; उसी प्रकार जो अपने द्रव्य-गुण-पर्याय से बाहर निकलता है उसे चारों गति रूप गोली मार मार दी जाती है।

इसलिए जो अपनी मर्यादा से बाहर निकलता है वह दुःखी होता है जो अपनी मर्यादा में रहता है वह सम्यग्दर्श-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नादि की प्राप्ति कर क्रमशः मोक्षरूपी लक्ष्मी का नाथ बन जाता है।

प्रश्न ४२—कर्ता की परिभाषा में से "स्वतंत्रता पूर्वक" शब्द निकाल दे तो, क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—'स्वतंत्रता पूर्वक' शब्द निकालने से दूसरे को भी कर्तापने का प्रसंग उपस्थित होवेगा, यह दोष आवेगा। (१) जैसे—रोटो आटे से बनो और बाई से भी बनने का प्रसंग उपस्थित होवेगा। (२) घड़ा मिट्टी से बने और कुम्हार से भी बने, ऐसा प्रसंग उपस्थित होवेगा। (३) शब्द भाषा वर्गणा करे और जीव भी करे, ऐसा प्रसंग उपस्थित होवेगा; इसलिए 'स्वतंत्रतापूर्वक' शब्द नहीं निकाला जा सकता है।

प्रश्न ४३—कर्ता कितने कहलाते हैं ?

उत्तर—चार कहलाते हैं; उस समय की योग्यता कर्ता, अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय कर्ता, त्रिकाली कर्ता और निमित्त कर्ता।

प्रश्न ४४—इन चारों कर्ता में से कार्य का सच्चा कर्ता कौन है ?

उत्तर—वास्तव में "उस समय की योग्यता ही कार्य का सच्चा कर्ता है।

प्रश्न ४५—अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय, त्रिकाली कर्ता और निमित्त सच्चे कार्य के कर्ता क्यों नहीं हैं ?

उत्तर—(१) अभाव में से भाव की उत्पत्ति नहीं होती इसलिए अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय कार्य का सच्चा कर्ता नहीं है। (२) त्रिकाली कर्ता तो सदैव एकसा रहता है यदि त्रिकाली कार्य का सच्चा कर्ता हो तो कार्य त्रिकाल रहना चाहिए। परन्तु कार्य एक समय का है। विचारो—कार्य एक समय का हो और उसका कर्ता त्रिकाली सदैव रहने वाला बने,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा नहीं है। (३) कार्य का निमित्त तो कर्ता होने को प्रश्न ही नहीं, क्योंकि उसका कार्य से द्रव्य-क्षेत्र काल-भाव पृथक-पृथक है।

प्रश्न ४६—जहाँ आगम में एक कार्य कर्ता की बात हो, वहाँ पात्रजीव क्या जानते हैं ?

उत्तर—वह चारों का ग्रहण कर लेता है। जो चारों का ग्रहण नहीं करता है वह झूठा है। यहाँ पर ग्रहण का अर्थ ज्ञान है।

प्रश्न ४७—कुम्हार ने घड़ा बनाया—इसमें कर्ता कारक को कब माना और कब नहीं माना ?

उत्तर—मिट्टी स्वतंत्रता से घड़े को प्राप्त हुई तो कर्ता कारक को माना और कुम्हार घड़े को प्राप्त हुआ तो कर्ताकारक को नहीं माना।

प्रश्न ४८—मिट्टी स्वतंत्रता से घड़े रूप परिणमी, इसमें से 'स्वतंत्रता' शब्द को निकाल दें तो क्या नुक्सान होगा ?

उत्तर—मिट्टी से घड़ा बने और कुम्हार से भी घड़ा बनने का प्रसंग उपस्थित होवेगा। इसलिए स्वतंत्रता शब्द को नहीं निकाला जा सकता है।

प्रश्न ४९—मिट्टी स्वतंत्रता से घड़े रूप परिणमी, ऐसे कर्ता कारक को जानने से किस किस से दृष्टि हट गई ?

उत्तर—कुम्हार, चाक, कीली, डंडा, धर्म, अधर्म, आकाश और काल द्रव्यों से दृष्टि हट गई।

प्रश्न ५०—मिट्टी स्वतंत्रता से घड़े रूप परिणमी तो कर्ता कारक को माना, इसको जानने से क्या लाभ रहा ?

उत्तर—जैसे मिट्टी स्वतंत्रता रूप से घड़े रूप परिणमी; उसी प्रकार विश्व के प्रत्येक द्रव्य और गुण में स्वतंत्रता से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिणमन हो चुका है, हो रहा है और भविष्य में ऐसा ही होता रहेगा—ऐसा उसको ज्ञान हो जाता है; कर्तापने की खोटी बुद्धि समाप्त होकर ज्ञाता बुद्धि प्रगट हो जाती है वह केवली के समान ज्ञाता-दृष्टा बन जाता है मात्र प्रत्यक्ष-परोक्ष का ही अन्तर रहता है।

प्रश्न ५१—दर्शन मोहनीय के अभाव से क्षायिक सम्यक्त्व हुआ, इसमें कर्ता कारक को कब माना और कब नहीं माना ?

उत्तर—आत्मा का श्रद्धा गुण स्वतंत्रता से क्षायिक सम्यक्त्व रूप परिणमा, तो कर्ता कारक को माना और दर्शन मोहनीय के अभाव से क्षायिक सम्यक्त्व हुआ, तो कर्ता कारक को नहीं माना।

प्रश्न ५२—श्रद्धागुण स्वतंत्रता से क्षायिक सम्यक्त्व रूप परिणमा, इसमें से स्वतंत्रता शब्द को निकाल दें तो क्या नुक्सान होगा ?

उत्तर—श्रद्धा गुणसे क्षायिक सम्यक्त्व होवे और दर्शन मोहनीय के अभाव में से भी क्षायिक सम्यक्त्व होने का प्रसंग उपस्थित होवेगा। इसलिये 'स्वतंत्रता' शब्द नहीं निकाला जा सकता है।

प्रश्न ५३—आत्मा का श्रद्धा गुण क्षायिक सम्यक्त्व रूप परिणमा, ऐसे कर्ता कारक को जानने से किस किस से दृष्टि हट गई ?

उत्तर—दर्शन मोहनीय के अभाव से, सच्चे देव-गुरुशास्त्र से, सात तत्वों की भेद रूप श्रद्धा से और आत्मा के श्रद्धा गुण को छोड़कर वाकी गुणों से दृष्टि हट गई।

प्रश्न ५४—आत्मा का श्रद्धा गुण स्वतंत्रता से क्षायिक सम्यक्त्व रूप परिणमा, तो कर्ता कारक को माना, इसको जानने से क्या लाभ रहा ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—जैसे श्रद्धा गुण में स्वतंत्रता से क्षायिक सम्यक्त्व हुआ; उसी प्रकार विश्व के प्रत्येक द्रव्य और गुण में स्वतंत्रता से परिणमन हो चुका है, हो रहा है और भविष्य में ऐसा ही होता रहेगा—ऐसा उसको केवली के समान ज्ञान हो जाता है और कर्तापने की बुद्धि समाप्त होकर ज्ञाता बुद्धि प्रगट होना, यह कर्ता कारक को जानने का लाभ है।

प्रश्न ५५—क्षायिक सम्यक्त्व हुआ, इसमें चारों प्रकार के कारकों के नाम बताओ ?

उत्तर—(१) क्षायिक सम्यक्त्व हुआ उस समय की योग्यता सच्चा कारक; (२) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व का अभाव अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय अभाव रूप कारक; (३) श्रद्धा गुण त्रिकाली कारक; (४) दर्शन मोहनीय का अभाव निमित्त कारक।

प्रश्न ५६—केवल ज्ञानावरणीय के क्षय से केवलज्ञान हुआ इसमें कर्ता कारक लगाकर बताओ ?

उत्तर—प्रश्न ५१ से ५५ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो।

प्रश्न ५७—गुरू से ज्ञान हुआ—इसमें कर्ताकारक को लगाओ ?

उत्तर—(प्रश्न ५१ से ५५ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)।

प्रश्न ५८—बाई ने रोटी बनाई—इसमें कर्ताकारक को लगाओ ?

उत्तर—(प्रश्न ५१ से ५५ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)।

प्रश्न ५९—केवलदर्शन होने से दर्शनावरणीय का क्षय हुआ—इनमें कर्ताकारक लगाकर बताओ ?

उत्तर—(प्रश्न ५१ से ५५ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)।

प्रश्न ६०—मैंने बिस्तरा बिछाया—इसमें कर्ताकारक लगाओ ?

उत्तर—(प्रश्न ५१ से ५५ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न ६१—महावीर भगवान की दिव्यध्वनि है—इसमें कर्ता-कारक को लगाओ ?

उत्तर—(प्रश्न ५१ से ५५ तक के अनुसार प्रश्न—उत्तर दो)

प्रश्न ६२—बढ़ई ने अलमारी बनाई—इसमें कर्ताकारक को लगाओ ?

उत्तर—(प्रश्न ५१ से ५५ तक के अनुसार प्रश्न—उत्तर दो)

प्रश्न ६३—बैलों ने गाड़ी को चलाया—इसमें कर्ताकारक लगाओ ?

उत्तर—(प्रश्न ५१ से ५५ तक के अनुसार प्रश्न—उत्तर दो)

प्रश्न ६४—इच्छा की तो मैं आया—इसमें कर्ताकारक को लगाओ ?

उत्तर—(प्रश्न ५१ से ५५ तक के अनुसार प्रश्न—उत्तर दो)

प्रश्न ६५—मैं जोर से बोलता हूँ—इसमें कर्ताकारक लगाओ ?

उत्तर—(प्रश्न ५१ से ५५ तक के अनुसार प्रश्न—उत्तर दो)

प्रश्न ६६—कुन्द कुन्द भगवान ने समयसार बनाया—इसमें कर्ताकारक लगाकर बताओ ?

उत्तर—(प्रश्न ५१ से ५५ तक के अनुसार प्रश्न—उत्तर दो)

कर्मकारक

प्रश्न ६७—कर्मकारक किसे कहते हैं ?

उत्तर—कर्ता जिस परिणाम को प्राप्त करता है वह परिणाम उसका कर्म है। कर्ता का इष्ट वह कर्म है।

प्रश्न ६८—कर्म के पर्यायवाची शब्द क्या-क्या हैं ?

उत्तर—कार्य, अवस्था' पर्याय, परिणाम, परिणति आदि कर्म के पर्यायवाची शब्द हैं।

प्रश्न ६९—कार्य के कर्ता कितने कहलाते हैं ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—चार कहलाते हैं; उस समय की योग्यता कर्ता, अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय कर्त्ता, त्रिकाली कर्ता और निमित्त कर्त्ता।

प्रश्न ७०—कार्य का सच्चा कर्ता कौन है और कौन नहीं है ?

उत्तर—उस समय की योग्यता ही प्रत्येक कार्य का सच्चा कर्ता है। अनन्तर पूर्व क्षणवर्तीय पर्याय, त्रिकाली और निमित्त कार्य के सच्चे कर्ता नहीं हैं।

प्रश्न ७१—कार्य के अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय, त्रिकाली और निमित्त सच्चे कर्ता क्यों नहीं है ?

उत्तर—(१) पर्याय में से पर्याय नहीं आती इसलिए अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती कार्य का सच्चा कर्ता नहीं है। कार्य एक समय का हो, उसका कर्ता अनादि अनन्त रहने वाला हो यह भी ठीक नहीं। निमित्त को कर्ता कहने का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि दोनों का स्वचतुष्ट्य भिन्न-भिन्न है।

प्रश्न ७२—कर्म का कर्ता त्रिकाली को और कहीं अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय को क्यों कहा जाता है ?

उत्तर—(१) परद्रव्यों से भिन्न करने के लिए कार्य का कर्ता त्रिकाली को कहा जाता है। (२) पूर्व की पर्याय का ज्ञान कराने के लिए अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय को कार्य का कर्ता कहा जाता है। इसलिए त्रिकाली कर्ता से और भूत-भविष्य की पर्यायों से और निमित्त से दृष्टि उठाकर मात्र उस समय की योग्यता ही कार्य का सच्चा कर्ता है, यह पता चले; तो कल्याण हो।

प्रश्न ७३—कर्मकारक को समझने के लिए क्या याद रखना चाहिए ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—(१) वास्तव में परिणाम ही निश्चय से कर्म है; (३) परिणाम अपने आश्रयभूत परिणामी का ही है, अन्य का नहीं, (३) कर्म कर्ता बिना होता नहीं, (४) वस्तु की एक रूप स्थिति रहती नहीं; यह चार बोल कर्मकारक समझने के लिए पर्याप्त हैं। [समयसार कलश २११]

प्रश्न ७४—कर्मकारक को समझने से क्या लाभ है ?

उत्तर—जो-जो कार्य होता है वह सब अपनी-अपनी योग्यता से ही होता है। जब कार्य अपनी-अपनी योग्यता से होता है तो मैं उस कार्य को करूँ या कराऊँ, ऐसी बुद्धि का अभाव होकर दृष्टि अपने त्रिकाली भगवान पर आना और शान्ति का अनुभव होना यही कर्मकारक को जानने का लाभ है।

प्रश्न ७५—कार्य में, "उसकी योग्यता ही कारण है" यह शास्त्र में कहाँ आया है ?

उत्तर—(१) वास्तव में कोई भी कार्य होने में या बिगड़ने में उसकी योग्यता ही साक्षात् साधक होती है।

[इष्टोपदेश गाथा ३५ की टीका बम्बई से प्रकाशित]

प्रश्न ७६—(१) दूध गिर गया (२) बच्चा भागता भागता गिर गया (३) मर गया, (४) शरीर में बीमारी हुई (५) रोटी जल गई (३) माल चोरी होगया (७) चलते चलते गिर गया, (८) भाषा बोली. (९) हाथ ऊँचा उठाया (१०) पुस्तक उठाई (११) अक्षर लिखे, (१२) मकान बना, इन सब में कर्मकारक को कब माना और कब नहीं माना ?

उत्तर—(१) दूध गिर गया, क्यों गिरा ? कर्मकारक को नहीं माना और अपनी योग्यतासे गिरा, तो कर्मकारक को माना। (२) बच्चा भागता-भागता गिर गया, क्यों गिरा ? कर्मकारक को नहीं माना और बच्चा अपनी योग्यता से गिरा, तो कर्मकारक को माना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) मर गया, क्यों मरा ? कर्मकारक को नहीं माना और अपनी योग्यता से मरा, तो कर्मकारक को माना।

(४) शरीरमें बीमारी हुई, क्यों हुई ? कर्मकारक को नहीं माना, बीमारी अपनी योग्यता से हुई, तो कर्मकारक को माना।

(५) रोटी जल गई, क्यों जल गई ? कर्मकारक को नहीं माना और अपनी योग्यता से जल गई, तो कर्मकारक को माना।

(६) माल चोरी होगया, क्यों हुआ ? तो कर्मकारक को नहीं माना और चोरी अपनी योग्यता से हुई, तो कर्मकारक को माना।

(७) चलते-चलते गिर गया, क्यों गिरा ? तो कर्मकारक को नहीं माना और अपनी योग्यता से गिरा, तो कर्मकारक को माना।

(८) भाषा जीव से निकली कर्मकारक को नहीं माना और भाषा अपनी योग्यता से भाषावर्गणा में से निकली तो कर्मकारक को माना। (९) हाथ ऊँचा जीव ने उठाया तो कर्मकारक को नहीं माना और हाथ अपनी योग्यता से ऊँचा हुआ तो कर्मकारक को माना। (१०) पुस्तक मैंने उठाई तो कर्मकारक को नहीं माना और पुस्तक अपनी योग्यता से उठी तो कर्मकारक को माना। (११) अक्षर मैंने लिखे तो कर्मकारक को नहीं माना और अक्षर अपनी योग्यता से लिखे गये तो कर्मकारक को माना। (१२) मकान मैंने बनाया तो कर्मकारक को नहीं माना और अपनी योग्यता से बना तो कर्मकारक को माना।

प्रश्न ७७—कार्य अपनी-अपनी योग्यता से ही होता है, तो जीव क्यों पागल होता है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—कर्मकारक का रहस्य पता न होने से पागल होता है।

प्रश्न ७८—कर्मकारक का ज्ञान क्यों कराया जाता है ?

उत्तर—(१) शान्ति प्राप्त कराने के लिये और शान्ति प्राप्त करने के लिये । (२) वस्तुस्वरूप समझाने के लिए और समझने के लिये। (३) अनादिकालकी खोटी मान्यता नष्ट करने के लिये और कराने के लिए, कर्मकारक का ज्ञान कराया जाता है।

प्रश्न ७९—कर्मकारक को किस-किस मान्यता वाले ने नहीं माना, और उसका फल क्या हुआ ?

उत्तर—जैसे रोटी बनी, उसमें (रोटी बनने में) (१) बाई, चकला, वेलन कर्ता हैं (२) आटा कर्ता है। (३) लोई उसका कर्ता है आदि मान्यता वालों ने कर्म कारक को नहीं माना और उसका फल मिथ्यादर्शनादि की पुष्टि होकर निगोद की प्राप्ति होती है।

प्रश्न ८०—कर्म कारक किसने माना और उसका फल क्या हुआ ?

उत्तर १—कार्य, "उस समय की योग्यता से ही" होता है, होता रहेगा और होता रहा है। इससे क्रमबद्ध पर्याय की सिद्धि हो गई। और सम्यग्दर्शनादि की प्राप्ति होकर, क्रमशः निर्वाण की ओर गमन होना इसका फल है।

प्रश्न ८१—कर्म कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर—(१) द्रव्यकर्म, (२) नोकर्म (३) भावकर्म (४) कर्म अर्थात् कार्य (५) कर्म नाम का कारक।

प्रश्न ८२—इन पाँच प्रकार के कर्मों में से सिद्ध भगवान में कौन कौन सा कर्म है ?

उत्तर—हाँ, चौथे और पाँचवें नम्बर का कर्म है।

प्रश्न ८३—कर्म अर्थात कार्य होता है उसमें कितने कारण कहलाते हैं और सच्चा कारण कौन है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—चार कहलाते हैं—(१) निमित्त कारण, (२) त्रिकाली कारण, (३) अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण (४) उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण। इन चारों कारणों में से कर्म का सच्चा कारण उस समय की योग्यता ही है।

प्रश्न ८४—आस्रव तत्व का कर्ता कौन है ?

उत्तर—उस समय की योग्यता है।

प्रश्न ८५—कर्म के कारण आस्रव माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—अजीव तत्व और आस्रव तत्व को एक माना, कर्म-कारक को नहीं माना।

प्रश्न ८६—जीव के कारण आस्रव माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—जीव और आस्रव को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न ८७—आस्रव तत्व सम्बन्धी भूल कैसे मिटे ?

उत्तर—आस्रव का कर्ता उस समय की योग्यता ही है द्रव्य कर्म और जीव नहीं। देखो, यह कर्म कारक को मानने से आस्रव तत्व सम्बन्धी भूल दूर हो गई।

प्रश्न ८८—बंध तत्व का कर्ता कौन है ?

उत्तर—उस समय की योग्यता है।

प्रश्न ८९—बंध तत्व का कर्ता द्रव्य कर्म को माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—अजीव और बध को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न ९०—जीव के कारण बंध को माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—जीव और बंध को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न ८१—बंध तत्व सम्बन्धी भूल कैसे मिटे ?

उत्तर—भाव बंध "उस समय की योग्यता से ही" है कर्म और जीव से नहीं। देखो यह कर्म कारक को मानने से बंध तत्व सम्बन्धी भूल दूर हो गई।

प्रश्न ८२—सम्वर तत्व का कर्ता कौन है ?

उत्तर—उस समय की योग्यता है।

प्रश्न ८३—सम्वर तत्व का कर्ता कोई द्रव्य कर्म के रुकने को माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—उसने सम्वर तत्व और अजीव तत्व को एक माना, कर्मकारक को नहीं माना।

प्रश्न ८४—शुभ भाव से सम्वर माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—उसने आस्रव, बंध और सम्वर को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न ८५—शुभभाव करने से सम्वर की प्राप्ति माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—उसने आस्रव, बन्ध और सम्वर को एक माना, कर्म-कारक को नहीं माना।

प्रश्न ८६—देव-गुरु-शास्त्र से सम्यग्दर्शन माने, तो क्या दोष आता है ?

उत्तर—उसने जीव, अजीव तत्व और सम्वर को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न ८७—अणुव्रतादि बाहरी क्रिया से श्रावकपना माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—उसने अजीव और सम्वर को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न ८८—शुभ भावरुप अणुव्रतादि से सम्वर माने, तो क्या दोष आवेगा ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—उसने आस्रव, बंध तत्व और सम्वर को एक माना, कर्मकारक को नहीं माना।

प्रश्न ९९—२८ मूलगुण छः बाहरी क्रिया से मुनिपना माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—उसने अजीव और सम्वर को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न १००—२८ मूलगुण पालने से मुनिपना माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—उसने आस्रव, बंध और सम्वर को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न १०१—सम्वर तत्व सम्बन्धी भूल कैसे मिटे ?

उत्तर—कर्म कारक का रहस्य जानने से।

प्रश्न १०२—सम्वर तत्व सम्बन्धी भूल कर्मकारक को मानने से कैसे दूर हो ?

उत्तर—सम्वर तत्व "उस समय की योग्यता से" है वह जीव से, अजीव से, आस्रव, बंध से नहीं है। देखो, कर्मकारक को मानने से सम्वर तत्व सम्बन्धी भूल दूर हो गई।

प्रश्न १०३—भाव निर्जरा तत्व का कर्ता कौन है ?

उत्तर—"उस समय की योग्यता" भाव निर्जरा तत्व का सच्चा कर्ता है।

प्रश्न १०४—द्रव्य कर्म से भाव निर्जरा माने, तो क्या दोष आता है ?

उत्तर—अजीव और निर्जरा तत्व को एक माना, तो कर्मकारक को नहीं माना।

प्रश्न १०५—जीव से निर्जरा माने, तो क्या दोष आता है ?

उत्तर—जीव तत्व और निर्जरा तत्व को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १०६—पुण्य से निर्जरा माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—आस्रव तत्व और निर्जरा को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न १०७—भाव बंध से भाव निर्जरा माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—बंध और निर्जरा तत्व को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न १०८—भाव संवर से भाव निर्जरा माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—सम्वर, निर्जरा तत्व को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न १०९—रोटी न खाने से निर्जरा माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—अजीव तत्व और निर्जरा को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न ११०—बाहरी तप और शुभ भाव रूप १२ प्रकार व्यवहार तप से, निर्जरा माने तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—अजीव, आस्रव, बंध और निर्जरा को एक माना, कर्म-कारक को नहीं माना।

प्रश्न १११—भाव निर्जरा तत्व सम्बन्धी भूल कैसे मिटे ?

उत्तर—कर्म कारक को मानने से भाव निर्जरा सम्बन्धी भूल मिटे।

प्रश्न ११२—भाव निर्जरा सम्बन्धी भूल कर्म कारक को मानने से कैसे दूर हुई ?

उत्तर—भाव निर्जरा तत्व "उस समय की योग्यता से" है वह जीव से, अजीव से, आस्रव से, बंध से, सम्वर से नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देखो कर्म कारक को मानने से निर्जरा तत्व सम्बन्धी भूल मिट गई।

प्रश्न ११३—भाव मोक्ष का कर्ता कौन है ?

उत्तर—उस समय की योग्यता।

प्रश्न ११४—भाव मोक्ष का कर्ता द्रव्य कर्म के अभाव को माने तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—उसने भाव मोक्ष को और अजीव को एक माना, कर्म-कारक को नहीं माना।

प्रश्न ११५—भाव मोक्ष का कर्ता वज्रवृषभनाराच संहनन को माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—उसने अजीव और मोक्ष को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न ११६—जीव से मोक्ष माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—उसने जीव और मोक्ष तत्व को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न ११७—आस्रव से मोक्ष माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—उसने आस्रव और मोक्ष को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न ११८—बंध से मोक्ष माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—उसने बंध और मोक्ष को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न ११९—सम्वर से मोक्ष माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—सम्वर और मोक्ष को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न १२०—निर्जरा से मोक्ष माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—निर्जरा और मोक्ष को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १२१—१४वें गुणस्थान से मोक्ष माने, तो क्या दोष आवेगा? ?

उत्तर—आस्रव, संवर, निर्जरा और मोक्ष को एक माना, कर्म कारक को नहीं माना।

प्रश्न १२२—मोक्ष तत्व संबंधी भूल कैसे दूर हो ?

उत्तर—कर्म कारक को माने तो मोक्ष तत्व संबंधी भूल मिटे।

प्रश्न १२३—कर्म कारक को मानने से मोक्ष तत्व संबंधी भूल कैसे मिटे ?

उत्तर—भाव मोक्ष का कर्ता "उस समय की योग्यता" है, जीव, अजीव, आस्रव, बंध, सम्बर, निर्जरा उसका कर्ता नहीं है। देखो, कर्म कारक को मानने से भाव मोक्ष तत्व संबधी भूल दूर होगई।

प्रश्न १२४—(१) वह हमारी तारीफ करते थे, आज निन्दा क्यों ? (२) वह लखपति था, वह भिखारी कैसे हो गया ? (३) आज सुबह वह ठीक था, वह कैसे मर गया ? (४) उसका स्वास्थ्य ठीक था, अभी अभी कैसे बिगड़ गया (५) हम तो दिन-रात तत्व का अभ्यास करते हैं, सम्यग्दर्शन क्यों नहीं होता ? (६) अंजन चोर महापापी, वह कैसे उसी भाव से मोक्ष चला गया ? (७) अगृहीत-गृहीत मिथ्या दृष्टि गौतम को सम्यग्दर्शन, साथ ही गणधर पद, चार ज्ञान का उघाड़ कैसे हो गया ? (८) अनादि से नित्य निगोद से निकलकर आठ वर्ष की अवस्था में केवलज्ञान कैसे होगया ?

इन ८ वाक्यों में कर्म कारक को कब माना और कब नहीं माना ?

उत्तर १—वह हमारी तारीफ करते थे, आज निन्दा क्यों ? ऐसे प्रश्न वाले ने कर्म कारक को नहीं माना और निन्दा के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्द उस समय की योग्यता से हुए, तो कर्म कारक को माना। इसी प्रकार बाकी सात प्रश्नों के उत्तर दो।

प्रश्न १२५—प्रत्येक समय प्रत्येक द्रव्य में कार्य होता ही रहता है वह कभी रुकता ही नहीं, यह क्या सिद्ध करता है ?

उत्तर—कार्य (कर्म) को सिद्ध करता है और क्रमबद्ध पर्याय को सिद्ध करता है।

प्रश्न १२६—कर्म कारक को कब माना ?

उत्तर—दृष्टि अपने त्रिकाली भगवान पर आई, तो कर्म कारक को माना।

करण कारक

प्रश्न १२७—करण कारक किसे कहते हैं ?

उत्तर—उस परिणाम के (कार्य का) साधकतम अर्थात् उत्कृष्ट साधन को करण कहते हैं।

प्रश्न १२८—करण कारक में "साधकतम" क्या बताता है ?

उत्तर—'साधकतम" यह बताता है कि उत्कृष्ट साधन कर्ता से बाहर नहीं है।

प्रश्न १२९—कार्य का उत्कृष्ट साधन क्या बताता है ?

उत्तर—कार्य का मध्यम साधन, जधन्य साधन नहीं है; मात्र कार्य का उत्कृष्ट साधन ही कारण है, अन्य नहीं है।

प्रश्न १३०—कार्य के साधन कितने कहे जाते हैं ?

उत्तर—चार कहे जाते हैं; उस समय की योग्यता साधन, अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय साधन, त्रिकाली साधन और निमित्त साधन।

प्रश्न १३१—कार्य का सच्चा साधन कौन है और कौन नही है ?

उत्तर—उस समय की योग्यता ही कार्य का उत्कृष्ट साधन है। अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय साधन, त्रिकाली साधन और निमित्त साधन कार्य के सच्चे साधन नहीं हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १३२—अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय, त्रिकाली और निमित्त कार्य के सच्चे साधन क्यों नहीं हैं ?

उत्तर—अभाव में से भाव की उत्पत्ति नहीं होती, इसलिए अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय, कार्य का साधन नहीं है। कार्य एक समय का हो उसका साधन ध्रुव हो यह भी नहीं बनता है। निमित्त को साधन कहने का प्रश्न ही नहीं है क्योंकि दोनों पृथक-पृथक द्रव्य हैं।

प्रश्न १३३—केवल ज्ञान का उत्कृष्ट साधन कौन है और कौन नहीं है ?

उत्तर—केवल ज्ञान का उत्कृष्ट साधन उस समय की योग्यता ही है। अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय, त्रिकाली ज्ञानगुण और ज्ञानावरणीय का अभाव उत्कृष्ट साधन नहीं हैं।

प्रश्न १३४—अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय भाव श्रुतज्ञान, आत्मा का ज्ञानगुण और ज्ञानावरणीय का अभाव कैसे साधन कहे जाते हैं ?

उत्तर—अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय भाव श्रुतज्ञान अभाव रूप साधन, आत्मा का ज्ञान गुण, त्रिकाली साधन और ज्ञानावरणीय का अभाव निमित्त साधन कहे जाते हैं।

प्रश्न १३५—केवल ज्ञान का उत्कृष्ट साधन वज्र वृषभ नाराच संहनन है ना ? इसमें करण कारक को कब माना और कब नहीं माना ?

उत्तर—केवलज्ञान का उत्कृष्ट साधन उस समय की योग्यता केवलज्ञान है तब तो करण कारक माना और केवलज्ञान का साधन वज्र वृषभ नाराच संहनन कहे तो करण कारक को नहीं माना।

प्रश्न १३६—केवल ज्ञान का उत्कृष्ट साधन उस समय की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योग्यता केवलज्ञान ही है, अन्य नहीं हैं, तो अन्य साधनों में क्या-क्या आया ?

उत्तर—वज्रवृषभनाराच संहनन, चौथा भाग, केवलज्ञानावरणीय का क्षय, आत्मा, आत्मा के अनन्त गुण, अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय भाव श्रुत ज्ञान आदि अन्य साधनों में आते हैं।

प्रश्न १३७—केवलज्ञान का उत्कृष्ट साधन उस समय की योग्यता केवलज्ञान ही है तब करण कारक को माना—इसको जानने से क्या लाभ रहा ?

उत्तर—जैसे केवलज्ञान का उत्कृष्ट साधन उस समय की योग्यता ही है; उसी प्रकार विश्व में अनन्त द्रव्य हैं। प्रत्येक द्रव्य में अनन्त-अनन्त गुण हैं। प्रत्येक गुण में जो जो कार्य हो चुका है, हो रहा है, भविष्य में होगा उन सबका साधन मात्र उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान ही हैं, ऐसा मानते ही चारों गतियों का अभाव रूप धर्म की प्राप्ति होना—यह करण कारक को जानने का लाभ है।

प्रश्न १३८—रोटी का उत्कृष्ट साधन चकला बेलन है ना ? इसमें करण कारक को कब माना और कब नहीं माना ?

उत्तर—रोटी का उत्कृष्ट साधन उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण रोटी है तो करण कारक को माना और रोटी का उत्कृष्ट साधन चकला-बेलन आदि है तो करण कारक को नहीं माना।

प्रश्न १३९—रोटी का उत्कृष्ट साधन उस समय की योग्यता है तब दूसरे साधनों को किस किस नाम से कहा जाता है ?

उत्तर— अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय लोई को अभाव रूप साधन कहा जाता है, आटे को त्रिकाली साधन कहा जाता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है, अज्ञानी बाई के राग को, चकला, बेलन, तवा, आग धर्म, अधर्म-आकाश और काल को निमित्त साधन कहा जाता है।

प्रश्न १४०—रोटी का उत्कृष्ट साधन उस समय की योग्यता ही है ऐसा जानने से किस किस साधन से दृष्टि हट गई ?

उत्तर—बाई के राग—चकला, बेलन, तवा धर्म, अधर्म आकाश काल रूप निमित्तों से, त्रिकाली आटा से, अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय लोई से दृष्टि हट जाती है।

प्रश्न १४१—रोटी का उत्कृष्ट साधन उस समय की योग्यता ही है तब करण कारक को जाना—तो इसको जानने से पात्र जीवों को क्या लाभ होना चाहिए ?

उत्तर—जैसे रोटी का उत्कृष्ट साधन उस समय की योग्यता रोटी ही है; उसी प्रकार विश्व में जितने भी कार्य हैं उन कार्यों का उत्कृष्ट साधन उस समय की योग्यता ही है—ऐसा जानते-मानते ही चारों गतियों के अभाव रूप धर्म की प्राप्ति होना—यह इसको जानने का लाभ है।

प्रश्न १४२—सम्यग्दर्शन का उत्कृष्ट साधन देव-गुरु है ना—इसमें करण कारक को लगाओ।

उत्तर—(प्रश्न १३८ से १४१ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)

प्रश्न १४३—मोक्ष का साधन शरीर है ना ? इसमें करणकारक लगाओ।

उत्तर—(प्रश्न १३८ से १४१ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)

प्रश्न १४४—चारित्र का साधन पंच महाव्रत है ना ? इसमें करणकारक को लगाओ।

उत्तर—(प्रश्न १३८ से १४१ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)

प्रश्न १४५—घड़े का उत्कृष्ट साधन कुम्हार है ना ? इसमें करणकारक को लगाओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—प्रश्न १३८ से १४१ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)।

प्रश्न १४६—सोने के हार का उत्कृष्ट साधन सुनार है ना ? इसमें करणकारक को लगाओ।

उत्तर—प्रश्न १३८ से १४१ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)

प्रश्न १४७—मन्दिर बनने का उत्कृष्ट साधन कारीगर है ना ? इसमें करणकारक लगाकर बताओ।

उत्तर—(प्रश्न १३८ से १४१ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)

प्रश्न १४८—सुगंध का उत्कृष्ट साधन ज्ञान है ना ? इसमें करणकारक को लगाओ।

उत्तर—(प्रश्न १३८ से १४१ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)

प्रश्न १४९—दर्शनमोहनीय के क्षय का उत्कृष्ट साधन क्षायिक सम्यक्त्व है ना ? इसमें करणकारक लगाओ।

उत्तर—(प्रश्न १३८ से १४१ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)

प्रश्न १५०—ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय का उत्कृष्ट साधन केवलज्ञान है ना ? इसमें करणकारक लगाओ।

उत्तर—(प्रश्न १३८ से १४१ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)

प्रश्न १५१—ज्ञान बढ़ाने का उत्कृष्ट साधन शास्त्र है ना ? इसमें करणकारक लगाओ।

उत्तर—(प्रश्न १३८ से १४१ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)

प्रश्न १५२—रुपया मिला उसका उत्कृष्ट साधन जीव है ना ? इसमें करणकारक लगाओ ?

उत्तर—प्रश्न १३८ से १४१ तक के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो)

प्रश्न १५३—करण कितने अर्थों में प्रयुक्त होता है ?

उत्तर—तीन अर्थों में होता है; करण=इन्द्रिय; करण=परिणाम; करण=साधन-करणकारक।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्प्रदान कारक

प्रश्न १५४—सम्प्रदानकारक किसे कहते हैं।

उत्तर—कर्म (परिणाम, कार्य) जिसे दिया अथवा जिसके लिये कर्म किया जाय उसे सम्प्रदान कहते हैं।

प्रश्न १५५—"सम्प्रदान" शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर—सम्=सम्यक् प्रकार से।

प्र=प्रकृष्ट रूप से-विशेष रूप से।

दान=शुद्धता का दान दिया जावे।

अर्थात् सम्यक् प्रकार से विशेष करके जो दान अपने को दिया जावे, यह सम्प्रदान का अर्थ है।

प्रश्न १५६—सम्प्रदान का अर्थ स्पष्ट समझाये ?

उत्तर—(१) जैसे लोभ का त्याग, जो शुद्धि प्रगटी, वह सम्प्रदान है। (२) मिथ्यात्व का अभाव, सम्यग्दर्शन प्रगटा, वह सम्प्रदान है। (३) पाँचवें गुणस्थान में जो शुद्धि प्रगटी, वह सम्प्रदान है। (४) छठे गुणस्थान में जो शुद्धि प्रगटी वह सम्प्रदान है।

प्रश्न १५७—सम्प्रदान को कब माना ?

उत्तर—अपना दान अपने को देवे, तब सम्प्रदान को माना। जिसका कार्य है, वह उसी को दिया जावे अथवा उसी के लिए किया जाय, तो सम्प्रदान को माना।

प्रश्न १५८—घड़ा बना, वह पानी पीने वालों के लिए बना है ना ? इसमें सम्प्रदान कारक को कब माना और कब नहीं माना ?

उत्तर—उस समय की योग्यता के लिए घड़ा बना तो सम्प्रदान कारक को माना और पानी पीने वालों के लिए बना तो सम्प्रदान कारक को नहीं माना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १५९—सम्प्रदान कारक को जानने से क्या लाभ रहा ?

उत्तर—विश्व में जितने भी कार्य होते हैं वह सब उसकी उस समय की योग्यता के लिए ही होते हैं दूसरों के लिए नहीं होते, ऐसा जाने तो धर्म की प्राप्ति हो।

प्रश्न १६०—(१) 'रोटी बनी', वह खाने वालों के लिए बनी है ना ? (२) 'सोने का हार' गले में पहरने के लिए बना है ना ? (३) 'सम्यग्दर्शन' पदार्थों के श्रद्धान करने के लिए है ना ? (४) "केवलज्ञान" सब पदार्थों को जानने के लिए है ना ? (५) "अनन्तानुबंधी क्रोधादि के अभाव रूप शुद्धि" अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, चारित्र मोहनीय के लिए है ना ? (६) "देश चारित्र की शुद्धि", दो चौकड़ी के अभाव रूप चारित्र मोहनीय के लिए है ना ? (७) 'कमरा बनाया' वह लोगों के रहने के लिए है ना ? (८) शास्त्र बना वह लोगों के ज्ञान के लिए है ना ? (९) 'अलमारी बनाई' वह कपड़े रखने के लिए है ना ? (१०) 'दरी' आराम करने के लिए है ना ?

आदि प्रश्नों में सम्प्रदान कारक को कब माना और कब नहीं माना।

उत्तर—(इन सबके उत्तर प्रश्न १५८ तथा १५९ के अनुसार प्रश्न—उत्तर दो)

अपादान कारक

प्रश्न १६१—अपादान कारक किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिसमें से कर्म (क्रिया) किया जाय, उस ध्रुव वस्तु को अपादान कारक कहते हैं।

प्रश्न १६२—अपादान कारक क्या बताता है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—जो उत्पाद हुआ, वह अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान के अभाव को, और ध्रुव को बताता है।

प्रश्न १६३–अपादान कारक में कितने उपादान कारण आते हैं ?

उत्तर—तीनों उपादान कारण आ जाते हैं।

प्रश्न १६४—'केवलज्ञान' हुआ इसमें तीनों उपादान कारण किस प्रकार आये ?

उत्तर—केवलज्ञान का उत्पाद, यह उस समय की योग्यतारूप क्षणिक उपादान कारण : भाव श्रुतज्ञान का व्यय, यह अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण; आत्मा का ज्ञान गुण त्रिकाली उपादान कारण; इस प्रकार तीनों उपादान कारण आ जाते हैं।

प्रश्न १६५—(१) क्षायिक सम्यक्त्व, (२) क्षयोपशम सम्यक्त्व, (३) रोटी बनी (४) केवलदर्शन (५) बिस्तरा बिछा (६) अलमारी बनी, इन तीनों में उपादान कारण किस प्रकार आते हैं ?

उत्तर—(१) क्षायिक सम्यक्त्व का उत्पाद, यह उस समय की योग्यतारूप क्षणिक उपादान कारण; (२) क्षयोपशम सम्यक्त्व का व्यय, यह अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण; (३) आत्मा का श्रद्धागुण, यह त्रिकाली उपादान कारण; इस प्रकार तीनों उपादान कारण आ जाते हैं। इसी प्रकार बाकी के ५ वाक्यों में लगाओ।

प्रश्न १६६—केवल ज्ञानावरणीय के अभाव में से केवलज्ञान हुआ, तो अपादान कारक को माना ?

उत्तर—नहीं माना, क्योंकि केवलज्ञान अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण श्रुतज्ञान का अभाव करके, आत्मा के ज्ञान गुण में से आया, केवलज्ञानावरणीय के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभाव में से नहीं, ऐसा समझे तो अपादान कारक को माना ?

प्रश्न १६७—कोई चतुर ऐसा कहे, केवलज्ञानावरणीय के अभाव में से ही केवलज्ञान आया, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—अपादान कारक को उड़ा दिया और अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण श्रुतज्ञान के अभाव को और आत्मा के ज्ञान गुण को भी उड़ा दिया।

प्रश्न १६८—केवलज्ञान में से केवलज्ञानावरणीय कर्म का अभाव आया तो, आपादान कारक को माना ?

उत्तर—नहीं माना, क्योंकि केवलज्ञानावरणीय का अभाव, अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण ज्ञानावरणीय के क्षयोपशम का अभाव करके, कार्माण वर्गणा में से आया, केवलज्ञान में से नहीं, ऐसा समझे तो अपादान कारक को माना।

प्रश्न १६९—कोई चतुर ऐसा कहे, केवलज्ञान में से ही केवलज्ञानावरणीय का अभाव आया, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—अपादान कारक को उड़ा दिया और अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारक ज्ञानावरणीय क्षयोपशम के अभाव को और कार्माण वर्गणा को भी उड़ा दिया।

प्रश्न १७०—तीनों उपादान कारणों में कितना समय लगता है ?

उत्तर—तोनों का एक ही समय है।

प्रश्न १७१—(१) बाई ने रोटी बनाई (२) मैंने बिस्तर बिछाया (३) वढ़ई ने अलमारी बनाई (४) सुनार ने जेवर बनाया (५) गुरु से ज्ञान प्राप्त हुआ (६) २८ मूलगुण में से मुनिपना आया (७) १२ अणुव्रतों में से श्रावकपना आया (८) देव, गुरु से सम्यक्त्व आया (९) वज्रवृषभनाराच संहनन में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केवलज्ञान आया (१०) ज्ञान के क्षयोपशम से ज्ञानावरणीय का क्षयोपशम आया। इन सब प्रश्नों में अपादान को कब माना और कोई ऐसा ही माने, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—इन सब के उत्तर प्रश्न १६६ तथा १६७ के अनुसार प्रश्न-उत्तर दो

प्रश्न १७२—बाई ने रोटी बनाई, क्या अपादान कारक को माना ?

उत्तर—नहीं माना, क्योंकि रोटी अनन्तर पूर्वक्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई का अभाव करके, ध्रुव आटे में से आई, बाई में से नहीं, तब अपादान कारक को माना।

प्रश्न १७३—कोई चतुर कहे, बाई में से ही रोटी आई, ऐसा माने तो क्या दोष आता है ?

उत्तर—अपादान कारक को उड़ा दिया और अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई के अभाव को और ध्रुव आटे को भी उड़ा दिया।

प्रश्न १७४—अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादानकारण का तो अभाव हो जाता है, उसमें से उत्पाद कैसे हो सकता है ?

उत्तर—वास्तव में अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण के अभाव में से उत्पाद नहीं होता है, वह तो उस समय की योग्यता में से होता है, यह तो अभाव रूप उपादान कारण की अपेक्षा ज्ञान कराया है।

प्रश्न १७५—त्रिकाली ध्रुव तो अनादि अनन्त है और कार्य एक समय का है उसमें से कार्य कैसे आया ?

उत्तर—निमित्त, पर द्रव्यों से अलग करने की अपेक्षा त्रिकाली उपादान को कहा है। वास्तव में उत्पाद, उस समय की योग्यता में से ही आता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १७६—केवलज्ञान, उस समय की योग्यता से हुआ, ऐसा मानने से किस-किस से दृष्टि हट गई ?

उत्तर—(१) वज्रवृषभनाराच संहनन से (२) चौथा काल से (३) ज्ञानावरणीय के अभाव से (४) आत्मा से (५) ज्ञान गुण से (६) श्रुत ज्ञान से दृष्टि हट जाती है।

प्रश्न १७७—क्षायिक सम्यक्त्व, उस समय की योग्यता में से ही होता है, ऐसा मानने से किस-किस से दृष्टि हट गई ?

उत्तर—(१) देवगुरू से (२) दर्शन मोहनीय के उपशमादि से (३) श्रद्धा गुण से (४) क्षयोपशम सम्यक्त्व से दृष्टि हट गई।

प्रश्न १७८—क्या उस समय की योग्यता में से ही कार्य होता है ?

उत्तर—हाँ; उस समय की योग्यता से ही कार्य होता है, ऐसा निर्णय होते ही दृष्टि अपने त्रिकाली स्वभाव पर आवे, तो निर्णय सच्चा है, अन्यथा झूठा है।

अधिकरण कारक

प्रश्न १७९—अधिकरण कारक किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिसमें अथवा जिसके आधार से कर्म (कार्य) किया जावे उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

प्रश्न १८०—अनादि से अज्ञानी ने कार्य के लिये किसका आधार माना है और उसका फल क्या रहा ?

उत्तर—अनादि से अज्ञानी जीव ने कार्य के लिए पर का आधार माना है। उसका फल चारों गतियों में घूमकर निगोद रहा।

प्रश्न १८१—धर्म के लिए अज्ञानी ने किस-किस का आधार माना है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—(१) अपनी आत्मा को छोड़कर तीर्थंकरों का, मुनियों का अत्यन्त भिन्न पर पदार्थों का आधार माना; (२) शरीर इन्द्रियाँ ठीक रहें, तो धर्म हो, उसका आधार माना है; (३) कर्म के क्षय आदि हों, तो धर्म हो, उसका आधार माना है; (४) शुभ भाव हो तो धर्म हो, उसका आधार माना है; (५) भेदकर्म के पक्ष का आधार माना है; (६) अभेदकर्म के पक्ष का आधार माना है; (७) भेदाभेद कर्म के पक्ष का आधार माना है और उसका फल अनन्त संसार है।

प्रश्न १८२—क्या एक वस्तु को दूसरी वस्तु का आधार नहीं है ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं; क्योंकि प्रत्येक वस्तु अपना-अपना कार्य, अपने-अपने आधार से करती है, पर की अपेक्षा नहीं रखती है।

प्रश्न १८३—शरीर को रोटी का आधार है ना ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं; क्योंकि शरीर का आधार आहारवर्गणा है, रोटी और जीव नहीं।

प्रश्न १८४—शरीर को रोटी का आधार है इसमें अधिकरण-कारक को कब माना कब नहीं माना ?

उत्तर—शरीर को आहारवर्गणा का आधार है, रोटी का नहीं, तब अधिकरणकारक को माना और रोटी ही शरीर का आधार है ऐसा मानें, तो उसने अधिकरणकारक को नहीं माना।

प्रश्न १८५—मोक्ष का आधार कर्म का अभाव है ना ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं, क्योंकि मोक्ष का आधार आत्मा है, कर्म का अभाव नहीं है। तब अधिकरणकारक को माना।

प्रश्न १८६—मोक्ष का आधार कर्म का अभाव ही है ऐसा कहें तो क्या दोष आता है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—उसने अधिकरणकारक नहीं माना।

प्रश्न १८७—मोक्ष का आधार कर्म का अभाव कब कहा जा सकता है ?

उत्तर—जबकि द्रव्यकर्म जीव हो जावे, तो मोक्ष का आधार द्रव्य कर्म का अभाव कहा जा सकता, लेकिन ऐसा हो ही सकता नहीं है।

प्रश्न १८८—मोक्ष का आधार कौन रहा ?

उत्तर—मोक्ष का आधार त्रिकाली आत्मा है और वास्तव में मोक्ष का आधार उस समय की योग्यता ही है।

प्रश्न १८९-अधिकरण कारक को कब माना कहा जा सकता है ?

उत्तर—प्रत्येक द्रव्य-गुण-पर्याय का आधार कथंचित् निरपेक्ष है ऐसा माने, तब अधिकरण कारक को माना कहा जा सकता है।

प्रश्न १९०—(१) गुरु को शिष्य का आधार है ना ? (२) आत्मा को कर्म का आधार है ना ? (३) आत्मा को शरीर का आधार है ना ? (४) लड़की को माँ-बाप का आधार है ना ? (५) स्त्री को पति का आधार है ना ? (६) क्षायिक सम्यग्दर्शन के लिए दर्शन मोहनीय के अभाव का आधार है ना ? (७) मुनियों के लिए २८ मूलगुण का आधार है ना ? (८) श्रावक के लिए १२ अणुव्रतों का आधार है ना ? (९)केवलज्ञान के लिए केवलज्ञानावरणीय के अभाव का आधार है ना ? (१०) सुख के लिए लाड़ू का आधार है ना ? (११) ज्ञान के लिए शास्त्र का आधार है ना ? (१२) चारित्र के लिए बाहरी क्रिया का आधार है ना ?

आदि प्रश्नों में (१) अधिकरण कारक को कब माना ? (२) अधिकरण कारक को कब नहीं माना ? (३) कार्य के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिए दूसरी वस्तु का ही आधार माने, तो क्या दोष आवेगा ? (४) दूसरी वस्तु का आधार कब कहा जा सकता है ? (५) कार्य का सच्चा आधार कौन रहा है ? इन सब प्रश्नों के उत्तर दो ?

उत्तर–१२ प्रश्नों के उत्तर प्रश्न १९१ से १९४ तक के अनुसार दो।

प्रश्न १९१— गुरु को शिष्य का आधार है ना ?

उत्तर—बिलकुल नहीं, क्योंकि गुरु को अपना ही आधार है, शिष्य का नहीं। तब अधिकरण कारक को माना।

प्रश्न १९२—गुरु को शिष्य का आधार है ना ? इसमें अधिकरण कारक को कब नहीं माना ?

उत्तर—गुरु को शिष्य का आधार है ऐसा माने तो अधिकरण कारक को नहीं माना।

प्रश्न १९३—गुरु को शिष्य का आधार कब कहा जा सकता है ?

उत्तर—गुरु को अपनी आत्मा का आधार है इसके बदले शिष्य की आत्मा गुरु की आत्मा बन जावे, तो गुरु को शिष्य का आधार कहा जा सकता है लेकिन ऐसा हो सकता नहीं।

प्रश्न १९४—गुरु को शिष्य का आधार है ना ? इसमें सच्चा आधार कौन रहा ?

उत्तर—गुरु को अपनी आत्मा का आधार है और वास्तव में गुरु को "उस समय की योग्यता का आधार" है।

प्रश्न १९५—अनादि से लड़की ने किस-किस का आधार माना और उस का क्या फल रहा ?

उत्तर—(१) घर में लड़की उत्पन्न हुई प्रथम माँ-बाप को आधार माना। (२) पति को आधार माना। (३) पति के बाद लड़के को आधार माना। (४) लड़के ने भी जवाब दे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिया तो रुपये पैसों का आधार माना। (५) रुपया-पसा न रहा तो दिवाल को आधार माना इसका फल चारों गतियों में घूमकर निगोद रहा।

प्रश्न १९६—लड़की किसका आधार ले तो शान्ति आवे ?

उत्तर—एकमात्र अपनी आत्मा का आधार माने तो कल्याण हो, फिर परम्परा मोक्ष की प्राप्ति हो।

प्रश्न १९७—पर्याय का आधार कौन है ?

उत्तर—वास्तव में "उस समय की योग्यता ही" पर्याय का आधार है।

प्रश्न १९८—जब प्रत्येक द्रव्य की पर्याय का आधार वह ही है दूसरा नहीं है तब तो दृष्टि में मेरा आधार मैं ही हूँ, ऐसा जानने-मानने से क्या लाभ होता है ?

उत्तर—(१) अनादि काल से पर में अपने आधार की कल्पना का अभाव हो जाता है; (२) 'स्वयंभू' कहलाता है; (३) चारों गतियों का अभाव होकर पंचमगति का मालिक बन जाता है; (४) पंचपरमेष्ठियों में उसकी गिनती होने लगती है; (५) मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग का अभाव हो जाता है; (६) पंच परावर्तन का अभाव हो जाता है; (७) पंचम परिणामिक भाव का महत्व आ जाता है; (८) आठ कर्मों का अभाव हो जाता है; (९) गुणस्थान-मार्गणा स्थान का अभाव हो जाता है;

प्रश्न १९९—द्रव्य कर्म कितने हैं ?

उत्तर—आठ हैं—ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय।

प्रश्न २००—कर्म आठ ही हैं, कम-ज्यादा क्यों नहीं, शास्त्रों के अलावा और कोई आधार है; जिस पर से आठ कर्म हैं, यह सिद्ध हो सके ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—कर्म आठ हैं शास्त्रों में तो है ही परन्तु देखो कार्य के ऊपर से कारण का अनुमान लगाया जाता है।

वेदनीय कर्म—(१) एक जीव रोगी है, एक निरोगी है। (२) एक के पास लाखों करोड़ों रुपया है, एक के पास फूटी कौड़ी भी नहीं, इससे वेदनीय कर्म की सिद्धि होती है।

नामकर्म—(१) एक तो जहाँ जाता है मान मिलता है, एक जहाँ जाता है अपमान मिलता है। (२) एक रूपवान है, एक कुरूपवान है। इससे नामकर्म की सिद्धि होती है।

आयु कर्म—(१) एक की सौ वर्ष की उम्र है, एक की पचास वर्ष की है। (२) कोई गर्भ में मर जाता है, एक तीन वर्ष में ही चल देता है इससे आयु कर्म की सिद्धि होती है।

गोत्र कर्म—(१) एक जैन है, एक शूद्र है। (२) एक को ऊँचापना देखा जाता है, एक को नीचापना देखा जाता है। इससे गोत्र कर्म की सिद्धि होती है।

देखो, संयोग चार प्रकार का ही बनता है यदि और संयोग देखने में आता है तो बताओ। इसलिए चार प्रकार के संयोग के अलावा और बनता ही नहीं, इससे चार अघाति कर्मों की सिद्धि होती है।

ज्ञानावरणीय कर्म—(१) एक के ज्ञान का उघाड़ ऐसा है एक ही बार में सब बातें याद हो जाती हैं, (२) एक के ज्ञान का उघाड़ ऐसा है ५० बार सुनने पर भी याद नहीं होता। इससे ज्ञानावरणीय कर्म की सिद्धि होती है।

दर्शनावरणीय कर्म—जहाँ विशेष ज्ञान होता है वहाँ पर सामान्य दर्शन होता ही है। इससे दर्शनावरणीय कर्म की सिद्धि होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोहनीय कर्म (१) एक को विशेष राग दिखाई देता है, एक को कम राग दिखाई देता है। (२) एक मिथ्यात्वी है, एक सम्यक्त्वी है इससे मोहनीय कर्म की सिद्धि होती है।

अन्तराय कर्म (१) कोई तीव्र पुरुषार्थ करता है, और कोई मन्द पुरुषार्थ करता है। इससे अन्तराय कर्म की सिद्धि होती है।

इस प्रकार घाति कर्म चार हैं यह सब पापरूप हैं। अघाति में पुण्य-पाप का अन्तर पड़ता है; इस प्रकार तर्क से ८ कर्म की सिद्धि होती है और जिनवाणी में भी आठ कर्म बतलाये हैं।

प्रश्न २०१—कर्म की कितनी दशा हैं ?

उत्तर—चार हैं—(१) उदय (२) क्षय (३) क्षयोपशम (४) उपशम।

प्रश्न २०२—आठ कर्मों में से उदय कितने कर्मों में होता है ?

उत्तर—आठों कर्मों में उदय होता है।

प्रश्न २०३—आठों कर्मों में से क्षय कितने कर्मों में होता है ?

उत्तर—आठों कर्मों में क्षय होता है।

प्रश्न २०४—आठों कर्मों में से क्षयोपशम कितने कर्मों में होता है ?

उत्तर—चार घातियाँ कर्मों में क्षयोपशम होता है।

प्रश्न २०५—आठ कर्मों में से उपशम कितने कर्मों में होता है ?

उत्तर—एक मात्र मोहनीय कर्म में ही उपशम होता है।

प्रश्न २०६—आठ कर्मों में उदय आदि कुल कितने भेद हुए ?

उत्तर—(१) उदय के आठ भेद; (२) क्षय के आठ भेद (३) क्षयोपशम के चार भेद; (४) उपशम का एक भेद; इस प्रकार कुल २१ भेद हुए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २०७—ज्ञानावरणीय कर्म में कितनी दशा होती है ?
उत्तर—तीन होती हैं —उदय, क्षय, क्षयोपशम ।
प्रश्न २०८—दर्शनावरणीय कर्म में कितनी दशा होती हैं ?
उत्तर—तीन होती हैं—उदय, क्षय, क्षयोपशम ।
प्रश्न २०९—अन्तराय कर्म में कितनी दशा होती हैं ?
उत्तर—तीन होती हैं—उदय, क्षय, क्षयोपशम ।
प्रश्न २१०—मोहनीय कर्म में कितनी दशा होती हैं ?
उत्तर—चार होती हैं—उदय, क्षय, क्षयोपशम, उपशम ।
प्रश्न २११ —अघाति कर्मों में कितनी दशा होती हैं ?
उत्तर—दो होती हैं—उदय और क्षय ।
प्रश्न २१२—इस प्रकार उदय आदि कुल कितने भेद हुए ।
उत्तर—(१) ज्ञानावरणीय के तीन भेद; (२) दर्शनावरणीय के तीन भेद; (३) अन्तराय के तीन भेद; (४) मोहनीय के चार भेद; (५) आयु के दो भेद; (६) नाम के दो भेद; (७) गोत्र के दो भेद; (८) वेदनीय के दो भेद; इस प्रकार कुल २१ भेद हुए ।
प्रश्न २१३—आठ कर्मों में उदय आदि के २१ भेदों से क्या लाभ रहा ?
उत्तर—यह २१ भेद हैं, यह कार्य है और प्रत्येक कार्य में छह कारक एक साथ बर्तते हैं। इस प्रकार २१×६=१२६ भेद हुए ।
प्रश्न २१४—ज्ञानावरणीय कर्म का उदय—पर छह कारक कैसे लगते हैं ?
उत्तर—ज्ञानावरणीय कर्म का उदय यह कार्य है; कार्य पर से छह प्रश्न उठते हैं। (१) ज्ञानावरणीय कर्म का उदय किसने किया ? कार्माणवर्गणा ने किया। अतः कार्माण-वर्गणा कर्ता हुई; (२) कार्माणवर्गणा ने क्या किया। ज्ञाना-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narià, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वरणीय कर्म का उदय। अतः ज्ञानावरणीय कर्म का उदय कर्म हुआ; (३) ज्ञानावरणीय कर्म का उदय किस साधन द्वारा हुआ ? कार्माणवर्गणा के साधन द्वारा। अतः कार्माण वर्गणा करण हुई; (४) ज्ञानावरणीय कर्म का उदय किसके लिए किया ? कार्माणवर्गणा के लिए किया। अतः कार्माण-वर्गणा सम्प्रदान हुई। (५) ज्ञानावरणीय कर्म का उदय किसमें से किया ? पहली पर्याय का अभाव करके कार्माण-वर्गणा में से किया। अतः कार्माणवर्गणा अपादान हुई। (६) ज्ञानावरणीय कर्म का उदय किसके आधार से हुआ ? कार्माणवर्गणा के आधार से हुआ। अतः कार्माणवर्गणा अधिकरण हुई।

प्रश्न २१५—आपने जैसे प्रश्न २१४ में ज्ञानावरणीय कर्म का उदय पर छह कारक लगाये हैं, क्या उसी प्रकार बाकी २० भेदों पर भी लगेंगे ?

उत्तर—हाँ; ज्ञानावरणीय कर्म का उदय के समान छहों कारक २० भेदों पर भी लगेंगे।

प्रश्न २१६—२१×६=१२६ भेदों से क्या सिद्धि हुई ?

उत्तर—(१) प्रत्येक कार्य की स्वतन्त्रता की सिद्धि हुई। (२) जीव के कारण द्रव्यकर्म में उदय, क्षय आदि अवस्था होती है और द्रव्यकर्म के कारण जीव में औपशमिक, क्षायिक क्षयोपशम आदि भाव होते हैं ऐसी खोटी मान्यता का अभाव हो गया।

प्रश्न २१७—आपने कर्मों की स्वतन्त्रता की सिद्धि की और समझ में भी आया कि कर्म का उदय आदि का कर्ता कार्माणवर्गणा का कार्य है, जीव का नहीं। परन्तु गोमट्ट-सार आदि शास्त्रों में लिखा है कि (१) कर्म चक्कर कटाता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है (२) ज्ञानावरणीय के अभाव से केवलज्ञान होता है (३) क्षायिक सम्यक्त्व दर्शनमोहनीय के क्षय से होता है आदि कथन शास्त्रों में किया है, क्या वह झूठ लिखा है ?

उत्तर—(१) अरे भाई, वह सब व्यवहार कथन है और व्यवहार कथन का अर्थ "ऐसा है नहीं, निमित्तादि की अपेक्षा कथन किया है", ऐसा जानना चाहिए। (२) जो व्यवहार के कथन को सच्चा ही मानता है वह जिनवाणी सुनने के अयोग्य है और व्यवहार के कथन को सच्चा मानने से मिथ्यात्व की पुष्टि होती है।

प्रश्न २१८—जीव में औदयिक भाव, क्षयोपशम भाव, क्षायिक भाव, औपशमिक भाव भी क्या कर्म की अपेक्षा बिना होते हैं ?

उत्तर—हाँ, जीव में भी औदयिकादि भाव रूप से परिणमित होने की क्रिया में वास्तव में जीव स्वयं ही छह कारक रूप से बर्तता है इसलिए उसे अन्य कारकों की अपेक्षा नहीं है।

प्रश्न २१९—शरीर, मन, वाणी के कार्य, द्रव्य कर्म, तथा जीव के विकारी भाव, अविकारी भाव निरपेक्ष होते हैं इसके लिए कोई शास्त्राधार है ?

उत्तर—(१) देखो, पंचास्तिकाय गा० ६२ टीका सहित में लिखा है कि सर्व द्रव्यों की प्रत्येक पर्याय में यह छहकारक एक साथ बर्तते हैं, इसलिए आत्मा और पुद्गल शुद्ध दशा में या अशुद्ध दशा में स्वयं छहों कारक रूप परिणमन करते हैं और दूसरे कारकों की अपेक्षा नहीं रखते।" (२) जयधवल न० ७ पृष्ठ १७७ "वज्झ कारण निरपेक्खो वत्थु परिणामो" वस्तु का परिणाम बाह्य कारणों से निरपेक्ष होता है। (३) समयसार कलश नं० ५१, ५२, ५३, ५४,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६१ में लिखा है। तथा कलश २०० में "नास्ति सर्वोऽपि सम्बन्धः" (४) आत्ममीमांसा में कहा है "धर्मी धर्म को निरपेक्ष मानो"।

प्रश्न २२०—क्या एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ भी नहीं कर सकता ?

उत्तर—कुछ भी नहीं कर सकता। विचारो। केवली भगवान को अनन्त चतुष्ट्य की प्राप्ति अरहंत दशा में हुई है वह उसी समय औदारिक शरीर का और चार अघाति कर्मों का अभाव नही कर सकते। और छद्मस्त को जरा सा ज्ञान का उघाड़ हुआ और वह कहे, मैं परका कर सकता हूँ, आश्चर्य है।

प्रश्न २२१—संसार में कितने प्रकार की दृष्टि है ?

उत्तर—दो हैं। (१) द्रव्य दृष्टि (२) पर्याय दृष्टि।

प्रश्न २२२—इन दोनों दृष्टियों का क्या फल है ?

उत्तर—द्रव्य दृष्टि का फल—मोक्ष है और पर्याय दृष्टि का फल—निगोद है।

प्रश्न २२३—"बाई ने रोटी बनाई"—इस पर व्यवहार कारक किस प्रकार घटित होते हैं ?

उत्तर—देखो, 'रोटी बनी' यह कार्य है और कार्य पर से छह प्रश्न उठते हैं। (१) रोटी किसने बनाई ? बाई ने। अतः... बाई कर्ता हुई (२) बाई ने क्या किया ? रोटी बनाई। अतः...रोटी कर्म हुआ (३) रोटी किस साधन के द्वारा बनी ? चकला बेलन के साधन द्वारा बनी। ...अतः चकला बेलन करण हुआ। (४) रोटी किस के लिए बनी ? खाने वाले के लिए बनी। अतः...खाने वाला सम्प्रदान हुआ। (५) रोटी किसमें से बनी ? थाली में से बनी। अतः...थाली अपादान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुआ। (६) रोटी किसके आधार से बनी ? चूल्हा, तवे के आधार से बनी। अतः···चूल्हा तवा अधिकरण हुआ।

देखो, इसमें बाई कर्ता, रोटी कर्म, चकला-बेलन करण, खाने वाले सम्प्रदान, थाली अपादान और चूल्हा-तवा अधिकरण—इसमें सभी कारक भिन्न-भिन्न हैं। यह व्यवहार कारक असत्य हैं। यह मात्र उपचरित असदभूत व्यवहार नय से कहे जा सकते हैं।

प्रश्न २२४—व्यवहार कारक को ही सत्य माने, तो क्या होगा ?

उत्तर—यह महा अहंकार रूप अज्ञान अंधकार है उसको सुलटना दुर्निवार है और उसे कभी धर्म की प्राप्ति नहीं होगी।

प्रश्न २२५—"बाई ने रोटी बनाई" इसमें त्रिकाली की अपेक्षा छह निश्चय कारक को लगाओ ?

उत्तर—रोटी बनी यह कार्य है इस पर से छह प्रश्न उटते हैं। (१) रोटी किसने बनाई ? आटा ने बनाई। अतः आटा कर्ता हुआ; (२) आटा ने क्या किया ? रोटी बनाई। अतः आटा कर्म हुआ; (३) रोटी किस साधन से बनी ? आटे के साधन द्वारा। अतः आटा करण हुआ; (४) रोटी किस के लिये बनाई ? आटे के लिए। अतः आटा सम्प्रदान हुआ; (५) रोटी किसमें से बनाई ? अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान लोई का अभाव करके आटे में से बनाई। अतः आटा अपादान हुआ; (६) रोटी किसके आधार से बनी? आटे के आधार से बनी। अतः आटा अधिकरण हुआ।

प्रश्न २२६—रोटी का कर्ता आपने आटे को कहा, परन्तु आटा तो कनस्तर में पड़ा है, अब रोटो क्यों नहीं बनती ? तो कहना पड़ेगा, बाई, चकला, बेलन आवे तो बने, क्या यह बात ठीक नहीं है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—नहीं भाई, हमने आटा को कर्ता कहा, वह तो मात्र पर द्रव्यों से दृष्टि हटाने के लिए कहा। रोटी का कर्ता तो उसकी अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई है।

प्रश्न २२७—रोटी का कर्ता, अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई है और रोटी कर्म, तो इसको जानने से क्या लाभ रहा ?

उत्तर—भूत-भविष्य की पर्यायों से दृष्टि हट गई, अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय की अपेक्षा आटा व्यवहार कारण हो गया। अब रोटी के लिये अनन्तर पूर्वक्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई की ओर देखना रहा।

प्रश्न २२८—रोटी बनी—अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई की अपेक्षा छह कारक लगाकर दिखाओ ?

उत्तर—रोटी बनी—यह कार्य है, कार्य पर से छह प्रश्न उठते हैं। (१) रोटी किसने बनाई ? अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई ने। अतः लोई कर्ता हुई; (२) अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई ने क्या किया ? रोटी बनाई। अतः रोटी कर्म हुई; (३) रोटी किस साधन द्वारा बनी ? अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई के साधन द्वारा। अतः लोई करण हुई। (४) किसके लिए रोटी बनाई? अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई के लिए। अतः लोई सम्प्रदान हुई; (५) रोटी किसमें से बनाई ? अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई में से। अतः लोई अपादान हुई; (६) रोटी किसके आधार से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनी ? अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई के आधार से। अतः लोई अधिकरण हुई।

प्रश्न २२९—अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई कर्ता और रोटी बनी यह कर्म यह आपने बताया। परन्तु जैन शास्त्रों में आता है, पर्याय में से पर्याय नहीं आती है। अभाव में से भाव की उत्पत्ति नहीं होती है, तब फिर अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई कर्ता और रोटी कर्म, यह कैसे हो सकता है ?

उत्तर—अरे भाई ! तुम्हारी बात ठीक है, पर्याय में से पर्याय नहीं आती, अभाव में से भाव की उत्पत्ति नहीं होती है। परन्तु हमने तो रोटी बनने से पूर्व कौन सी पर्याय का अभाव करके होती है, उसकी अपेक्षा अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई को कर्ता कहा। परन्तु यह भी रोटी का सच्चा कर्ता नहीं है।

प्रश्न २३०—क्या लोई भी रोटी का सच्चा कर्ता, नहीं है, तो फिर रोटी का सच्चा कर्ता कौन है ?

उत्तर—उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण रोटी ही सच्चा कर्ता है और रोटी बनी वह कर्म है, क्योंकि जैसा कारण होता है वैसा ही कार्य होता है।

प्रश्न २३१—उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण रोटी कर्ता और रोटी बनी यह कर्म, इस पर छह कारक किस प्रकार लगेंगे ?

उत्तर—'रोटी बनी' यह कर्म है, कार्य पर से छह प्रश्न उठते हैं। (१) रोटी किसने बनाई ? उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण रोटी ने। अतः रोटी कर्ता हुई; (२) उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण रोटी ने क्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किया ? रोटी बनाई। अतः रोटी कर्म हुई। (३) रोटी किस साधन के द्वारा बनाई ? उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण रोटी के साधन द्वारा। अतः रोटी करण हुई; (४) रोटी किसके लिए बनाई ? उस समय की योग्यता क्षणिक उपादानकारण रोटी के लिए। अतः रोटी सम्प्रदान हुई: (५) रोटी किसमें से बनी ? उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण रोटी में से बनी। अतः रोटी अपादान हुई; (६) रोटी किसके आधार से बनी ? उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण रोटी के आधार से। अतः रोटी अधिकरण हुई।

देखो रोटी का वास्तविक सच्चा कारण 'कार्य' उस समय की योग्यता ही है।

प्रश्न २३२—उस समय की योग्यता से ही रोटी बनी और से नहीं, इसको जानने से क्या लाभ रहा ?

उत्तर— संसार में जो जो कार्य होता है वह अपनी-अपनी योग्यता से हुआ है, होता रहा है, होता रहेगा। ऐसा निर्णय होते ही दृष्टि अपने स्वभाव पर आजाती है, तब वास्तव में 'उस समय की योग्यता को माना।

प्रश्न २३३—केवल ज्ञानावरणीय के अभाव से केवलज्ञान की प्राप्ति हुई इसमें (१) निकाली उपादान कारण (२) अनन्तरपूर्व-क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण (३) उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण (४) निमित कारण—चारों प्रकार के छह कारक लगाकर बताओ ?

उत्तर—स्वयं उत्तर २२३ से २३२ तक के अनुसार दो।

प्रश्न २३४—बढ़ई ने रथ बनाया, इसमें चारों प्रकार के छह कारक लगाओ ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—स्वयं उत्तर प्रश्न २२३ से २३२ तक के अनुसार दो।

प्रश्न २३५—मैंने दही में से घी निकाला, चारों प्रकार के छह कारक लगाओ ?

उत्तर—स्वयं उत्तर प्रश्न २२३ से २३२ तक के अनुसार दो।

प्रश्न २३६—(१) औपशमिक सम्यक्त्व होने से दर्शन मोहनीय का उपशम हुआ ? (२) ज्ञान का क्षयोपशम होने से ज्ञानावरणीयका क्षयोपशम हुआ ? (३) मैंने कपड़े बिछाये ? (४) मैं जोर-शोर से बोल सकता हूँ ? (५) गुरु से ज्ञान होता है ? (६) निमित्त से उपादान में कार्य होता है ? (७) कुन्दकुन्द भगवान ने समयसार बनाया ? (८) मन्दकषाय होने पर चारित्र मोहनीय का मन्द उदय होता है ? (९) मैंने रुपया दान दिया ? (१०) मिस्त्री ने मकान बनाया ? आदि वाक्यों में त्रिकाली उपादान कारण, अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण, उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण और निमित्त कारण—चारो प्रकार के छह कारक लगाकर बताओ ?

उत्तर—क्रम से एक एक वाक्य पर चारों करणों पर छह कारक प्रश्न २२३ से २३२ तक के अनुसार लगाकर स्पष्ट करो।

प्रश्न २३७—जब "कार्य उस समय की योग्यता" से होता है तब (१) निमित्त की अपेक्षा (२) त्रिकाली उपादान की अपेक्षा (३) अनन्तर पूर्वक्षणवर्ती पर्याय क्षणिकउपादान कारण की अपेक्षा क्यों कथन किया है ?

उत्तर—(१) द्रव्य उचित बहिरंग साधनों की संनिधि के सद्भाव से अनेक प्रकार की अनेक अवस्थाएं करता है। (प्रवचनसार गा० ९५ की टीका) (२) प्रति समय प्रत्येक द्रव्य त्रिस्वभाव स्पर्शी (उत्पाद-व्यय और ध्रौव्य—इन तीन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वभाव युक्त) होता है और कार्य के उत्पाद के समय बहिरंग साधनों (निमित्त) की उपस्थिति होती है। (प्रवचनसार गा० १०२ की टीका) (३) इससे यह सिद्ध होता है कि उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य और बहिरंग साधनों का समय एक ही होता है, ऐसा स्वभाविक नियम है। इसलिए कार्य की उत्पत्ति के समय उचित निमित्त होता ही है। (४) जब उत्पाद होता है वहाँ पूर्व पर्याय का अभाव, त्रिकाली में से होता है और वहाँ अपनी योग्यता से निमित्त भी स्वयं होता ही है यह ज्ञान कराने की अपेक्षा कथन है।

प्रश्न २३८—जब जब कार्य होता है, तब अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण का अभाव करके ही त्रिकाली उपादान कारण में से होता है तब निमित्त होता ही है ऐसा आप कहना चाहते हैं?

उत्तर—हाँ, भाई बात तो ऐसी ही है। परन्तु यह ध्यान रखना चाहिए। (१) कोई मात्र उत्पाद को माने, व्यय को न माने, त्रिकाली को न माने और निमित्त को न माने, तो झूठा है। (२) कोई मात्र व्यय को माने बाकी को न माने, तो झूठा है।

(३) कोई मात्र त्रिकाली को माने, बाकी को न माने तो झूठा है। (४) मात्र निमित्त को माने, बाकी को न माने तो झूठा है। (५) चारों की सत्ता है, लेकिन अपनी अपनी है, एक दूसरे में से नहीं होते। (६) परन्तु जहाँ उत्पाद होगा, वहाँ व्यय का अभाव, और त्रिकाली होगा और निमित्त भी होगा। (७) जहाँ व्यय होगा, वहाँ उत्पाद, और त्रिकाली भी होगा। (८) चारों का एक ही समय है उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य एक ही में होता है, निमित्त पर होता है। क्योंकि कहा है—उपादान निजगुण जहाँ तहाँ,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निमित्त पर होय। भेदज्ञान परमान विधि बिरला बूझे कोय।

प्रश्न २३९—क्या विकारी भावों में भी छह कारक घटते हैं ?

उत्तर—हाँ घटते हैं, क्योंकि विकारी भाव भी निरपेक्ष है।

प्रश्न २४०—विकारी भावों को शास्त्रों में निरपेक्ष क्यों कहा है ?

उत्तर—(१) विकारी भाव एक समय की पर्याय है यह अपने अपराध से ही है। यह अपने षट् कारक से स्वयं होता है। (२) विकारी भावों के समय कर्म का निमित होता है परन्तु विकार कर्म ने नहीं कराया। विकार, कर्म के उदय की अपेक्षा के बिना होता है। (३) अपना एक समय का दोष जानकर, स्वभाव त्रिकाल दोष-रहित है उसका आश्रय लेकर अभाव करे। इसलिए शास्त्रों में विकारी भावों को निरपेक्ष कहा है।

प्रश्न २४१—विकारी भावों को शास्त्रों में (१) अशुद्ध निश्चयनय से जीव का कहा है। (२) व्यवहार से जीव का कहा है। (३) पर्यायार्थिकनय से जीव का कहा है, वहाँ कहने का तात्पर्य क्या है ?

उत्तर—(१) विकारी भाव जीव की पर्याय में होते हैं इस अपेक्षा निश्चय कहा और अशुद्ध है इसलिए अशुद्ध शब्द कहा। अशुद्ध निश्चयनय से विकारीभाव जीव के कहे, ताकि जीव शुद्ध निश्चयनय का आश्रय लेकर अभाव करे। (२) विकारी भाव पराश्रित होने से व्यवहार कहा, निश्चय स्वाश्रित होता है इसलिए निश्चय का आश्रय लेकर विकारीभाव जो पराश्रित है उनका अभाव करे। (३) विकारी भाव पर्याय में हैं द्रव्य-गुण में नहीं हैं, द्रव्य-गुण अभेद का आश्रय लेकर पर्याय में से विकार का अभाव करे यह न्यारी न्यारी अपेक्षा कहने का तात्पर्य है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २४२—'आत्मा प्रज्ञा द्वारा भेदज्ञान करता है' इस वाक्य पर से कितने कारक सिद्ध होते हैं ?

उत्तर—तीन—आत्मा कर्ता, प्रज्ञा द्वारा करण, भेद ज्ञान करता है कर्म ।

प्रश्न २४३—'आत्मा ने ज्ञान दिया' इसमें कितने कारक सिद्ध होते हैं ?

उत्तर—दो । आत्मा कर्ता, ज्ञान दिया कर्म ।

प्रश्न २४४—'आत्मा ने, ज्ञान द्वारा, ज्ञान दिया, उसमें कितने कारक सिद्ध होते हैं ?

उत्तर—आत्मा ने कर्ता, ज्ञान द्वारा करण, ज्ञान दिया कर्म ।

प्रश्न २४५—'आत्मा ने, ज्ञान द्वारा, ज्ञान के लिए, ज्ञान दिया, कितने कारक सिद्ध होते हैं ?

उत्तर—आत्मा ने कर्ता, ज्ञान द्वारा करण, ज्ञान के लिए सम्प्रदान, ज्ञान दिया कर्म ।

प्रश्न २४६—"अर्हंत भगवान ने केवलज्ञान प्रगट किया," कितने कारक सिद्ध होते हैं ?

उत्तर—अर्हंत भगवान कर्ता, केवलज्ञान कर्म ।

प्रश्न २४७—आत्मा ने ज्ञान द्वारा, ज्ञान के लिए ज्ञान में से, ज्ञान दिया उसमें कितने कारक सिद्ध होते है ?

उत्तर—आत्मा कर्ता, ज्ञान द्वारा करण, ज्ञान के लिए सम्प्रदान, ज्ञान में अपादान, ज्ञान दिया कर्म ।

प्रश्न २४८—आत्मा में से, शुद्धता आती है उसमें कितने कारक सिद्ध होते हैं ?

उत्तर—आत्मा में से अपादान, शुद्धता कर्म ।

प्रश्न २४९—निश्चय रत्नत्रय का कारण, शुद्ध आत्मा है कितने कारक सिद्ध होते हैं ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—निश्चय रत्नत्रय कर्म, कारण, करण, शुद्ध आत्मा कर्ता।

प्रश्न २५०—मैं, अपने हित के लिए, अभ्यास करता हूँ कितने कारक सिद्ध होते हैं?

उत्तर—मैं कर्ता, अपने हित के लिए सम्प्रदान, अभ्यास करता हूँ कर्म।

प्रश्न २५१—ऊचें निमित्तों द्वारा, जीव, ऊँचा चढ़ता है कितने कारकों में भूल हैं।

उत्तर—कारण, कर्ता, कर्म, तीन कारकों की भूल है।

प्रश्न २५२—महापुरुष, अपने में से दूसरों को देते हैं कितने कारकों की भूल हैं?

उत्तर—कर्ता, अपादान, कर्म, तीन कारकों की भूल है।

व्याप्यव्यापक

प्रश्न २५३—व्याप्यव्यापक किसे कहते हैं?

उत्तर—(१) जो सर्व अवस्थाओं में रहे, वह व्यापक है और एक अवस्था विशेष (उस व्यापक का) व्याप्य है।

प्रश्न २५४—व्याप्यव्यापक के पर्यायवाची शब्द क्या-क्या हैं?

उत्तर—व्यापक-व्याप्य कहो, कर्ता-कर्म कहो, परिणामी-परिणाम कहो, त्रिकाली उपादान-उपादेय कहो एक ही बात है।

प्रश्न २५५—द्रव्य-गुण-पर्याय में व्याप्य-व्यापक किसमें है?

उत्तर—द्रव्य और गुण व्यापक है और पर्याय व्याप्य है।

प्रश्न २५६—क्या व्याप्य-व्यापकपता भिन्न-भिन्न पदार्थों में होता है?

उत्तर—बिल्कुल नहीं, क्योंकि व्याप्यव्यापकपना तत्स्वरूप में ही (अभिन्न सत्तावान पदार्थों में ही) होता है। अतत्वरूप में (जिनकी सत्ता भिन्न-भिन्न है ऐसे पदार्थों में) नहीं ही होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २५७—व्याप्य-व्यापक जानने से क्या लाभ हैं ?

उत्तर—सामान्य में से विशेष आता है अर्थात् व्यापक में से व्याप्य आता है पर से नहीं। ऐसा जानने से ज्ञानी हो जाता है और अनादि से पर पदार्थों में जो कर्ता-कर्म भाव माना था उसका अभाव हो जाता है जगत का ज्ञाता-दृष्टा साक्षीभूत बन जाता है।

प्रश्न २५८—सम्यग्दर्शन का व्याप्य-व्यापक कौन है और कौन नहीं है ?

उत्तर—आत्मा का श्रद्धा गुण व्यापक है और सम्यग्दर्शन व्याप्य है। और देव-गुरु-शास्त्र, दर्शन मोहनीय के उपशमादि व्यापक नहीं है।

प्रश्न २५९—केवलज्ञान हुआ इसमें व्याप्य-व्यापक कौन है और कौन नहीं है ?

उत्तर—आत्मा का ज्ञान गुण व्यापक है, केवलज्ञान व्याप्य है और वज्र वृषभनाराच संहनन, ज्ञानावरणीय का अभाव, चौथा काल और शुभभाव व्यापक नहीं है।

प्रश्न २६०—क्या रोटी व्याप्य और बाई व्यापक, ठीक है ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं, क्योंकि आटा व्यापक है रोटी व्याप्य है।

प्रश्न २६१—यदि बाई को व्यापक कहें तो क्या होगा ?

उत्तर—बाई के नाश होने का प्रसंग होवेगा। और बाई आटा बन जावे तो ऐसा कहा जा सकता है लेकिन व्याप्य-व्यापक संबंध एक ही द्रव्य में होता है दो में नहीं होता है।

प्रश्न २६२—क्या जीव के विकारी परिणाम व्यापक और पुद्गल के विकारी परिणाम व्याप्य, ठीक है ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं, क्योंकि पद्गल के विकारी परिणाम व्याप्य, कार्माण वर्गणा व्यापक है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २६३—कोई कहे, हम तो जीव के विकारी परिणाम व्यापक और पुद्गल कर्म व्याप्य ऐसा ही मानेंगे, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—जीव के नाश का प्रसंग उपस्थित होवेगा और जीव नष्ट होकर कार्माण वर्गणा बन जावे तो ऐसा कहा जा सकता है लेकिन व्याप्यव्यापक संबंध एक द्रव्य का उसकी पर्याय में ही होता है भिन्न-भिन्न पदार्थों में नहीं होता।

प्रश्न २६४—क्या द्रव्यकर्म का उदय व्यापक और संसार अवस्था व्याप्य ठीक है ?

उत्तर—बिलकुल नहीं, क्योंकि संसार अवस्था, व्याप्य जीव व्यापक है।

प्रश्न २६५—कोई कहे, हम तो कर्म के उदय को व्यापक संसार अवस्था व्याप्य, ऐसा ही मानेंगे, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—जीव के नाश का प्रसंग उपस्थित होवेगा। और कर्म के उदय को जीव बन जाने का प्रसंग उपस्थित होवेगा, लेकिन व्याप्य-व्यापक एक ही द्रव्य का उसकी पर्याय में होता है भिन्न-भिन्न द्रव्यों में नहीं होता है।

प्रश्न २६६—क्या द्रव्य कर्म का अभाव व्यापक और संसार का अभाव व्याप्य, ठीक है ?

उत्तर—बिलकुल नहीं, क्योंकि संसार का अभाव व्याप्य और जीव व्यापक है।

प्रश्न २६७—कोई कहे कर्म का अभाव व्यापक और संसार का अभाव व्याप्य ऐसा ही माने तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—जीव के अभाव का प्रसंग उपस्थित होवेगा। और कर्म के जीव बन जाने का प्रसंग उपस्थित होवेगा, लेकिन व्याप्य व्यापक एक द्रव्य का उसकी पर्याय में ही होता है अलग-अलग द्रव्यों में नहीं होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २६८—क्या वायु का चलाना व्यापक और समुद्र में लहर उठी व्याप्य, ठीक है ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं, क्योंकि समुद्र में लहर उठी व्याप्य, समुद्र व्यापक है।

प्रश्न २६९—कोई कहे, वायु का चलना व्यापक और समुद्र में लहर उठी व्याप्य, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—समुद्र के नष्ट होने का प्रसंग उपस्थित होवेगा। और वायु का चलना नष्ट होकर समुद्र बन जाने का प्रसंग उपस्थित होवेगा, व्याप्य व्यापक एक द्रव्य का उसकी पर्याय में होता है भिन्न-भिन्न द्रव्यों की पर्यायों में नहीं होता है।

प्रश्न २७०—क्या वायु का न चलना व्यापक और तरंग न उठी व्याप्य, ठीक है ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं, क्योंकि समुद्र में लहर न उठी व्याप्य और समुद्र व्यापक है।

प्रश्न २७१—कोई कहे, हवा ना चली व्यापक और तरंग ना उठी व्याप्य, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—समुद्र के नष्ट होने का प्रसंग उपस्थित होवेगा। और वायु का नाश होकर समुद्र बन जाने का प्रसंग उपस्थित होवेगा, लेकिन व्याप्य व्यापक एक द्रव्य का उसकी पर्याय में होता है भिन्न-भिन्न द्रव्यों की पर्याय में नहीं होता।

प्रश्न २७२—विकारी भाव अहेतुक है या सहेतुक है ?

उत्तर—वास्तव में विकारी भाव अहेतुक है क्योंकि प्रत्येक द्रव्य का परिणमन स्वतंत्र है। और विकारी पर्याय के समय निमित्त होता है इस अपेक्षा सहेतुक है।

प्रश्न २७३—विकारी भाव अहेतुक, है या सहेतुक इसमें कोई दूसरी ओर भी अपेक्षा है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर— (१) विकारी भाव आत्मा स्वतंत्र रूप से करता है वह अपना हेतु है इस अपेक्षा सहेतुक है और कर्म सच्चा हेतु नहीं है इस अपेक्षा अहेतुक है।

प्रश्न २७४—तुम विकारी भाव को आत्मा का स्वभाव कहते हो और स्वभाव का कभी अभाव होता नहीं इसलिए विकार को कर्मकृत मानना चाहिए, क्या यह ठीक है ?

उत्तर—(१) विकारी भाव व्याप्य और द्रव्यकर्म व्यापक, ऐसा माने तो व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध नहीं बनेगा, क्योंकि व्याप्य व्यापक एक द्रव्य में हो होता है भिन्न-भिन्न में नहीं होता इसलिए आत्मा व्यापक और विकारी भाव व्याप्य, ऐसा मानना योग्य है। (२) हम विकार को एक समय का विकारी स्वभाव कहते हैं त्रिकाली स्वभाव नहीं कहते हैं। (३) यदि जीव विकार को एक समय का स्वयं का अपराध माने, तो त्रिकाली स्वभाव के आश्रय से विकार का अभाव कर सकता है। (४) यदि विकार को कर्मकृत माना जावे, तो जीव कभी निगोद से भी नहीं निकले जहाँ जो पड़ा हो वहीं पड़ा रहेगा।

प्रश्न २७५—शुद्धनय की दृष्टि से रागादिक का व्याप्य-व्यापक कौन है ?

उत्तर—रागादिभाव व्याप्य है और पुद्गल व्यापक है।

प्रश्न २७६—अशुद्ध निश्चनय से रागादिक का व्याप्य-व्यापक कौन है ?

उत्तर—रागादि भावव्याप्य है और अज्ञानी जीव का चारित्र गुण व्यापक है।

प्रश्न २७७—द्रव्य-गुण और पर्याय में व्याप्य-व्यापक कौन है ?

उत्तर—द्रव्य-गुण व्यापक है और पर्याय व्याप्य है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २७८—व्याप्य-व्यापक के पर्यायवाची शब्द क्या क्या हैं ?
उत्तर—व्यप्य-व्यापक कहो, कर्ता-कर्म भाव कहो एक ही बात है, क्योंकि व्याप्य-व्यापक भाव के विना कर्ता-कर्म की स्थिति नहीं हो सकती है।

प्रश्न २७९—छह कारकों की स्वतंत्रता से क्या सिद्ध हुआ ?
उत्तर—जीव अनन्त, पुद्गल अनन्तानन्त, धर्म-अधर्म-आकाश एकेक और लोक प्रमाण असंख्यात काल द्रव्य हैं। प्रत्येक द्रव्य में अनन्त अनन्त गुण हैं। प्रत्येक गुण में एक पर्याय का व्यय, दूसरी का उत्पाद और गुण ध्रौव्य रहता है। ऐसा प्रत्येक द्रव्य के गुण में हो चुका है, हो रहा है और भविष्य में होता रहेगा।

प्रश्न २८०—इस मंत्र के जानने वाले को क्या-क्या लाभ होता है?
उत्तर—(१) केवली के समान ज्ञाता दृष्टा बुद्धि प्रगट हो जाती है। (२) प्रत्येक वस्तु कैसी है और क्या करती है ऐसा सच्चा ज्ञान हो जाता है। (३) इस मंत्र का रहस्य अपना अनुभव हुए विना समझ में नहीं आ सकता है। ज्ञानी इस मंत्र का रहस्य जानते हैं और सदैव सुखी रहते हैं। (४) अनादि से व्यवहार षट्कारक के अवलम्बन में पागल था वह मिटकर शुद्धात्म अनुभूति प्रगट हो जाती है। (५) ज्ञानी जानता है मेरी आत्मा अनादि अनन्त किसी में गया नहीं। मिला नहीं है, उसी प्रकार प्रत्येक द्रव्य किसी में गया नहीं, कभी जावेगा नहीं। (३) यह मंत्र सारे आगम का सार है यह वीतराग विज्ञानता का भेदज्ञान है।

वस्तु विचारत ध्यावतैं, मन पावै विश्राम।
रस स्वादत सुख उपजै, अनुभव याकौ नाम॥

इति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपादान-उपादेय, निमित-नैमित्तिक अधिकार

प्रश्न १—कार्य किस प्रकार होता है ?

उत्तर—कारण का अनुसरण करके ही कार्य होता है।

प्रश्न २—कारण का अनुसरण करके ही कार्य होता है, ऐसा कहाँ कहा है ?

उत्तर—(१) "कारणानुविधायित्वादेव कार्याणां" अर्थात् कारण का अनुसरण करके ही कार्य होता है (२) कारण-अनुविधायित्वात् कार्याणां, अर्थात्, कारण जैसे कार्य होते हैं। [समयसार गा० १३०, १३१ की टीका में] (३) "कारणानुविधायीनि कार्याणि" कारण जैसा ही कार्य होता है। [समयसार गा० ६८ को टीका में] (४) "तेहि पुणो पज्जाया" द्रव्य और गुणों से पर्यायें होती हैं। [प्रवचनसार गा० ९३] (५) गुणों के विशेष कार्य (परिणमन) को पर्याय कहते हैं।

प्रश्न ३—कार्य के पर्यायवाची शब्द क्या-क्या हैं ?

उत्तर—कार्य को कर्म, अवस्था, पर्याय, हालत, दशा, परिणाम, परिणति, व्याप्य, उपादेय, नैमित्तिक आदि कहा जाता है।

प्रश्न ४—कारण का अनुसरण करके ही कार्य होता है इसमें अनेकान्त किस प्रकार घटित होता है ?

उत्तर—कारण का अनुसरण करके ही कार्य होता है, पर से नहीं, यह अनेकान्त है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न ५—कारण का अनुसरण करके ही कार्य होता है पर से नहीं, इसमें कौन से कारण की बात है ?

उत्तर—वास्तव में उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण की बात है।

प्रश्न ६—"कारण का अनुसरण करके ही कार्य होता है पर से नहीं," "पर में" कौन कौन कारण आते हैं ?

उत्तर—(१) निमित्त कारण, (२) त्रिकाली उपादान कारण, (३) अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण। यह सब पर में आते हैं।

प्रश्न ७—क्या गुरु कारण ज्ञान कार्य, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं माना; क्योंकि आत्मा के ज्ञान गुण में से अनंतरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण का अभाव करके उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ज्ञान हुआ है, गुरु से नहीं, तब "कारणानुविधायिनी कार्याणि" को माना।

प्रश्न ८—क्या ज्ञान कार्य, इन्द्रियाँ कारण, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ?

उत्तर—नहीं माना; क्योंकि आत्मा के ज्ञान गुण में से अनंतरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण का अभाव करके उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ज्ञान हुआ है, इन्द्रियों से नहीं तब कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना।

प्रश्न ९—क्या ज्ञानावरणीय क्षयोपशम कारण और ज्ञान कार्य, 'कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—नहीं माना; क्योंकि आत्मा के ज्ञान गुण में से अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण का अभाव करके उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ज्ञान हुआ है, ज्ञानावरणीय के क्षयोपशम के कारण नहीं, तब कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना।

प्रश्न १०—क्या शुभभाव कारण और ज्ञान कार्य, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ?

उत्तर—नहीं माना; क्योंकि आत्मा के ज्ञान गुण में से अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण का अभाव करके उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ज्ञान हुआ शुभभाव के कारण नहीं—तब कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना।

प्रश्न ११—क्या श्रद्धा गुण कारण और ज्ञान कार्य, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ?

उत्तर—नहीं माना; क्योंकि आत्मा के ज्ञान गुण में से अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण का अभाव करके उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ज्ञान हुआ, श्रद्धा गुण के कारण नहीं—तब कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना।

प्रश्न १२—क्या आत्मा कारण और ज्ञान कार्य, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ?

उत्तर—नहीं माना; क्योंकि आत्मा में तो अनंत गुण हैं, इसलिए ज्ञान में से अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण का अभाव करके उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ज्ञान हुआ, आत्मा से नहीं—तब कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १३—क्या ज्ञान गुण कारण और ज्ञान कार्य, 'कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना।

उत्तर—नहीं माना; क्योंकि ज्ञान गुण तो त्रिकाल है—ज्ञानरूप कार्य एक समय का है। इसलिए अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण का अभाव करके उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ज्ञान हुआ, त्रिकाल ज्ञान गुण के कारण नहीं—तब कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना।

प्रश्न १४—क्या अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण और ज्ञान कार्य, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ?

उत्तर—नहीं माना; क्योंकि कभी अभाव में से भाव की उत्पत्ति नहीं होती है। इसलिए उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारणज्ञान और ज्ञान कार्य, तब कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना।

प्रश्न १५—ज्ञान उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से हुआ, ऐसा मानने से किस-किस से दृष्टि हट गई ?

उत्तर—(१) अत्यन्त भिन्न देव, गुरु, शास्त्र से, (२) आँख, नाक आदि इन्द्रियों से, (३) ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशमादि से, (४) शुभाशुभ भावों से, (५) श्रद्धा-चारित्र-आनन्द आदि अनन्त गुणों से, (६) अभेद द्रव्य से, (७) ज्ञान गुण से, (८) अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण से; आदि सबसे दृष्टि हट गई।

प्रश्न १६—अब वर्तमान ज्ञान के लिए कहाँ देखना रहा ?

उत्तर—वास्तव में उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण ही ज्ञान होने का सच्चा कारण है, उसकी ओर देखना रहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १७—क्षयोपशमिक सम्यक्त्व हुआ, उसका सच्चा कारण कौन है ?

उत्तर—उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण ही क्षयोपशमिक सम्यक्त्व का सच्चा कारण है।

प्रश्न १८—क्षयोपशमिक सम्यक्त्व का सच्चा कारण उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण ही है ऐसा जानने से किस-किस से दृष्टि हट गई ?

उत्तर—(१) अत्यन्त भिन्न देव, गुरु, शास्त्र से, (२) दर्शन मोहनीय के क्षयोशमादि से, (३) आत्मा से, (४) ज्ञान-चारित्र आदि अनन्त गुणों से, (५) शुभभावों से, (६) श्रद्धा गुण जो त्रिकाली उपादान कारण है उससे, (७) अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण औपशमिक सम्यक्त्व से; दृष्टि हट गई।

प्रश्न १९—क्षयोपशामिक सम्यक्त्व का द्रव्य, गुण, और अभावरूप पर्याय का नाम बताओ ?

उत्तर—(१) आत्मा द्रव्य है, (२) श्रद्धा गुण है, (३) अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण औपशमिक सम्यक्त्व अभावरूप पर्याय है।

प्रश्न २०—केवलज्ञान का सच्चा कारण कौन है ?

उत्तर—उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण ही केवलज्ञान का सच्चा कारण है।

प्रश्न २१—उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण ही केवलज्ञान का सच्चा कारण है तो केवलज्ञान का सच्चा कारण कौन-कौन नहीं है ?

उत्तर—(१) चौथा काल, (२) केवलज्ञानावरणीय कर्म का अभाव, (३) वज्रवृषभनाराच संहनन, (४) आत्मा, (५) ज्ञान गुण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को छोड़कर बाकी अनन्त गुण, (६) ज्ञान गुण, (७) शुक्ल-लेश्या आदि मंद कषाय का शुभभाव, (८) अनन्तरपूर्व क्षण-वर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण भाव श्रुतज्ञान, यह सब केवलज्ञान के सच्चे कारण, नहीं हैं।

प्रश्न २०—केवलज्ञान का त्रिकाली उपादान कारण, अभावरूप उपादान कारण कौन है ?

उत्तर—आत्मा का ज्ञानगुण त्रिकाली उपादान कारण है और अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण भाव श्रुतज्ञान अभावरूप उपादान कारण है। और केवलज्ञान कार्य है।

प्रश्न २३—कुम्हार ने घड़ा बनाया, इसमें कुम्हार कारण और घड़ा बना कार्य, 'कारणानुविधायीणि कार्याणि' को कब माना ?

उत्तर—नहीं माना; क्योंकि आहारवर्गणा के मिट्टी में से अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण पिण्ड का अभाव करके उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से घड़ा बना, कुम्हार आदि से नहीं तब कारणानु विधायीनि कार्याणि को माना।

प्रश्न २४—घड़ा बना वह उस समय की योग्यता क्षणिक उपा-दान कारण है और जो घड़ा बना वह कार्य है। यह २३वें प्रश्न के उत्तर में बताया "कुम्हार आदि से नहीं। कुम्हार आदि" में कौन-कौन हैं जिनसे घड़ा नहीं बना ?

उत्तर—(१) कुम्हार का राग, (२) हाथ-कीली-चाक-डन्डा, (३) आहारवर्गणा को छोड़कर बाकी वर्गणाओं, (४) मिट्टी (५) पिण्ड, यह सब कुम्हार आदि में आते हैं इनसे घड़ा नहीं बना एकमात्र उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से घड़ा बना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २५—"ज्ञान क्रियाभ्याम् मोक्षः" इसमें ऐसा लगता है कि आत्मा का ज्ञान और शरीर की क्रिया उपादान कारण और मोक्ष कार्य, 'कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ?

उत्तर—"कारणानुविधायीनि कार्याणि" को बिल्कुल नहीं माना क्योंकि उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण और मोक्ष कार्य है।

प्रश्न २६—मोक्ष का त्रिकाली उपादान कारण और अभाव रूप उपादान कारण कौन है ?

उत्तर—आत्मा त्रिकाली उपादान कारण है और अनन्तपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण १४वाँ गुणस्थान अभाव रूप कारण है।

प्रश्न २७—मोक्ष का कारण कौन-कौन नहीं हैं ?

उत्तर—(१) औदारिक शरीर, (२) द्रव्य कर्म का अभाव, (३) वज्रवृषभनाराच संहनन, (४) चौथा काल, (५) आत्मा, (६) अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण १४ वाँ गुणस्थान, (७) आत्मा का ज्ञान और शरीर की क्रिया इनमें कोई भी मोक्ष का कारण नहीं है। एक मात्र उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण मोक्ष यह कारण और मोक्ष हुआ यह कार्य।

प्रश्न २८—तो 'ज्ञान क्रियाभ्याम् मोक्षः' ऐसा क्यों कहा जाता है ?

उत्तर—यहाँ पर ज्ञान अर्थात् सम्यग्ज्ञान और क्रिया अर्थात् सम्यक्चारित्र दोनों मिलकर मोक्ष जानो और शरीर आश्रित उपदेश, उपवासादिक क्रिया और शुभराग रूप व्यवहार को मोक्षमार्ग ना जानो, यह बात बताई है। और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो "ज्ञान क्रियाभ्याम् मोक्षः का अर्थ ज्ञान और शरीर की क्रिया मोक्ष है ऐसा अर्थ करते हैं वह अर्थ झूठा है।

प्रश्न २९—आत्मा का ज्ञान और शरीर की क्रिया उपादान कारण और मोक्ष कार्य, यह इस सूत्र का अर्थ गलत क्यों है ?

उत्तर—'ज्ञान क्रियाभ्याम् मोक्षः' का जो अर्थ शरीर की क्रिया और आत्मा का ज्ञान; ऐसा करते हैं उन्हें व्याकरण का भी ज्ञान नहीं है; क्योंकि ज्ञान एक और शरीर की क्रिया यह अनन्त पुदगल परमाणुओं की क्रिया हैं। "क्रियाभ्याम् द्विवचन है, यदि यहाँ पर 'भ्याम्' के बदले में तीसरी बहु-वचन शब्द होता तो, ठीक होता परन्तु यहाँ 'पर भ्याम्' है यह दो को बताता है। इसलिए जो ज्ञान और शरीर की क्रिया यह मोक्ष है ऐसा अर्थ करते हैं वह झूठे हैं। इसलिए पात्र जीवों को यहाँ पर ज्ञान का अर्थ सम्यग्ज्ञान और क्रिया का अर्थ सम्यक् चारित्र है तथा इन दोनों को मिलाकर मोक्ष जानो और शरीर की क्रिया को मोक्ष मार्ग ना जानो, ऐसा ज्ञानियों का आदेश है

प्रश्न ३०—(१) क्या दर्शन मोहनीय कर्म का अभाव कारण और क्षायिक सम्यक्त्व कार्य, कारणानुविधायीनि-कार्याणि को माना ? (२) क्या गुरु कारण और ज्ञान कार्य, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ? (३) क्या बाई कारण और रोटी कार्य, कारणानु-विधायीनि कार्याणि को माना (४) क्या पैसा कारण और सुख कार्य, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ? (५) क्या कर्मों का अभाव कारण और मोक्ष कार्य, कारणानु-विधायीनि कार्याणि को माना ? (६) क्या गाली कारण और क्रोध आया कार्य, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७) क्या केवलज्ञान कारण और केवलज्ञानावरणीय का अभाव कार्य, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ? (८) क्या पैसा ना होना कारण और दुःख कार्य, 'कारणानुविधायीनि कार्याणि' को माना ? (९) क्या कर्म का उदय कारण और विकार होना कार्य, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ? (१०) क्या ज्ञेय वस्तु कारण और ज्ञान हुआ कार्य, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ? (११) क्या विकारी भाव कारण और कर्म बंध हुआ कार्य, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ? (१२) क्या शरीर ठीक रहे कारण और धर्म कार्य, कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ? इन १२ वाक्यों में कारण-कार्य को स्पष्ट करो ?

उत्तर—(प्रश्न ३१ से ३४ तक के अनुसार १२ प्रश्नों के उत्तर दो)।

प्रश्न ३१— 'दर्शन मोहनीय कर्म का अभाव कारण और क्षायिक सम्यक्त्व कार्य" कारणानुविधायीनि कार्याणि को माना ?

उत्तर—नहीं माना; क्योंकि त्रिकाली उपादान कारण श्रद्धा गुण है और क्षायिक सम्यकत्व कार्य है।

प्रश्न ३२—दर्शन मोहनीय कर्म का अभाव कारण और क्षायिक सम्यक्त्व कार्य ऐसा कहे तो क्या दोष आता है ?

उत्तर—दर्शन मोहनीय के अभाव को जीव का श्रद्धा गुण बनने का प्रसंग उपस्थित होवेगा, यह दोष आता है।

प्रश्न ३३—क्षायिक सम्यक्त्व का सच्चा कारण कौन रहा और कौन नहीं रहा ?

उत्तर—उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण ही सच्चा कारण है, क्योंकि पर तो कारण है ही नहीं। श्रद्धा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुण और अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण क्षयोपशम सम्यक्त्व भी सच्चा कारण नहीं है।

प्रश्न ३४—क्षायिक सम्यक्त्व का सच्चा कारण 'उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण' ही है ऐसा जानने से किन-किन कारणों से दृष्टि हट गई ?

उत्तर—(१) देव-गुरु, (२) दर्शन मोहनीय के अभाव, (३) श्रद्धा गुण, (४) अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण क्षयोपशम सम्यक्त्व, इन सब से दृष्टि हट गई। इसी प्रकार प्रश्न ३० में से बाकी के ११ वाक्यों का उत्तर दो।

प्रश्न ३५—भूतार्थ कारण और सम्यग्दर्शन कार्य, इसमें भूतार्थ कौन है ?

उत्तर—एकमात्र अनादि अनन्त अमूर्त ज्ञायक स्वभाव ही भूतार्थ है।

प्रश्न ३६—सम्यग्दर्शन कार्य के लिए अभूतार्थ कौन-कौन हैं ?

उत्तर—(१) देव, गुरु, शास्त्र अभूतार्थ हैं, (२) दर्शन मोहनीय का उपशमादि अभूतार्थ हैं, (३) शरीर, इन्द्रियाँ, नोकर्म अभूतार्थ हैं, (४) शुभ भाव अभूतार्थ है, (५) एक समय की अपूर्ण पूर्ण शुद्ध पर्याय अभूतार्थ है।

प्रश्न ३७—मोक्ष कार्य के लिए भूतार्थ कौन है ?

उत्तर—एकमात्र त्रिकाली ज्ञायक स्वभाव ही भूतार्थ है।

प्रश्न ३८—मोक्ष कार्य के लिए अभूतार्थ कारण क्या-क्या हैं ?

उत्तर—(१) वज्रवृषभनाराच संहनन अभूतार्थ है, (२) कर्मों का अभाव अभूतार्थ है, (३) शुभ भाव अभूतार्थ है, (४) चौथा काल अभूतार्थ है।

प्रश्न ३९—कार्य होने में कारण से क्या तात्पर्य है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—वास्तव में कार्य होने में उपादान कारण से तात्पर्य है, निमित्त कारण से तात्पर्य नहीं है।

प्रश्न ४०—शास्त्रों में फिर निमित्त कारणों की बात क्यों की है, जबकि कार्य का सच्चा कारण उपादान कारण ही है ?

उत्तर—जब-जब उपादान में कार्य होता है उस समय निमित्त होता ही है, ऐसो वस्तु स्थिति है। इसलिए कार्य के समय कौन निमित्त कारण है उसका ज्ञान कराने लिए शास्त्रों में निमित्त की बात समझाई है।

प्रश्न ४१—जब-जब कार्य होता है तब-तब निमित्त होता हो है—ऐसा शास्त्रों में कहाँ लिखा है ?

उत्तर—(१) "उपादान निज गुण जहाँ, तहाँ निमित्त पर होय। भेद ज्ञान परवान विधि, बिरला बूझे कोय॥" [बनारसी विलास] (२) प्रति समय के उत्पाद (कार्य) के समय उचित बहिरंग साधनों की (निमित्तों की) संनिधि (उपस्थिति) होती ही है "जो उचित बहिरंग साधनों की संनिधि के सदभाव में अनेक प्रकार की अनेक अवस्थाएँ करता है।"[प्रवचनसार गा० ९५ की टीका से] (३) "उस वस्तु में विद्यमान परिणमनरूप जो योग्यता वह अन्तरंग निमित्त (उपादान कारण) है और उस परिणमन का निश्चय काल (काल द्रव्य) वाह्य निमित्त है, ऐसा तत्वदर्शियों ने निश्चय किया है। [गौमट्टसार जीवकाण्ड गा० ५८० को टीका श्लोक]

प्रश्न ४२—कारण किसे कहते हैं ?

उत्तर—कार्य की उत्पादक सामग्री को कारण कहते हैं।

प्रश्न ४३—उत्पाद सामग्री के कितने भेद हैं ?

उत्तर—दो भेद हैं—उपादान और निमित्त।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न ४४—उपादान के सामने क्या है ?

उत्तर—निमित्त ।

प्रश्न ४५—निज शक्ति के सामने क्या है ?

उत्तर—पर योग ।

प्रश्न ४६—निश्चय के सामने क्या है ?

उत्तर—व्यवहार ।

प्रश्न ४७—उपादान कारण कितने प्रकार के हैं ?

उत्तर—तीन प्रकार के हैं । (१) त्रिकाली उपादान कारण, (२) अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण, (३) उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण ।

प्रश्न ४८—त्रिकाली उपादान कारण किसे कहते हैं ?

उत्तर—जो द्रव्य स्वयं कार्य रूप परिणमित हो, उसे उपादान कारण कहते हैं । जैसे कि—घड़े की उत्पत्ति में मिट्टी उसका त्रिकाली उपादान कारण है ।

प्रश्न ४९—अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण किसे कहते हैं ?

उत्तर—अनादिकाल से द्रव्य में जो पर्यायों का प्रवाह चला आ रहा है उसमें अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण है और अनन्तर उत्तर क्षणवर्ती पर्याय कार्य है । जैसे—मिट्टी का घड़ा होने में मिट्टी का पिण्ड वह घड़े की अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण है और घड़ा रूप कार्य वह पिण्ड की अनन्तर उत्तर क्षणवर्ती पर्याय है [यह पर्यायार्थिक नय से है]

प्रश्न ५०—'उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण' किसे कहते हैं ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—उस समय की पर्याय की योग्यता, वह क्षणिक उपादान कारण है और वही पर्याय कार्य है।

प्रश्न ५१—इन तीनों उपादान कारणों में से कार्य का सच्चा कारण कौन है और कौन नहीं है ?

उत्तर—उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण ही वास्तव में कार्य का सच्चा कारण है। त्रिकाली उपादान कारण, अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण और निमित्त कारण सच्चा कारण नहीं है।

प्रश्न ५२—कार्य का त्रिकाली उपादान कारण सच्चा कारण, क्यों नहीं है ?

उत्तर—कार्य एक समय का है, उसका कारण यदि अनादि अनन्त हो तो कार्य भी अनादि अनन्त होना चाहिए। इसलिए कार्य का सच्चा कारण उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण ही है, त्रिकाली उपादान कारण नहीं है।

प्रश्न ५३—कार्य का अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान-कारण सच्चा कारण क्यों नहीं है ?

उत्तर—कार्य स्वयं एक समय का सत् है। वह अनन्तरपूर्व पर्याय में से आवे, ऐसा नहीं है, क्योंकि अभाव में से भाव की उत्पत्ति नहीं होती है और पर्याय में से पर्याय नहीं आती। इसलिए कार्य का सच्चा कारण उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण ही है। अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण सच्चा कारण नहीं है। परन्तु अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण अभावरूप कारण कहा जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न ५४—कार्य को उपादान कारण की अपेक्षा, क्या कहते हैं ?

उत्तर—उपादेय कहते हैं।

प्रश्न ५५—उपादान-उपादेय सम्बन्ध किसमें होता है ?

उत्तर—उपादान-उपादेय सम्बन्ध एक ही पदार्थ में लागू होता है।

प्रश्न ५६—'उपादेय' शब्द कहाँ-कहाँ प्रयोग होता है ?

उत्तर—(१) कार्य होने में उपादान के कार्य को उपादेय कहते हैं। (२) त्रिकाली स्वभाव जो अनादि अनन्त है उसे आश्रय करने योग्य उपादेय कहते हैं, (३) मोक्ष मार्ग को एक देश प्रगट करने योग्य उपादेय कहते हैं, (४) मोक्ष को पूर्ण प्रगट करने योग्य उपादेय कहते हैं, (५) विकार को डंडा मारकर भगाने के लिए उपादेय कहते हैं। उपादान-उपादेय प्रकरण में जो कार्य होता है, उसे यहाँ उपादेय कहना है। इसलिए यहाँ पर हम कार्य को उपादेय कहेंगे। याद रखना—व्यवहारनय को उपादेय कहा, सो उपादेय का अर्थ 'जानना' समझना।

कुम्हार ने घड़ा बनाया—उपादान-उपादेय की सिद्धि

प्रश्न ५७—क्या कुम्हार त्रिकाली उपादान कारण और घड़ा बना उपादेय, यह त्रिकाली उपादान-उपादेय का ज्ञान ठीक है ?

उत्तर—बिल्कुल ठीक नहीं है; क्योंकि यहाँ पर मिट्टी त्रिकाली उपादान कारण है और घड़ा बना उपादेय है।

प्रश्न ५८—यदि कुम्हार को त्रिकाली उपादान कारण कहें और घड़े को उपादेय कहें, तो क्या दोष आता है ?

उत्तर—कुम्हार नष्ट होकर मिट्टी बन जावे तो कुम्हार त्रिकाली उपादान कारण और घड़ा उपादेय, ऐसा कहा जा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सकता है, लेकिन उपापान-उपादेय तत्स्वरूप में ही होता है जिनकी सत्ता-सत्व भिन्न-भिन्न हैं ऐसे पदार्थों में उपादान- उपादेय नहीं होता है।

प्रश्न ५९—मिट्टी त्रिकाली उपादान कारण और घड़ा बना उपादेय, इसको समझने से क्या लाभ हुआ ?

उत्तर—(१) कुम्हार, चाक, कीली, डंडा से घड़ा बना ऐसी खोटी बुद्धि का अभाव हो जाता है, (२) आहारवर्गणा के के स्कंध मिट्टी को छोड़कर बाकी वर्गणाओं से दृष्टि हट जाती है, (३) अब घड़ा बनने के लिए मात्र मिट्टी पर दृष्टि रही इतना लाभ हुआ।

प्रश्न ६०—मिट्टी त्रिकाली उपादान कारण है और घड़ा बना उपादेय है; ऐसा आपने कहा परन्तु हम तो कहते हैं मिट्टी तो पड़ी है अब घड़ा क्यों नहीं बनता ? हम कहते हैं कि यदि कुम्हार चाक, कीली, डंडा हो तो घड़ा बने, इसलिए मिट्टी त्रिकाली उपादान कारण और घड़ा बना उपादेय यह बात झूठी साबित होती है ?

उत्तर—अरे भाई, हमने मिट्टी को घड़े का त्रिकाली उपादान कारण कहा वह कुम्हार, चाक, कीली, डंडा आदि से पृथक् करने की अपेक्षा कहा है। वास्तव में मिट्टी भी घड़े का त्रिकाली उपादान कारण सच्चा कारण नहीं है।

प्रश्न ६१—मिट्टी को घड़े का सच्चा उपादान कारण नहीं है तो घड़े का उपादान कारण कौन रहा ?

उत्तर—मिट्टी में अनादि काल से पर्यायों का प्रवाह चला आ रहा है, उसमें अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण पिण्ड है और अनन्तर उत्तर क्षणवर्ती पर्याय 'घड़ा' उपादेय है। इसलिए पिण्ड अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षणिक उपादान कारण का व्यय वह घड़े का उपादान कारण है ।

प्रश्न ६२—पिण्ड अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण और घड़ा बना उपादेय, इसको जानने से क्या लाभ रहा ?

उत्तर—जैसे १० नम्बर पर घड़ा बना, तो यहाँ पर ९ नम्बर की पर्याय को अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण कहा, तो ९ नम्बर से पहले की और १० नम्बर के भविष्य की पर्याओं से दृष्टि हट गई । और जो निकाली उपादान कारण मिट्टी था वह भी व्यवहार कारण हो गया ।

अब मात्र अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण पिण्ड पर ही दृष्टि रही और अनन्तर उत्तर क्षणवर्ती पर्याय घड़ा 'उपादेय' रहा ।

प्रश्न ६३ –आपने अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक 'उपादान' कारण पिण्ड और अनन्तर उत्तर क्षणवर्ती पर्याय घड़ा 'उपादेय' कहा । परन्तु शास्त्रों का कहना है कि अभाव में से भाव की उत्पत्ति नहीं होती और पर्यायों में से पर्याय नहीं आती है, तब अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण पिण्ड और घड़ा बना उपादेय, यह बात झूठी सावित होती है ?

उत्तर—अरे भाई तुम्हारी बात ठीक है अभाव में से भाव की उत्पत्ति नहीं होती और पर्याय में से पर्याय नहीं आती है । लेकिन हमने तो कार्य से पहले कौनसी पर्याय होती है उसकी अपेक्षा पिण्ड को अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण अभाव रूप कारण कहा और घड़े को उपादेय कहा । परन्तु यह भी घड़े का सच्चा कारण नहीं है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न ६४—आपने अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण पिण्ड को भी घड़े का झूठा कारण बता दिया तो घड़े का सच्चा कारण कौन है ?

उत्तर—घड़ा बना "उस समय की पर्याय की योग्यता" क्षणिक उपादान कारण वह सच्चा उपादान कारण है और घड़ा बना उपादेय है।

प्रश्न ६५—अब घड़ा बना उपादेय इसके लिए कहाँ देखना रहा और कहाँ देखना नहीं रहा ?

उत्तर—घड़ा बना उपादेय उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण की तरफ देखना रहा। निमित्त कारणों की तरफ, त्रिकाली उपादान कारण की तरफ, और अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान करण पिण्ड की तरफ देखना नहीं रहा।

प्रश्न ६६—(१) मिट्टी त्रिकाली उपादान कारण और घड़ा बना उपादेय; (२) अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण पिण्ड और घड़ा बना उपादेय; (३) 'घड़ा बना' उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण और घड़ा बना 'उपादेय'। ऐसा आपने बताया परन्तु इतना लम्बा-लम्बा झगड़ा करने से क्या लाभ था, कह देते कार्य उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ही होता है ?

उत्तर—(१) त्रिकाली उपादान कारण को तो पर द्रव्यों से अलग करने की अपेक्षा बताना आवश्यक था; (२) अनन्तर-पूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण पिण्ड को भूत और भविष्य की पर्यायों से अलग करने तथा कार्य का अभाव रूप उपादान कारण बताना आवश्यक था; (३)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घड़े का सच्चा उपादान कारण 'उस समय की योग्यता' ही है। इसलिए तीनों कारणों का ज्ञान आवश्यक था इसलिए इतना लम्बा करके समझाया है। वैसे जगत में जितने कार्य होते हैं वह सब अपने-अपने उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ही होते हैं, उनका कोई दूसरा कारण-कार्य नहीं है ऐसा जानते ही करूँ करूँ की खोटी बुद्धि का अभाव और सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है।

प्रश्न ६७—(१) बाई ने रोटी बनाई; (२) मैंने शब्द बोला; (३) मैंने किताब उठाई; (४) बढ़ई ने अलमारी बनाई; (५) मैंने बिस्तरा बिछाया; (६) मैंने कपड़े पहने; (७) मैंने रुपया कमाया; (८) गुरु से ज्ञान होता है; (९) भगवान की दिव्यध्वनि है; (१०) जीव को कर्म चक्कर कटाता है; (११) केवलज्ञानावरणीय के अभाव से केवलज्ञान होता है; (१२) केवलज्ञान होने से केवलज्ञानावरणीय का अभाव हुआ; (१३) औपशमिक सम्यक्त्व होने से दर्शन मोहनीय का उपशम होता है; (१४) दर्शन मोहनीय के क्षयोपशम से क्षायोपशमिक सम्यक्त्व होता है; (१५) आँख से ज्ञान होता है; (१६) आनन्दगुण में से ज्ञान आता है; (१७) रोटी खाने से सुख प्राप्त होता है; (१८) मैंने झाड़ू दी; (१९) अन्तराय कर्म के क्षय से पूर्ण वीर्य प्रगट होता है; (२०) केवली के निकट क्षायिक सम्यक्त्व होता है; आदि बीस वाक्यों में तीनों उपादान कारण और उपादेय बताओ, प्रत्येक को जानने का क्या लाभ रहा और क्या नुकसान रहा, स्पष्ट खुलासा करो ?

उत्तर—इन सब प्रश्नों के उत्तर प्रश्न ६८ से प्रश्न ७९ तक के अनुसार दो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाई ने रोटी बनाई

प्रश्न ६८—'बाई ने रोटी बनाई' यह प्रश्न ६७ में पहला वाक्य है। बाई उपादान कारण, रोटी बनी उपादेय, क्या ठीक है ?

उत्तर—बिल्कुल ठीक नहीं; क्योंकि आहार वर्गणा के स्कंध आटा बिकाली उपादान कारण है और रोटी बनी उपादेय है।

प्रश्न ६९—यदि कोई चतुर, बाई को उपादान कारण और रोटी उपादेय, ऐसा ही माने, तो क्या दोष आता है ?

उत्तर–बाई नष्ट होकर आहारवर्गणा के स्कंध आटा बन जावे, तो ऐसा कहा जा सकता है। लेकिन उपादान-उपादेय एक द्रव्य का उसकी पर्याय में होता है, भिन्न-भिन्न पदार्थों में नहीं। इसलिए बाई उपादान कारण रोटी उपादेय ऐसी मान्यता वाले ने अभिप्राय में बाई का नाश किया।

प्रश्न ७०—आहारवर्गणा के स्कंध आटा बिकाली उपादान कारण और रोटी बनी उपादेय इसको समझने से क्या लाभ रहा ?

उत्तर—आटारूप आहारवर्गणा को छोड़कर, बाकी अन्य वर्गणाओं से, बाई, चकला, बेलन, आग, तवा से रोटी बनती है, ऐसी खोटी मान्यताओं का अभाव हो गया।

प्रश्न ७१—आटा तो पड़ा है अब रोटी क्यों नहीं बनती ? हम कह सकते है कि बाई, चकला, बेलन, तवा, आग हो तो रोटी बने। आप कहते हो इनसे सम्बन्ध नहीं, मात्र आटा उपादान कारण और रोटी उपादेय, यह बात कहाँ रही ?

उत्तर—अरे भाई हमने रोटी का उपादान कर्ता आहारवर्गणा के स्कंध आटे को कहा, यह तो चकला-बेलन-बाई आदि अत्यन्त भिन्न पदार्थों से पृथक करने की अपेक्षा कहा है। वास्तव में आटा रोटी का सच्चा कर्ता नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न ७२—आटा रोटी का सच्चा कर्ता नहीं है तो रोटी का सच्चा कर्ता कौन है ?

उत्तर—आटे में अनादि से पर्यायों का प्रवाह चला आ रहा है उसमें अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई है और अनन्तर उत्तर क्षणवर्ती पर्याय रोटी। उपादेय है। इसलिए अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय लोई का व्यय, वह क्षणिक उपादान कारण है और रोटी उपादेय है।

प्रश्न ७३—अनादि से द्रव्य में पर्यायों का प्रवाह क्यों चला आ रहा है ?

उत्तर—प्रत्येक द्रव्य अनादि अनन्त कायम रहता हुआ एक पर्याय का व्यय और दूसरी पर्याय का उत्पाद स्वयं अपने परिणमन स्वभाव के कारण करता है, करता रहा है और करता रहेगा ऐसा वस्तु स्वरूप है। इसी से द्रव्य में पर्यायों का प्रवाह चला आ रहा है।

प्रश्न ७४—अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई और रोटी उपादेय इसको जानने से क्या लाभ रहा ?

उत्तर—(१) भूत-भविष्य की पर्यायों से दृष्टि हट गई; (२) पहले जो त्रिकाली उपादान कारण आटा को सच्चा कारण कहा था, वह व्यवहार कारण हो गया; (३) अब रोटी के लिए मात्र अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई की ओर देखना रहा।

प्रश्न ७५—अभाव में से भाव की उत्पत्ति नहीं होती है और पर्याय में से पर्याय नहीं आती, ऐसा आचार्यों ने कहा है। तब अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई और अनन्तर उत्तर क्षणवर्ती पर्याय रोटी बनी उपादेय, यह बात झूठी साबित होती है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—अरे भाई तुम्हारी बात ठीक है, अभाव में से भाव की उत्पत्ति नहीं होती है और पर्याय में से पर्याय नहीं आती है यह जो आचार्यों ने कहा है बिल्कुल सत्य है। परन्तु हमने अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती क्षणिक उपादान कारण लोई को अभाव रूप कारण कहा है। यह भी रोटी का सच्चा कारण नहीं है; क्योंकि अभाव में से भाव की उत्पत्ति नहीं होती है। याद रखना चाहिए—अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण, कार्य का जनक नहीं है, लेकिन काल सूचक है।

प्रश्न ७६—आपने अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई को भी रोटी का झूठा कारण बता दिया, तो रोटी का सच्चा कारण कौन है ?

उत्तर—रोटी बनी—उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण सच्चा कारण है और रोटी बनी उपादेय है।

प्रश्न ७७—रोटी बनी उपादेय. इसके लिए कहाँ देखना रहा और कहाँ देखना नहीं रहा ?

उत्तर—रोटी बनी उपादेय उसका सच्चा कारण उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण है, इसकी ओर देखना रहा। निमित्त कारणों की तरफ, त्रिकाली उपादान कारण आटा की तरफ, अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण लोई को ओर देखना नहीं रहा।

प्रश्न ७८—(१) आटा त्रिकाली उपादान कारण, रोटी बनी उपादेय; (२) लोई अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण, रोटी बनी उपादेय; (३) रोटी बनी उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण, रोटी बनी उपादेय। ऐसा आपने बताया,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परन्तु इतना लम्बा-लम्बा झगड़ा करने की क्या आवश्यकता थी–एक मात्र कह देते, कार्य उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ही होता है ?

उत्तर—कार्य उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ही होता है दूसरे कारणों से नहीं। परन्तु अज्ञानी को अनादि से निमित्तों आदि से होता है ऐसी खोटी बुद्धि का अभाव करने के लिए, इतना लम्बा-लम्बा करके समझाया है।

प्रश्न ७९—कार्य उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ही होता है इसको जानने का क्या फल है ?

उत्तर—(१) करूँ करूँ को खोटी बुद्धि का अभाव होना, (२) सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र की प्राप्ति होना, (३) क्रम से वृद्धि करके, पूर्णता करके, मोक्ष लक्ष्मी का नाथ बनना, "उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से कार्य हुआ" यह जानने का फल है।

प्रश्न ६७ में बाकी १९ वाक्यों के इसी प्रकार तीनों प्रकार के उपादान उपादेय लगाओ और आपस में चर्चा करो ताकि भेद विज्ञान की प्राप्ति हो।

प्रश्न ८०—तीनों कारणों में से कौनसा कारण हो, तब कार्य की उत्पत्ति नियम से होती है ?

उत्तर –वास्तव में कार्य की उत्पत्ति उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण के समय नियम से होती है वहाँ पर बाकी के दोनों उपादान कारण और निमित्त कारण होते ही हैं किसी को किसी की इन्तजार नहीं करनी पड़ती है।

प्रश्न ८१—पहले कारण है या कार्य है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—कारण और कार्य का एक ही समय है, फिर यह प्रश्न पहले कारण या कार्य, झूठा है।

प्रश्न ८२—जब सब कार्य उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ही होते हैं, तो लोग दूसरे कारणों की चर्चा क्यों करते हैं ?

उत्तर—जैसे किसी का माल चोरी करने से डन्डे पड़ते हैं, जेल जाना पड़ता है; वैसे ही जो कार्य में दूसरे कारणों की बात में पागल हो रहे हैं उन्हें चारों गतियों में घूम कर निगोद में जाना अच्छा लगता है इसलिए दूसरे कारणों की चर्चा करते हैं।

प्रश्न ८३—जो व्यवहार कारणों को सच्चा कारण मानते हैं उन जीवों को भगवान ने किन-किन नामों से शास्त्रों में सम्बोधन किया है ?

उत्तर—(१) जो व्यवहार कारणों को सच्चा कारण मानते हैं "उनका सुलटना दुर्निवार है और यह उनका मोह-अज्ञान-अंधकार है। [समयसार कलश ५५] (२) वह पद-पद पर धोखा खाता है। [प्रवचनसार गा० ५५] (३) वह भगवान की वाणी सुनने लायक नहीं है। [पुरुषार्थ सिद्धि उपाय गा० ६] (४) वह मिथ्यादृष्टि है [समयसार ३२४ से ३२७ के हैडिंग में] (५) उसका फल संसार है [समयसार गा० ११ के भावार्थ में] (६) एक नय का अवलम्बन लेने वाला उपदेश के योग्य नहीं। [नियमसार गा० १८ की टीका से] (७) उसके सब धर्म के अंग मिथ्यात्व भाव को प्राप्त होते हैं और अकार्यकारी अर्थात् अनर्थकारी कहा है। [मोक्षमार्ग प्रकाशक पृष्ठ २१३] (८) हरामजादीपना कहा है [आत्मवलोकन पृष्ठ १४३]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न ८४—उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से कार्य की उत्पत्ति होती है क्या यह निरपेक्ष है ?

उत्तर—हाँ, वस्तु स्वयं पर की अपेक्षा नहीं रखती, इसलिए निरपेक्ष है और अपनी अपेक्षा रखती है इसलिए सापेक्ष है। इसलिए सबसे प्रथम पात्र जीवों को निरपेक्ष सिद्धि करनी चाहिये। फिर सापेक्षता की बात आती है।

प्रश्न ८५—क्या निरपेक्षता सिद्धि किये बिना सापेक्षता नहीं होती है ?

उत्तर—नहीं होती है; क्योंकि :— (१) निरपेक्षता के बिना सापेक्षता का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (२) अभेद के बिना भेद का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (३) निश्चय के बिना, व्यवहार का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (४) उपादान के बिना, निमित्त का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (५) भूतार्थ के बिना, अभूतार्थ का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (६) यथार्थ के बिना, उपचार का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (७) स्व के बिना, पर का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (८) स्वाश्रित के बिना, पराश्रित का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (९) मुख्य के बिना, गौण का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (१०) द्रव्यार्थिक के बिना, पर्यायार्थिक का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (११) अहेतुक के बिना, सहेतुक का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (१२) नित्य के बिना, अनित्य का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (१३) तत् के बिना, अतत् का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (१४) अस्ति के बिना, नास्ति का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, (१५) एक के बिना, अनेक का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है। (१६) स्वद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के बिना, परद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योग्यता

प्रश्न ८६—योग्यता किसे कहते हैं ?

उत्तर—समर्थ उपादान शक्ति का नाम ही योग्यता है।

प्रश्न ८७—योग्यता के पर्यायवाची शब्द क्या हैं ?

उत्तर—समर्थ उपादान शक्ति कहो, भवितव्यता कहो, योग्यता कहो, एक ही बात है।

प्रश्न ८८—भवितव्यता अर्थात् योग्यता का व्युत्पत्ति अर्थ क्या है ?

उत्तर—"भवितु योग्य भवितव्यम् तस्य भावः भवितव्यता" जो होने योग्य हो उसे भवितव्य कहते हैं और उसका भाव भवितव्यता कहलाती है जिसे हम योग्यता कहते हैं उसी का दूसरा नाम भवितव्यता है।

प्रश्न ८९—योग्यता को जानने से क्या-क्या लाभ है ?

उत्तर—(१) प्रत्येक द्रव्य में जो-जो परिणमन होता है वह "उस समय की योग्यता" अनुसार ही हुआ है, हो रहा है, होता रहेगा। उसमें किसी दूसरे का जरा भी हस्तक्षेप नहीं है। (२) ऐसा जानने से पर का मैं कुछ करूँ, या पर मेरा कुछ करे ऐसा प्रश्न उपस्थित नहीं होता है। (३) क्रमबद्ध पर्याय की सिद्ध होती है। (४) करूँ करूँ की खोटी बुद्धि का अभाव होते ही सम्यग्दर्शनादि की प्राप्ति होकर क्रम से निर्वाण की प्राप्ति होती है।

प्रश्न ९०—"कार्य योग्यतानुसार ही होता है" इसके लिए कुछ शास्त्र के प्रमाण दीजिए ?

उत्तर—(१) वैभाविक परिणमन निमित्त सापेक्ष होकर भी वह अपनी उस काल में प्रगट होने वाली योग्यतानुसार ही है। अपनी योग्यतानुसार जीव संसारी है और अपनी योग्यता-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नुसार ही मुक्त होता है; (२) परिणमन का साधारण काल द्रव्य होते हुए भी द्रव्य अपने उत्पाद—व्यय स्वभाव के कारण ही परिणमन करता है। काल उसका कुछ प्रेरक नहीं है; (३) तत्वतः प्रत्येक अपनी योग्यतानुसार ही परिण मन होता है। [पंचाध्यायी गा० ६१ से ७० तक पृष्ठ १६३ पं० फूलचन्द्र जी] (४) वस्तु की एकरूप स्थिति नहीं रहती क्योंकि यह पर्याय का स्वभाव है। [समयसार कलश २११] (५) एक द्रव्य में अतीत (भूत) अनागत (भविष्य) और गाथा में आए हुए "अपि" शब्द से वर्तमान पर्यायरूप जितनी अर्थ पर्याय और व्यंजन पर्याय हैं, 'तत्प्रमाण' वह द्रव्य होता है। [धवल पु० १ पृष्ठ ३८६] (६) तीन काल के जितने समय हैं उतनी उतनी प्रत्येक द्रव्य के प्रत्येक गुण में उतनी ही पर्यायें होतो हैं। उसे जरा भी इधर-उधर करने को जिनेन्द्र भगवान भी समर्थ नहीं है। (७) प्रत्येक पर्याय, पूर्व पर्याय का अभाव करके आई, उसे 'विकार्य' कहा है; (८) नई उत्पन्न हुई इस अपेक्षा 'निर्वर्त्य' कहा है; (९) थी तो आई, इस अपेक्षा 'प्राप्य' कहा है। [समयसार गा० ७६ से ७८ तक]

यह योग्यता के लिए प्रमाण है।

प्रश्न ९१—जब आप लोगों पर कोई उत्तर नहीं बनता, तो आप कह देते हो, कि यह "उस समय की योग्यता से" है, तो क्या 'योग्यता' कहकर आप धोखा नहीं देते—ऐसा प्रश्न-कार का प्रश्न है ?

उत्तर—(१) दो परमाणु हैं, एक परमाणु की वर्ण गुण की पर्याय सौ फीसदी सफेद है और दूसरे परमाणु की हजार गुणा सफेद है। तो आप बतलाइये, उसका क्या कारण है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्नकार, चक्कर में पड़ गया और सोचने लगा, परमाणु तो शुद्ध है, उसमें दूसरा कारण नहीं कहा जा सकता है। तब उत्तर दिया, कि उसका कारण उस समय की योग्यता ही है (२) आपके सामने सब पुद्गल स्कंध हैं, किसी की रंग गुण की पर्याय काली है, हरी है, पीली है, नीली है। तो प्रश्न होता है ऐसा क्यों है ? तो आपको कहना पड़ेगा "उस समय की योग्यता" ही कारण है। (३) विश्व में जीव अनन्त हैं, सब के भाव अलग-अलग क्यों हैं ? आपको कहना पड़ेगा— उस समय की योग्यता ही कारण है। (४) मास्टर ५० लड़कों को पढ़ाता है सबको एकसा ज्ञान क्यों नहीं होता ? तो आपको कहना पड़ेगा, "उस समय की योग्यता" ही कारण है। (५) सामने लोकालोक है। लोकालोक का ज्ञान केवली को होता है, आपको क्यों नहीं होता तो कहना पड़ेगा, उस समय की योग्यता ही कारण है। (६) भगवान की दिव्यध्वनि खिरती है, क्या सबको एकसा ज्ञान होता है ? आप कहेंगे नहीं। तो हम कहते हैं ऐसा क्यों है ? आप कहोगे "उस समय की योग्यता" ही कारण है।

याद रक्खो:—वास्तव में कोई भी कार्य होने में या बिगड़ने में "उसकी योग्यता ही" साक्षात् साधक है।

प्रश्न ८२—आचार्यों ने धवल श्लोक १८९ में क्या बताया है ?

उत्तर—(१) द्रव्यार्थिकनय से द्रव्य में तीनों काल की पर्यायों रूप अपने-अपने परिणमन करने की योग्यता रखते हैं। (२) पर्यायार्थिकनय से द्रव्य में जो वर्तमान पर्याय होती है वह उसी रूप से परिणमन की योग्यता रखती है। (३) इससे यह सिद्ध हुआ वर्तमान पर्याय, भूत या भविष्य में परिणमें ऐसा कभी भी नहीं होता है। भूतकाल की कोई पर्याय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में या उसके आगे पीछे काल में होने की योग्यता नहीं रखती है। भविष्य की पर्याय उससे पहले हो जावे या पीछे हो जावे, ऐसी योग्यता नहीं रखती है। इसलिए किसी भी द्रव्य की किसी भी पर्याय को अनिश्चित मानना, जिनमत से बाहर है। (४) यह जीव इतना काल बीतने पर मोक्ष जायगा, ऐसी नोंध केवलज्ञान में है। [समयसार कलश टीका कलश नं० ४ पृष्ठ ५] (५ केवलज्ञान एक ही समय में सर्व आत्म प्रदेशों से समस्त द्रव्य-क्षेत्र-काल भाव को जानता है। [प्रवचनसार गा० ४७ का रहस्य]

प्रश्न ८३—योग्यता से क्या सिद्ध हुआ ?

उत्तर—(१) बम पड़ना, (२) बहुत से मनुष्यों का एक साथ मरना, (३) एक शरीर में रहने वाले निगोदिया जीवों का सबका एक साथ मरण होना, (४) हवाई जहाज का टूटना (५) राकेट ऊपर जाना, (६) नदी का प्रवाह बदलना, (७) बाँध का बनाना, (८) कच्चे फल को जल्दी पकाना, (९) पक्के फल को लम्बे काल तक कायम रखना, (१०) अकाल मरण (११) कर्म का संक्रमण, उदीरणा, उत्कर्षण अपकर्षण, स्थिति काण्ड. अनुभाग काण्ड आदि सब काम अपने-अपने कार्य काल में ही होते हैं क्योंकि प्रत्येक द्रव्य में जितने जितने गुण हैं उस प्रत्येक गुण में तीन काल के जितने समय हैं, उतनी उतनी पर्यायें हैं। वह निश्चित और क्रमबद्ध है। जरा भी आगे पीछे नहीं हो सकती है, ऐसी 'बात योग्यता' से सिद्ध होती है।

प्रश्न ८४—योग्यता क्या है ?

उत्तर—भवितव्यता अथवा नियति, 'उस समय की योग्यता है' वह क्षणिक-उपादान कारण है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपादान-उपादेय

प्रश्न ९५—क्षायिक सम्यग्दर्शन हुआ, उपादान-उपादेय बताओ ?

उत्तर—(१) जीव का श्रद्धा गुण त्रिकाली उपादान कारण, क्षायिक सम्यक्त्व हुआ उपादेय; (२) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण. क्षायिक सम्यक्त्व, उपादेय; (३) क्षायिक सम्यक्त्व, उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण, क्षायिक सम्यक्त्व उपादेय।

प्रश्न ९६—केवल दर्शन हुआ इसमें उपादान-उपादेय बताओ ?

उत्तर—(१) आत्मा का दर्शन गुण त्रिकाली उपादान कारण, केवलदर्शन उपादेय; (२) अचक्षुदर्शन अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण, केवलदर्शन अनन्तर उत्तर-क्षणवर्ती पर्याय उपादेय; (३) केवलदर्शन उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान-कारण, केवलदर्शन उपादेय।

प्रश्न ९७-अन्तराय कर्म का अभाव में उपादान-उपादेय बताओ ?

उत्तर—(१) कार्माण वर्गणा त्रिकाली उपादान कारण, अन्तराय द्रव्य कर्म का अभाव उपादेय, (२) अन्तराय कर्म का क्षयोपशम अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण, अन्तराय कर्म का अभाव अनन्तर उत्तर क्षणवर्ती पर्याय उपादेय, (३) अन्तराय कर्म का अभाव उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण, अन्तराय कर्म का अभाव उपादेय।

प्रश्न ९८—यथाख्यात चारित्र में उपादान-उपादेय लगाओ ?

उत्तर—(१) जीव का चारित्र गुण त्रिकाली उपादान कारण. यथाख्यात चारित्र उपादेय; (२) सकल चारित्र अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण, यथाख्यात चारित्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनन्तर उत्तर क्षणवर्ती पर्याय उपादेय; (३) यथाख्यात चारित्र उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण, यथाख्यात चारित्र उपादेय।

प्रश्न ९९—(१) औपशमिक सम्यक्त्व हुआ, (२) केवलज्ञान हुआ, (३) भगवान की दिव्यध्वनि, (४) मोहनीय कर्म का अभाव; इनमें तीनों उपादान-उपादेय लगाओ ?

उत्तर—चारों प्रश्नों का उत्तर ९८ के अनुसार उत्तर दो।

प्रश्न १००—अनन्तरपूर्व शब्द क्या सूचित करता है ?

उत्तर—जो कार्य हुआ है, उससे पहले तत्काल की पर्याय को अनन्तरपूर्व शब्द सूचित करता है जैसे नं० १० पर घड़ा बना तो ९ नम्बर की पर्याय को "अनन्तरपूर्व" कहा जाता है।

प्रश्न १०१—काल प्रत्यासति का क्या अर्थ है ?

उत्तर—उपादान और निमित्त दोनों के एक समय को 'काल प्रत्यासति कहते हैं।

निमित्त कारण

प्रश्न १०२—निमित्त कारण किसे कहते हैं ?

उत्तर—जो पदार्थ स्वयं स्वतः कार्यरूप परिणमित ना हो, परन्तु कार्य की उत्पत्ति में अनुकूल होने का जिस पर आरोप आ सके उस पदार्थ को निमित्त कारण कहते हैं। जैसे घड़े की उत्पत्ति में कुम्भकार, दंड, चक, आदि निमित्त कारण हैं।

प्रश्न १०३—क्या निमित्त सच्चा कारण है?

उत्तर—निमित्त सच्चा कारण नहीं है। वह अकारणवत्-अहेतु-वत् है; क्योंकि वह उपचार मात्र अथवा व्यवहार कारण है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १०४—निमित्त के पर्यायवाची नाम बताओ ?

उत्तर—निमित्तमात्र, असर, प्रभाव, बलाधान, प्रेरक, सहायक इन सब शब्दों का अर्थ निमित्तमात्र है ।

प्रश्न १०५—आपने जो निमित्त के पर्यायवाची नाम बताइये, यह किस शास्त्र में आये हैं ?

उत्तर—श्री तत्वार्थसार तीसरा अधिकार श्लोक नं० ४३ ।

प्रश्न १०६—निमित्त कारणों के कितने भेद हैं ?

उत्तर—दो भेद हैं (१) प्रेरक निमित्त (२) उदासीन निमित्त ।

प्रश्न १०७—प्रेरक निमित्त किसे कहते है ?

उत्तर—(१) गमन क्रिया वाले (मात्र क्षेत्र से क्षेत्रान्तर ही लेना है) जीव. पुद्गल, (२) इच्छादि (क्रोध, मान, माया, लोभ) वाला जीव प्रेरक निमित्त कहलाते हैं ।

प्रश्न १०८—क्या प्रेरक निमित्त उपादान में कुछ करता है ?

उत्तर—बिलकुल नहीं, प्रेरक निमित्त जबरन उपादान में कार्य कर देते हैं या प्रभाव आदि डाल सकते हैं ऐसा नहीं समझना; क्योंकि दोनों पदार्थों का (उपादान-निमित्त का) एक दूसरे में अभाव है । प्रेरक निमित्त उपादान को प्रेरणा नहीं करता ।

प्रश्न १०९—उदासीन निमित्त किसे कहते हैं ?

उत्तर—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश और कालादि निष्क्रिय (गमन क्रिया रहित) या राग रहित द्रव्यों को उदासीन निमित्त कहते हैं ।

प्रश्न ११०—जब निमित्त उपादान में कुछ करता ही नहीं है तब प्रेरक निमित्त और उदासीन निमित्त ऐसा भेद क्यों डाला ?

उत्तर—निमित्तों के उपभेद बताने के लिये किन्हीं निमित्तों को प्रेरक और किन्हीं को उदासीन कहा जाता है । किन्तु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्व प्रकार के निमित्त उपादान के लिए तो "धर्मास्ति-कायवत् उदासीन ही हैं।" निमित्त के भिन्न-भिन्न प्रकारों का ज्ञान कराने के लिए ही उसके यह दो भेद किये गये हैं।

प्रश्न १११—सर्व प्रकार के निमित्त धर्मास्तिकायवत् ही हैं ऐसा किस शास्त्र में कहा गया है ?

उत्तर—"नाज्ञो विज्ञत्वमायाति, विज्ञो नाज्ञत्वमृच्छति।
निमित्तमात्र मन्यस्तु, गते धर्मास्ति कायवत्"॥३५॥

अर्थ :—अज्ञानी विशेष प्रकार के ज्ञानभाव को प्राप्त नहीं करता और विशेष ज्ञानी अज्ञानपने को प्राप्त नहीं करता। गति को जिस प्रकार धर्मास्तिकाय निमित्त है; उसी प्रकार अन्य तो निमित्तमात्र है। [इष्टोपदेश श्लोक ३५] (२) चैतन्य स्वभाव के कारण जानने और देखने की क्रिया का जीव ही कर्ता है। जहाँ जीव है वहाँ चार अरूपी अचेतन द्रव्य भी हैं तथापि वे जिस प्रकार जानने और देखने की क्रिया के कर्ता नहीं है उसी प्रकार जीव के सम्बन्ध में रहे हुए कर्म, नो कर्म रूप पुद्गल भी उस क्रिया के कर्ता नहीं है। [पंचास्तिकाय गा० १२२ की टीका से]

प्रश्न ११२—'कुम्हार ने घड़ा बनाया' इस पर निमित्त की परिभाषा लगाओ ?

उत्तर— कुम्हार स्वयं स्वतः घड़े रूप परिणमित ना हो परन्तु घड़े की उत्पत्ति में अनुकूल होने का जिस पर (कुम्हार पर) आरोप आ सके, उस पदार्थ को (कुम्हार को) निमित्त कारण कहते हैं।

प्रश्न ११३—जीव ने कर्म बाँधा, इस पर निमित्त की परिभाषा लगाओ ?

उत्तर—जीव स्वयं स्वतः कर्म बंध रूप ना परिणमें, परन्तु कर्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंध की अवस्था में अनुकूल होने का जिस पर (अज्ञानी जीव पर) आरोप आ सके, उस पदार्थ को (अज्ञानी जीव को) निमित्त कारण कहते हैं।

प्रश्न ११४—(१) स्त्री ने रोटी बनाई। (२) दर्शनमोहनीय ने क्षय से क्षायिक सम्यक्त्व हुआ; (३) केवलज्ञान से केवलज्ञानावरणीय का अभाव हुआ; (४) मैंने बिस्तरा उठाया; (५)दर्जी ने कपड़े सिले; (६) दिव्यध्वनि सुनने से सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति हुई; (७) ज्ञेय से ज्ञान होता है; (८) मैंने मकान बनाया; (९) धर्म द्रव्य मुझे चलाता है; (१०) मुझे आकाश जगह देता है; (११) मैंने किताब उठाई; (१२) कालद्रव्य ने मुझे परिणमाया; (१३) ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से ज्ञान का उघाड़ होता है; आदि वाक्यों में निमित्त की परिभाषा लगाकर बताओ ?

उत्तर—(१) स्त्री स्वयं स्वतः रोटी रूप परिणमित ना हो, परन्तु रोटी की उत्पत्ति में अनुकूल होने का जिस पर (स्त्री पर) आरोप आ सके, उस पदार्थ को (स्त्री को) निमित्त कारण कहते हैं। इसी प्रकार बाकी के १२ वाक्यों पर प्रश्न १११ के अनुसार लगाकर बताओ।

प्रश्न ११५—"गुरु उपदेश निमित्त बिन, उपादान बल हीन।
ज्यों नर दूजे पाँव बिन, चलवे को आधीन॥"

अर्थ—गुरु के उपदेश रूप निमित्त बिना उपादान (शिष्यादि) बलहीन हैं; (क्योंकि) दूसरे पाँव के बिना मनुष्य चल सकता है ? [यह मान्यता बराबर नहीं है ? ऐसा शिष्य का प्रश्न है।]

उत्तर—यह मान्यता बराबर नहीं है—ऐसा बतलाने के लिये श्री गुरु दोहे से उत्तर देते हैं कि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"ज्ञान नैन किरिया चरन, दोऊ शिव मग धार ।
उपादान निहचै जहाँ, तहाँ निमित्त व्योहार ।।"

अर्थ—सम्यग्दर्शन-ज्ञानरूप नेत्र और स्थिरता रूप चरण (लीनता रूप क्रिया) यह दोनों मिलकर मोक्ष मार्ग जानो। जहाँ उपादान रूप निश्चयकारण होता है वहाँ निमित्त रूप व्यवहार कारण होता ही है।

भावार्थ—उपादान तो निश्चय अर्थात् सच्चा कारण है; निमित्त तो मात्र व्यवहार अर्थात् उपचार कारण है, सच्चा कारण नहीं है; इसीलिये तो उसे अकारणवत् (अहेतुवत्) कहा है। उसे उपचार (आरोपित) कारण इसलिये कहा है कि वह उपादान का कुछ कार्य करता-कराता नहीं है; तथापि कार्य के समय उस पर अनुकूलता का आरोप आता है; इस कारण उसे उपचार मात्र कहा है। [सम्यग्ज्ञान और चारित्र रूप लीनता को मोक्षमार्ग जानो—ऐसा कहा उसमें शरीराश्रित उपदेश, उपवासादिक क्रिया और शुभरागरूप व्यवहार को मोक्षमार्ग न जानो यह बात आ जाती है।]

"उपादान निज गुण जहाँ तहँ निमित्त पर होय ।
भेदज्ञान परवान विधि, बिरला बूझे कोय ।।"

अर्थ—जहाँ निज शक्ति रूप उपादान हो वहाँ पर निमित्त होता ही है। उसके द्वारा भेदज्ञान प्रमाण की विधि (व्यवस्था) है। यह सिद्धान्त कोई विरले ही समझते हैं।

भावार्थ—जहाँ उपादान की योग्यता हो वहाँ नियम से निमित्त होता ही है। निमित्त की प्रतीक्षा करनी पड़े ऐसा नहीं होता; और निमित्त को हम जुटा सकते हैं—ऐसा भी नहीं होता। निमित्त की प्रतीक्षा करनी पड़ती है या उसे मैं ला सकता हूँ—ऐसी मान्यता पर पदार्थ में अभेद बुद्धि अर्थात्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अज्ञान सूचक है। उपादान और निमित्त दोनों असहायरूप स्वतंत्र हैं यह उनकी मर्यादा है।

"उपादान बल जहँ तहाँ, नहिं निमित्त को दाव।
एक चक्र सौं रथ चलै, रवि को यहै स्वभाव ॥"

अर्थ—जहाँ देखो वहाँ उपादान का ही बल है; (निमित्त होता है) परन्तु निमित्त का (कार्य करने में) कोई भी दाव (बल) नहीं है। एक चक्र से रवि का (सूर्य का) रथ चलता है वह उसका स्वभाव है। [उसी प्रकार प्रत्येक कार्य उपादान की योग्यता से (सामर्थ्य से) ही होता है।]

प्रश्न ११६—"हौ जानै था एक ही, उपादान सों काज।
थकै सहाई पौन बिन, पानी माँहि जहाज ॥"

अर्थ—अकेले उपादान से कार्य होता हो तो पवन की सहायता के बिना जहाज पानी में क्यों नहीं चलता ?

उत्तर—"सधै वस्तु असहाय जहँ, तहँ निमित्त है कौन।
ज्यों जहाज परवाह में, तिरै सहज बिन पौन ॥"

अर्थ—जहाँ प्रत्येक वस्तु स्वतंत्र रूप से अपनी अवस्था को (कार्य को) प्राप्त करता है वहाँ निमित्त कौन है ? जिस प्रकार जहाज प्रवाह में सहज ही बिना पवन के तरता है।

भावार्थ—जीव और पुद्गल द्रव्य शुद्ध या अशुद्ध अवस्था में स्वतंत्र रूप से ही अपने में परिणमन करते हैं। अज्ञानी जीव भी स्वतंत्र रूप से निमित्ताधीन होकर परिणमन करता है; कोई निमित्त उसे आधीन नहीं कर सकता।

"उपादान विधि निर्वचन, है निमित्त उपदेश।
बसे जु जैसे देश में करै सु तैसे भेष ॥"

अर्थ—उपादान का कथन निर्वचन है; (अर्थात् एक 'योग्यता' द्वारा ही होता है) उपादान अपनी योग्यता से अनेक प्रकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से परिणमन करता है; तब उपस्थित निमित्त पर भिन्न-भिन्न कारणपने का आरोप (भेष) आता है; उपादान की विधि निर्वचन होने से निमित्त द्वारा यह कार्य हुआ—ऐसा व्यवहार से कहा जाता है।

भावार्थ—उपादान जब जैसा कार्य करता है तब वैसे कारणपने का आरोप (भेष) निमित्त पर आता है; जैसे कि—कोई वज्रकायवान मनुष्य सातवें नरकगति के योग्य मलीन भाव धारण करता है, तो वज्रकाय पर नरक के कारणपने का आरोप आता है; और यदि जीव मोक्ष के योग्य निर्मल भाव करता है तो उस वज्रकाय पर मोक्षकारणपने का आरोप आता है। इस प्रकार उपादान के कार्य अनुसार निमित्त में कारणपने का भिन्न-भिन्न आरोप किया जाता है। इससे ऐसा सिद्ध होता है कि निमित्त से कार्य नहीं होता परन्तु कथन होता है; इसलिये उपादान सच्चा कारण है और निमित्त आरोपित कारण है। वास्तव में तो निमित्त ऐसा प्रसिद्ध करता है कि—नैमित्तिक स्वतंत्र अपने कारण से परिणमन कर रहा है, तो उपस्थित दूसरी अनुकूल वस्तु को निमित्त कहा जाता है।

निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध

प्रश्न ११७—निमित्त-नैमित्तिक संबंध किसे कहते हैं ?

उत्तर—जब उपादान स्वयं-स्वतः कार्यरूप परिणमित होता है तब भाव रूप (अस्तिरूप) या अभावरूप (नास्तिरूप) किस उचित (योग्य) निमित्तकारण का उसके साथ सम्बन्ध है, यह बतलाने के लिये उस कार्य को नैमित्तिक कहते हैं। इस प्रकार भिन्न-भिन्न पदार्थों के सम्बन्ध को निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न ११८—निमित्त-नमित्तिक संबंध किसमें होता है ?

उत्तर—निमित्त-नैमितिक सम्बन्ध दो स्वतंत्र पर्यायों के बीच में होता है ।

प्रश्न ११९—क्या निमित्त-नैमित्तिक संबंध परतंत्रता का सूचक है ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं; क्योंकि निमित्त-नैमित्तिक संबंध परस्पर स्वतंत्रता का सूचक है परतन्त्रता का सूचक नहीं है । परन्तु नैमित्तिक के साथ कौन निमित्त रूप पदार्थ है उसका वह ज्ञान कराता है ।

प्रश्न १२०—कार्य को निमित्त की अपेक्षा क्या कहते हैं ?

उत्तर—नैमित्तिक कहते हैं ।

प्रश्न १२१—कार्य को उपादान की अपेक्षा क्या कहते हैं ?

उत्तर—उपादेय कहते हैं ।

प्रश्न १२२—निमित्त-नैमित्तिक का द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव एक ही है या पृथक-पृथक है ?

उत्तर—निमित्त-नैमित्तिक का द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव भिन्न-भिन्न हैं ।

प्रश्न १२३—क्या निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध एक द्रव्य में उसकी पर्याय के साथ होता है ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं; निमित्त-नैमित्तिक संबंध दो पृथक-पृथक स्वतंत्र पर्यायों के बीच में होता है, एक द्रव्य में उसकी पर्याय के साथ नहीं होता है ।

प्रश्न १२४–अनेक निमित्त कारणों में कौन-कौन से भेद पड़ते हैं ?

उत्तर—अनेक निमित्त कारणों में जो मुख्य निमित्त हो उसे अन्तरंग (निमित्त) कारण कहा जाता है और गौण निमित्त हो उसे बहिरंग निमित्त कारण कहा जाता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १२५—जीव ने विकार किया तो कर्मबंध हुआ, इसमें निमित्त-नैमित्तिक बताओ ?

उत्तर—कर्मबंध हुआ नैमित्तिक, जीव का विकार निमित्त।

प्रश्न १२६—'कर्मबंध हुआ' इसमें कर्म की कितने प्रकार की दशा होती है ?

उत्तर—प्रकृति-प्रदेश-स्थिति और अनुभाग चार प्रकार की होती है।

प्रश्न १२७—प्रकृति, प्रदेश हुआ इसमें निमित्त-नमित्तिक कौन है ?

उत्तर—प्रकृति-प्रदेश नैमित्तिक, योग गुण की विकारी पर्याय, निमित्त।

प्रश्न १२८—स्थिति, अनुभाग हुआ इसमें निमित्त-नैमित्तिक कौन है ?

उत्तर—स्थिति-अनुभाग हुआ नैमित्तिक, कषायभाव निमित्त।

प्रश्न १२९–कर्मबंध हुआ, इसमें पृथक-पृथक निमित्त-नैमित्तिक किस प्रकार हुए जरा स्पष्ट समझाइये ?

उत्तर—प्रकृति-प्रदेश का वंध हुआ नैमित्तिक, योग गुण की विकारी पर्याय निमित्त ; (२) स्थिति-अनुभाग हुआ नैमित्तिक, कषायभाव, निमित्त। कर्मबंधन के लिए आत्मा के योगगुण के विकारी परिणमन को बहिरंग निमित्त कारण कहा और कर्मबंधन के लिए जीव के कषायभाव को अन्तरंग निमित्त कारण कहा। परन्तु कर्मबंधन के लिए दोनों निमित्त धर्म द्रव्य के समान हैं। परन्तु निमित्तों की पहिचान के लिए स्पष्ट किया है।

प्रश्न १३०—कर्मबंध में योग की विकारी पर्याय और कषाय-भाव कैसे निमित्त हैं ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—बहिरंग निमित्त हैं।

प्रश्न १३१—कर्मबंधन के लिए आपने योग के विकारी परिणमन को बहिरंग निमित्त और कषाय को अन्तरंग निमित्त क्यों कहा ?

उत्तर—(१) कषाय की मुख्यता बताने के लिए कषाय को अन्तरंग निमित्त कारण कहा है और योगगुण के विकारी परिणमन की गौणता बताने के लिए बहिरंग निमित्त कारण कहा है।

प्रश्न १३२—कर्मबंधन के लिए अन्तरंग और बहिरंग निमित्त कारण बताने के पीछे क्या रहस्य है ?

उत्तर—(१) प्रकृति-प्रदेश का नैमित्तिकपना अपने उपादान से हुआ, योग गुण के विकारी परिणमन के कारण नहीं। योग गुण में विकारी परिणमन के कारण प्रकृति-प्रदेश का कार्य हुआ ऐसी श्रद्धा छोड़नी है। (२) स्थिति अनुभाग का नैमित्तिकपना अपने उपादान से हुआ, कषाय के कारण नहीं। कषाय का परिणमन होने के कारण, कार्माणवर्गणा में स्थिति अनुभाग हुआ, ऐसी श्रद्धा छोड़नी।

प्रश्न १३३—दर्शन मोहनीय के उपशम से औपशमिक सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई, इसमें निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध बताओ ?

उत्तर—औपशमिक सम्यक्त्व की प्राप्ति नैमित्तिक, दर्शन मोहनीय का उपशम, निमित्त।

प्रश्न १३४—औपशमिक सम्यक्त्व में दर्शन मोहनीय कर्म का उपशम निमित्त बताया है, इसके अलावा दूसरा कोई निमित्त है ?

उत्तर—गुरु है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १३५—दर्शन मोहनीय का उपशम और गुरु, यह दो औपशमिक सम्यक्त्व में निमित्त हुए, इन दोनों निमित्तों को क्या कहा जाता है ?

उत्तर—दर्शन मोहनीय का उपशम, अंतरंग निमित्त । गुरु, वाह्य निमित्त ।

प्रश्न १३६—गुरु जो निमित्त है उसमें भी कोई भेद है ?

उत्तर—हाँ है; ज्ञानी गुरु का अभिप्राय अन्तरंग निमित्त । वाणी बहिरंग निमित्त ।

प्रश्न १३७—अन्तरंग निमित्त, बहिरंग निमित्त यह निमित्तों के भेद क्यों किये ?

उत्तर—(१) निमित्तों के उपभेद बताने के लिए भेद किये हैं । (२) सम्यग्दर्शन अपने श्रद्धा गुण के परिणमन के कारण हुआ है, निमित्तों के कारण नहीं; (३) जितने भी निमित्त हैं चाहे अन्तरंग हों, या बहिरंग हों वह सब निमित्त धर्म द्रव्य के समान ही हैं ।

प्रश्न १३८—बाई ने रोटी बनाई, इसमें निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—रोटी बनी नैमित्तिक, बाई का राग निमित्त ।

प्रश्न १३९—कर्म के कारण राग हुआ, इसमें निमित्त-नैमित्तिक बताओ ?

उत्तर—राग हुआ नैमित्तिक, चारित्र मोहनीय कर्म का उदय निमित्त ।

प्रश्न १४०—धोबी ने कपड़ा धोया, इसमें निमित्त-नैमित्तिक बताओ ?

उत्तर—कपड़ा धोया नैमित्तिक, धोबी का राग निमित्त ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १४१—धर्म द्रव्य जीव को चलाता है इसमें निमित्त नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—जीव चला नैमित्तिक, धर्म द्रव्य निमित्त।

प्रश्न १४२—(१) बढ़ई रथ बनाता है, (२) मैं रोटी खाता हूँ, (३) कर्मों के अभाव से जीव मोक्ष जाता है, (४) देह से सुख होता है, (५) मैंने बिस्तरा बिछाया, (६) ज्ञानावरणीय के क्षयोपशम से ज्ञान का उघाड़ होता है, (७) केवलज्ञान लोकालोक को जानता है, (८) दर्शन-मोहनीय के क्षय से क्षायिक सम्यक्त्व होता है, (९) मैंने किताब बनाई (१०) मैंने मेज उठाई, इस सब में निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध लगाओ ?

उत्तर—(१) रथ बना नैमित्तिक, बढ़ई का राग निमित्त। इसी प्रकार बाकी के ९ वाक्यों के उत्तर दो।

प्रश्न १४३—सकल चारित्र की प्राप्ति हुई, इसमें निमित्त नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—सकल चारित्र नैमित्तिक। अनन्तानुबन्धी आदि तीन चौकड़ी रूप द्रव्य कर्म का अभाव निमित्त।

प्रश्न १४४—औपशमिक सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई, इसमें निमित्त नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—औपशमिक सम्यक्त्व नैमित्तिक। दर्शन मोहनीय का का उपशम और अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ द्रव्य कर्म निमित्त।

प्रश्न १४५—मिथ्यात्व दशा हुई इसमें निमित्त-नैमित्तक क्या है ?

उत्तर—मिथ्यात्व दशा नैमित्तिक, दर्शन मोहनीय कर्म का उदय निमित्त।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १४६—बारहवें गुणस्थान में अल्पज्ञ दशा है इसमें निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—१२वें गुणस्थान में क्षयोपशम दशा नैमित्तिक, ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय अन्तराय कर्म का क्षयोपशम निमित्त।

प्रश्न १४७—केवलज्ञान में निमित्त-नैमित्तिक कौन है ?

उत्तर—केवलज्ञान नैमित्तिक, केवलज्ञानावरणीय कर्म का अभाव निमित्त।

प्रश्न १४८—अरहंत दशा में सिद्ध पद नहीं है, इसमें निमित्त-नैमित्तिक कौन है ?

उत्तर—अरहंत को सिद्ध पद नहीं नैमित्तिक, चार अघाति कर्म का उदय निमित्त है।

प्रश्न १४९—सच्चे श्रावकपने में निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—सच्चा श्रावकपना नैमित्तिक, दर्शनमोहनीय सहित अनन्तानुबन्धी और अप्रत्याख्यान चारित्र मोहनीय कर्म का अभाव निमित्त।

प्रश्न १५०—जीव को विभावव्यंजन पर्याय में, निमित्त-नैमित्तिक कौन है ?

उत्तर—जीव की विभावव्यंजन पर्याय नैमित्तिक, शरीर और नाम कर्म का सद्भाव निमित्त।

प्रश्न १५१—जीव की स्वभावव्यंजन पर्याय में निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—जीव की स्वभावव्यंजन पर्याय नैमित्तिक, शरीर और नामकर्म का अभाव निमित्त।

प्रश्न १५२—शुक्ललेश्या में निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—शुक्ललेश्या का भाव नैमित्तिक, चारित्र मोहनीय कर्म का मंद उदय निमित्त।

प्रश्न १५३—नो कषाय में निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—नो कषाय का भाव नैमित्तिक, चारित्र मोहनीय कर्म का उदय निमित्त।

प्रश्न १५४ अकषाय भाव में, निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—अकषाय भाव नैमित्तिक, गुणस्थान प्रमाण चारित्र मोहनीय कर्म का अभाव निमित्त।

प्रश्न १५५—शुक्लध्यान में निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—शुक्लध्यान नैमित्तिक, संज्वलन चारित्र मोहनीय कर्म का गुणस्थान अनुसार अभाव निमित्त।

प्रश्न १५६—अव्याबाध प्रतिजीवी गुण शुद्ध हुआ, इसमें निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—अव्याबाध प्रतिजीवी गुण की शुद्ध पर्याय नैमित्तिक, वेदनीय कर्म का अभाव निमित्त।

प्रश्न १५७—अवगाहन प्रति जीवीगुण शुद्ध हुआ, इसमें निमित्त-नैमित्तिकपना क्या है ?

उत्तर—अवगाहन प्रतिजीवी गुण की शुद्ध पर्याय नैमित्तिक, आयुकर्म का अभाव निमित्त।

प्रश्न १५८—अगुरुलघुत्व प्रतिजीवी गुण शुद्ध प्रगटा, तो निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—अगुरुलघुत्व प्रतिजीवी गुण को शुद्ध पर्याय नैमित्तिक, गोत्रकर्म का अभाव निमित्त।

प्रश्न १५९—सूक्ष्मत्व प्रतिजीवी गुण को शुद्ध पर्याय प्रगटी, तो निमित्त-नैमित्तिक कौन है ?

उत्तर—सूक्ष्मत्व प्रतिजीवी गुण को शुद्ध पर्याय नैमित्तिक, नाम कर्म का अभाव निमित्त।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न १६०—परम ज्ञायक स्वभाव में निमित्त नैमित्तिक क्या है।

उत्तर—परम ज्ञायक स्वभाव निरपेक्ष स्वभाव है। इसमें निमित्त-नैमित्तिक नहीं होता है, क्योंकि निमित्त-नैमित्तिक दो स्वतंत्र पर्यायों के बीच में होता है।

प्रश्न १६१—क्या कर्म है, इसलिए दोष है ?

उत्तर—बिलकुल नहीं; क्योंकि दोनों द्रव्यों के द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव पृथक-पृथक हैं। इसलिए कर्म है तो जीव में दोष हुआ, ऐसा नहीं है।

प्रश्न १६२—क्या दोष है इसलिए तो कर्म है ?

उत्तर—बिलकुल नहीं; क्योंकि दोनों पृथक्-पृथक् पदार्थ हैं।

प्रश्न १६३—ऐसा कौनसा द्रव्य है जिसकी पर्याय में निमित्त-नैमित्तिकपना न हो ?

उत्तर—ऐसी कोई भी द्रव्य की पर्याय नहीं है क्योंकि पर्याय में निमित्त-नैमित्तिकपना स्वभाव है और स्वभाव का कभी अभाव होता नहीं है।

प्रश्न १६४—जीव की अशुद्ध दशा में निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध क्या है ?

उत्तर—जीव की अशुद्ध दशा नैमित्तिक, द्रव्यकर्म का उदय, निमित्त।

प्रश्न १६५—जीव पुद्गल गति करे तो निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—जीव-पुद्गल का गमन होना नैमित्तिक, धर्म द्रव्य निमित्त।

प्रश्न १६६—जीव-पुद्गल स्थिति करे तो निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—जीव-पुद्गल की स्थिति होना नैमित्तिक, अधर्म द्रव्य निमित्त।

उत्तर १६७—छहों द्रव्यों को अवकाश देने में निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—छहों द्रव्य का अपने-अपने स्थान (क्षेत्र) में रहना नैमित्तिक, आकाश द्रव्य निमित्त।

प्रश्न १६८—छहों द्रव्यों के परिणमन में निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—छहों द्रव्यों का परिणमन नैमित्तिक, काल द्रव्य निमित्त।

प्रश्न १६९—क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—(१) क्षायिक सम्यग्दर्शन नैमित्तिक, सातों कर्म प्रकृतियों का अभाव अन्तरंग निमित्त।

प्रश्न १७०—रागादि का होना, इसमें निमित्त-नैमित्तिक कौन है ?

उत्तर—रागादि का होना नैमित्तिक, चारित्र मोहनीय का उदय और नोकर्म निमित्त।

प्रश्न १७१—छठे गुणस्थान में निमित्त-नैमित्तिकपना क्या है ?

उत्तर—(अ) शुद्ध परिणति नैमित्तिक, तीन चौकड़ी कर्म का अभाव निमित्त; तथा (आ) शुभ भाव नैमित्तिक, संज्वलन क्रोधादि का तीव्र उदय निमित्त।

प्रश्न १७२—सातवें गुणस्थान में निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—(अ) राग का अव्यक्त रूप से सद्भाव नैमित्तिक, संज्वलन क्रोधादि का मंद उदय निमित्त तथा (आ) शुद्धोप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रयोग दशा नैमित्तिक, तीन चौकड़ी तथा संज्वलन के तीव्र उदय का अभाव निमित्त।

प्रश्न १७३—जीव का स्वभाव कर्म के अभावरूप कब होता है ?

उत्तर—जीव के स्वभाव में कर्म के अभाव का और सद्भाव का कोई सम्बन्ध नहीं है; क्योंकि स्वभाव त्रिकाल एक रूप रहता है।

प्रश्न १७४—मोक्षमार्ग में प्रकाश किसका है ?

उत्तर—संवर-निर्जरारूप निश्चय रत्नत्रयरूप जैन धर्म का प्रकाश है।

प्रश्न १७५—क्या उपशम श्रेणी और क्षपक श्रेणी का कारण द्रव्य कर्म है ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं, क्योंकि श्रेणी का कारण उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण है।

प्रश्न १७६—एक जीव अनन्त काल पहले मोक्ष गया, और एक अब जा रहा है और कुछ आगे जावेंगे, उसका क्या कारण है ?

उत्तर—'उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण' है।

प्रश्न १७७—क्या जीव की अशुद्धता में उपादान कारण कर्म है ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं; क्योंकि उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण सच्चा उपादान कारण है, कर्म कारण नहीं है।

प्रश्न १७८—अज्ञानी क्या देखते हैं ?

उत्तर—विशेष को ही देखते हैं, सामान्य को नहीं देखते हैं।

प्रश्न १७९—मात्र विशेष को देखने से सामान्य को ना देखने से क्या होता है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर— आस्रव-बंध करता हुआ चारों गतियों में घूमता हुआ निगोद में चला जाता है।

प्रश्न १८०—ज्ञानी क्या देखते हैं ?

उत्तर—सामान्य को देखते हैं।

प्रश्न १८१— सामान्य को देखने से क्या होता है ?

उत्तर—संवर निर्जरा की प्राप्ति करके क्रम से मोक्ष की प्राप्ति करता है।

प्रश्न १८२—निमित्त क्या बताता है ?

उत्तर—निमित्त उपादान की प्रसिद्धि करता है। जैसे पानी का लोटा यह बतलाता है कि लोटा तो पीतल का है पानी का नहीं होता; उसी प्रकार निमित्त कहता है जैसा मैं कहता हूँ उसे झूठा मानना और उपादान जो कहता है उसे सत्य मानना; क्योंकि मैं किसी को किसी में मिलाकर कथन करता हूँ मेरे श्रद्धान से मिथ्यात्व होगा और उपादान किसी को किसी में मिलाकर निरूपण नहीं करता, उसके श्रद्धान से सम्यक्त्व होता है। और जहाँ मेरी अपेक्षा (निमित्त की अपेक्षा) कथन किया हो, उसका अर्थ "ऐसा है नहीं, निमित्तादि की अपेक्षा कथन किया है" ऐसा जानना। ऐसा पात्र जीव को निमित्त ज्ञान कराता है।

प्रश्न १८३—उपादान क्या बताता है ?

उत्तर—उपादान कहता है जो मैं कहता हूँ उसे सत्य मानना, निमित्त की बात झूठ मानना, क्योंकि मैं किसी को किसी में मिलाकर निरूपण नहीं करता; मेरे श्रद्धान से सम्यक्त्वादि की प्राप्ति होकर क्रम से मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करेगा और निमित्त किसी को किसी में मिलाकर निरूपण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करता है उसके श्रद्धान से चारों गतियों में घूमकर निगोद को प्राप्त होगा। और जहाँ मेरी अपेक्षा (उपादान की अपेक्षा) कथन किया हो उसे "ऐसा ही है" ऐसा श्रद्धान करना। ऐसा पात्र जीव को उपादान ज्ञान कराता है।

प्रश्न १८४—अज्ञानी कहते हैं कि सोनगढ़ वाले निमित्त को नहीं मानते; क्योंकि वह निमित्त से उपादान में कुछ होना नहीं मानते हैं ?

उत्तर—जैसे अन्य मतावलम्बी कहते हैं कि जैनी ईश्वर को नहीं मानते हैं; क्योंकि वह ईश्वर को उत्पन्न करने वाला, रक्षा करने वाला, पापियों को नष्ट करने वाला नहीं मानते हैं; उसी प्रकार वर्तमान में दिगम्बरधर्मी नाम धराके कहते हैं, कि सोनगढ़ वाले निमित्त को नहीं मानते हैं।

प्रश्न १८५—क्या वास्तव में सोनगढ़ वाले निमित्त को नहीं मानते हैं ?

उत्तर—वास्तव में सोनगढ़ वाले ही निमित्त को मानते हैं, क्योंकि सोनगढ़ वाले कहते हैं कि निमित्त अपना कार्य सौ टका अपने में करता है। उपादान सौ टका अपना अपने में करता है ऐसा स्वतंत्र निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है। परन्तु खोटी दृष्टि से शास्त्र पढ़ने वाले अज्ञानी कहते हैं कि निमित्त उपादान में कुछ करे, तो हम तुम्हारा निमित्त होना, माने।

प्रश्न १८६—निमित्त उपादान में कुछ करे ऐसा माना जावे तो क्या दोष आता है ?

उत्तर—उसने निमित्त को निमित्त न मानकर उपादान माना।

प्रश्न १८७—यह जीव संसार में क्यों भ्रमण कर रहा है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—निमित्त को निमित्त न मानकर परन्तु निमित्त को उपादान मानकर संसार में भ्रमण कर रहा है।

प्रश्न १८८—क्या निमित्त नहीं हैं ?

उत्तर—(१) निमित्त हैं, (२) निमित्त जानने योग्य है। (३) आश्रय करने योग्य नहीं है।

प्रश्न १८९—निमित्त का प्रभाव पड़ता है यह मान्यता किसकी है।

उत्तर—अज्ञानी मिथ्यादृष्टियों की हैं।

प्रश्न १९०—आजकल के त्यागी और पंडित नाम धराने वाले अपने को दिगम्बर धर्म के ठेकेदार मानने वाले कहते है कि निमित्त बिना काम नहीं होता, गुरु बिना ज्ञान नहीं होता, कर्म का अभाव हुए बिना मोक्ष नहीं होता है। शुभ भाव करे तो धर्म की प्राप्ति हो, क्या यह उनका कहना गलत है ?

उत्तर—बिल्कुल गलत है; क्योंकि निमित्त बिना काम नहीं होता आदि मान्यता अन्य मतों की हैं। दिगम्बर धर्म की आड़ में अन्य मत की पुष्टि करने वाले चारों गतियों में घूमकर निगोद के पात्र हैं।

प्रश्न १९१—उपादान और निमित्त किस नय का कथन है ?

उत्तर—उपादान निश्चय नय का कथन है और निमित्त व्यवहार नय का कथन है।

प्रश्न १९२—याद रखने योग्य बातें क्या-क्या हैं ?

उत्तर—(१) अनन्तरपूर्व पर्याय का व्यय होकर, जो उत्पाद रूप पर्याय होती है, वह द्रव्य में होने योग्य होवे, वह ही होती अन्य नहीं होती है; (२) जो स्वयं स्वतः कार्य करने में असमर्थ है उसका पर कुछ भी नहीं कर सकता है और जो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वतः अपना कार्य करने में समर्थ है उसका पर कुछ भी नहीं कर सकता है।

प्रश्न १८३—मुक्त दशा होने पर अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण का क्या नाम है, और क्या वह नियम से होती है ?

उत्तर—उसका नाम अयोगी केवली चौदहवां गुणस्थान है और वह नियम से होती है।

प्रश्न १८४—कोई मात्र सामान्य अंश को ही उपादान कहे तो क्या दोष आता है ?

उत्तर—वह उपादान का स्वरूप न जानने वाला वेदान्त मत वाला है।

प्रश्न १८५—कोई मात्र विशेष अंश को ही उपादान कहे तो क्या दोष आता है ?

उत्तर—वह उपादान का स्वरूप न जानने वाला बौद्धमत वाला है।

प्रश्न १८६—उपादान और निमित्त कारण है या कार्य हैं ?

उत्तर—दोनों कारण हैं कार्य नहीं हैं।

प्रश्न १८७—निमित्त और नैमित्तिक कारण हैं या कार्य हैं ?

उत्तर—निमित्त कारण है और नैमित्तिक कार्य है।

प्रश्न १८८—पर्याय नियत है या अनियत है ?

उत्तर—पर्याय स्वयं से नियत है, पर से अनियत है।

प्रश्न १८९—पर्याय नियत है. यह जरा स्पष्ट करो ?

उत्तर—तीन काल से जितने समय हैं उतनी ही एक-एक गुण में पर्याय होती है। उसे जरा भी आगे-पीछे नहीं किया जा सकता है; क्योंकि एक पर्याय को आगे-पीछे करना माना तो गुण-द्रव्य के नाश का प्रसंग उपस्थित होवेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २००—प्रत्येक कार्य क्रमबद्ध और निश्चित है तो निमित्त मिलाने की बात कहाँ से आई ?

उत्तर—(१) जब निश्चय कारण उपादान के कार्य रूप परिणमित होने का काल होता है तब निमित्त की उपस्थिति स्वयमेव होती है ऐसा वस्तु का स्वभाव है। (२) जो जीव निमित्त मिलाने के प्रयत्न में लगे रहते हैं उन्हें धर्म की प्राप्ति नहीं होगी, क्योंकि निमित्त मिलाना पड़ता नहीं है, परन्तु होता है। (३) निमित्त मिलाने की बात निगोद से आई है, क्योंकि प्रत्येक कार्य एक समय जितना होने से उसका (कार्य का) निमित्त के साथ एक समय का सम्बन्ध है। कार्य होने से पहले, निमित्त किसे कहना ? और मिलाना कैसे ?

प्रश्न २०१—उपादान और निमित्त को जानने से क्या फल आना चाहिए ?

उत्तर—[श्री प्रवचनसार गा० १९० से १९३ तक के शब्दों में] (१) व्यवहार से मोह छोड़ना; (२) व्यवहारनय में अविरोध रूप से मध्यस्थ रहना; (३) त्रिकाली उपादान के द्वारा मोह का अभाव करना; (४) मैं पर का नहीं हूँ, पर मेरे नहीं हैं ऐसा स्व-पर का परस्पर स्व-स्वामी सम्बन्ध को त्याग देना; (५) मैं एक आत्मा ही हूँ अनात्मा नहीं हूँ; (६) अपने में अपने को एकाग्र करना; (७) ध्रुव के लिए शुद्ध आत्मा ही उपलब्ध करने योग्य है; (८) अध्रुव शरीरादि उपलब्ध करने योग्य नहीं है।

प्रश्न २०२—कौनसा उपादान कारण हो, तब कार्य की उत्पत्ति नियम से होती है ?

उत्तर—उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण हो, तब नियम से कार्य की उत्पत्ति होती ही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २०३—पहले कारण या कार्य ?

उत्तर—वास्तव में सच्चे कारण-कार्य का एक ही समय होता है फिर पहले कारण और फिर कार्य, ऐसा प्रश्न ही नहीं है।

प्रश्न २०४—उपादान के कार्य के लिए और निमित्त के कार्य के लिए आचार्यों ने क्या शब्द बताया है ?

उत्तर—उपादान के कार्य को "अनुरूप" और निमित्त के कार्य को "अनुकूल" शब्द बताया है।

प्रश्न २०५—पर्याय का कारण पर तो है नहीं, परन्तु द्रव्य भी कारण नहीं और अनन्तरपूर्व पर्याय भी कारण नहीं, मात्र उस समय को योग्यता ही कारण है इसकी सिद्धि कैसे हो ?

उत्तर—देखो दरी, लाडू, चश्मा, पुस्तक यह चारों पुदगल हैं इनमें वर्ण गुण है सब की अलग-अलग पर्याय क्यों है? वर्ण गुण तो सब में है। इसलिए मानना पड़ेगा मात्र उस समय की योग्यता ही कारण है।

प्रश्न २०६—उस समय को योग्यता क्षणिक उपादान कारण को जानने से क्या लाभ है ?

उत्तर—(१) जगत में जो-जो कार्य होता है वह उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण से ही होता है। (२) पर तो उसका कारण है ही नहीं। (३) द्रव्य भी उसका कारण नहीं है। (४) अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण भी सच्चा कारण नहीं है। (५) उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण ही सच्चा कारण और कार्य हैं। ऐसा जानने से अनादिकाल से पर में कर्ता-भोक्ता की खोटी बुद्धि का अभाव होकर धर्म की प्राप्ति होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २०७—द्रव्य की योग्यता क्या है ?

उत्तर—प्रत्येक द्रव्य अपने-अपने द्रव्यरूप ही रहता है, कभी दूसरे द्रव्यरूप नहीं होता, इसलिये द्रव्यरूप योग्यता द्रव्य रूप रहती है।

प्रश्न २०८—गुण की योग्यता क्या है ?

उत्तर—प्रत्येक गुण अपने-अपने रूप हो रहता है। जसे ज्ञान गुण, ज्ञानगुण रूप ही रहता है, श्रद्धा चारित्र रूप नहीं होता है। और पुद्गल में रसगुण, रसगुण रूप ही रहता है गंध-वर्ण-स्पर्श रूप नहीं होता है। यह गुणरूप योग्यता है।

प्रश्न २०९—पर्यायरूप योग्यता क्या है ?

उत्तर—प्रत्येक द्रव्य में अनन्त-अनन्त गुण हैं। एक एक गुण में जिस समय जिस पर्याय की योग्यता है, वही होगी। एक समय भी आगे-पीछे नहीं हो सकती है। किसी भी तरह से उस योग्यता को टालने के लिए देव, इन्द्र, जिनेन्द्र भगवान भी समर्थ नहीं हैं। पर्याय की योग्यता एक समय मात्र की ही होती है।

प्रश्न २१०—उपादान उपादेय अधिकार में किस योग्यता की बात चलती है ?

उत्तर—पर्याय रूप योग्यता की बात चलती है। वह योग्यता रूप पर्याय जानने योग्य है, आश्रय करने योग्य नहीं।

प्रश्न २११—योग्यता रूप पर्याय के जानने से क्या लाभ है ?

उत्तर—(१) सब में योग्यता रूप पर्याय जो होनी है वही होगी, आगे पीछे नहीं, (२) पर में करने-कराने की बुद्धि का अभाव हो जाता है, (३) दृष्टि अपने स्वभाव पर आजाती है और जैन दर्शन के रहस्य का मर्मी बन जाता है, (४) क्रम से मोक्ष का पथिक बन जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २१२—(१) पर्याय रूप योग्यता और द्रव्य रूप योग्यता के विषय में क्या क्या जानना चाहिये ?

उत्तर—(१) पर्याय रूप योग्यता ज्ञान का ज्ञेय है, जानने योग्य है, (२) द्रव्य रूप योग्यता आश्रय करने योग्य है, क्योंकि इसके आश्रय से धर्म की शुरूआत वृद्धि और पूर्णता होती है।

प्रश्न २१३—पर्याय रूप योग्यता को विशेष रूप से समझाओ ?

उत्तर—(१) जैसे आम है, जब उसकी पकने योग्य अवस्था होती है तभी होगी, आगे पीछे नहीं। किसी ने पाल में देकर पहले पका दिया, ऐसा नहीं है। (२) आम खट्टा या मीठा हो गया, जब उसकी मीठा होने योग्य अवस्था थी, तभी हुई, आगे-पीछे नहीं और किसी के कारण से भी नहीं। (३) शरीर में बालकपन, युवावस्था, वृद्धावस्था होने योग्य होवे, तभी होती है। किसी बाह्य साधन से या किसी भी प्रकार से हेर-फेर नहीं हो सकता है। (४) महावीर भगवान को ३० वर्ष की आयु में दीक्षा का भाव आया, आदिनाथ भगवान को ८३ लाख पूर्व आयु के बाद दीक्षा का भाव आया, यह उनकी योग्यता ही ऐसी थी। (५) महावीर भगवान को दीक्षा के १२ वर्ष बाद केवलज्ञान हुआ और आदिनाथ भगवान को दीक्षा के एक हजार वर्ष बाद केवलज्ञान हुआ, मल्लिनाथ भगवान को दीक्षा लेते ही केवलज्ञान हुआ। यह सब उस समय की योग्यता की बात है किसी का कुछ भी हस्तक्षेप नहीं है। (६) सब द्रव्यों में जो जो पर्याय होती हैं, वह-वह उस-उस समय की योग्यता के कारण ही होती है। इस बात को स्वीकार करते ही दृष्टि अपने भगवान पर आती है तभी वास्तव में योग्यता को माना और जाना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २१४—जीव-पुद्गल द्रव्यों में योग्यता की बात है या सब द्रव्यों के विषय में योग्यता की बात है ?

उत्तर—(१) जीव अनन्त, पुद्गल अनन्तानन्त, धर्म अधर्म आकाश ऐकेक और लोक प्रमाण असंख्यात काल द्रव्य हैं। इन सब द्रव्यों में प्रत्येक प्रत्येक में अनन्त-अनन्त गुण हैं। प्रत्येक गुण में पर्यायों की योग्यता, जितने तीन काल के समय हैं उतनी ही पर्यायों की योग्यता है। (२) वह योग्यता क्रमबद्ध और क्रमनियमित है। उसे जरा भी कोई भी हेर-फेर नहीं कर सकता है।

प्रश्न २१५—सब द्रव्यों की पर्यायों की योग्यता क्रमबद्ध और निश्चित है, इसको कौन जानता है ?

उत्तर—चौथे गुणस्थान से लेकर सिद्ध दशा तक सब जानते हैं; जानने में जरा भी हेर-फेर नहीं है; मात्र प्रत्यक्ष-परोक्ष का भेद है।

प्रश्न २१६—योग्यता, योग्यता की बातें करे और आत्मा का आश्रय ना लेवे, तो क्या दोष आवेगा ?

उत्तर—वह स्वछन्दता का सेवन करने वाला चारों गतियों में घूमकर निगोद चला जावेगा, क्योंकि योग्यता को जानने और मानने का फल अपने स्वभाव का आश्रय लेकर सम्यग्दर्शनादि की प्राप्ति है और क्रम से निर्वाण की प्राप्ति है।

निमित्त मिलावें या नहीं

प्रश्न २१७—हम निमित्त मिलावें या नहीं ?

उत्तर—कोई किसी भी द्रव्य को मिला नहीं सकता; क्योंकि सब द्रव्य पृथक्-पृथक् हैं। निमित्त मिलाने की बुद्धि मिथ्या दृष्टियों की है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २१८—हम निमित्त क्यों नहीं मिला सकते हैं ?

उत्तर—(१) निमित्त और उपादान के कार्य का एक ही समय है; (२) निमित्त-नैमित्तिक दो स्वतंत्र द्रव्यों के एक समय की पर्यायों में ही होता है, (३) छद्मस्थ एक समय की पर्याय पकड़ नहीं सकता है, (४) एक द्रव्य की पर्याय, दूसरे द्रव्य की पर्याय में अकिंचित्कर है, (५) किस समय, किस का परिणमन नहीं होता ? सबका ही होता है, इसलिए निमित्त मिलाने की बुद्धि अनन्त संसार का कारण है।

प्रश्न २१९—निमित्त का ज्ञान क्यों कराते हैं ?

उत्तर—(१) मिथ्या दृष्टियों ने अनादि से एक-एक समय करके निमित्त का आश्रय माना है, (२) निमित्त पर द्रव्य है, उससे तेरा सम्बन्ध नहीं है ऐसा ज्ञान कराकर स्वभाव का आश्रय ले तो तेरा भला हो, (३) निमित्त का आश्रय छुड़ाने के लिए निमित्त का ज्ञान कराया है, (४) जहाँ उपादान होता है वहाँ निमित्त होता ही है इसलिए निमित्त का ज्ञान कराया है।

प्रश्न २२०—उपादान का शाब्दिक अर्थ क्या है ?

उत्तर—उप=समीप; आ=मर्यादा पूर्वक; दान=दान देना; द्रव्य के समीप में से कौनसी जैसी पर्याय की योग्यता है, उस पर्याय का प्राप्त होना, यह उपादान का अर्थ है।

प्रश्न २२१—निमित्त कितने प्रकार के हैं ?

उत्तर—(१) प्रेरक (२) उदासीन। [दूसरे प्रकार से]
(१) सद्भाव रूप निमित्त (२) अभाव रूप निमित्त।

प्रश्न २२२—चारों प्रकार के निमित्तों में क्या अन्तर है ?

उत्तर—(१) प्रेरक, उदासीन दोनों अस्ति रूप और नास्ति रूप दोनों प्रकार के हैं। (२) सद्भाव रूप निमित्त अस्ति-रूप है। और अभाव रूप निमित्त नास्ति रूप है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २२३—निमित्त और उपादान के विषय में क्या-क्या बातें याद रखनी चाहिए ?

उत्तर—(१) जब योग्यतावाला क्षणिक उपादान कारण होता है वहाँ पर नियम से निकाली उपादान कारण, अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण और निमित्त कारण नियम से होता है। कोई ना होवे, ऐसा होता ही नहीं है, (२) उपादान का कार्य उपादान से ही होता है, निमित्त से नहीं, (३) जितने भी प्रकार के निमित्त हैं, वह सब उपादान के लिए मात्र धर्म द्रव्य के समान ही हैं, (४) जब उपादान होता है, तब निमित्त होता ही है ऐसी वस्तु स्थिति है, (५) निमित्त कारण है उपादान के प्रति निश्चय से (वास्तव में) अकिंचित्कर (कुछ न करने वाला) है, इसीलिए उसे निमित्त मात्र, बलाधान मात्र, सहाय मात्र, अहेतुवत् आदि शब्दों द्वारा सम्बोधित किया जाता है, (६) किसी भी समय उपादान में निमित्त कुछ भी नहीं कर सकता है, निमित्त उपादान में कुछ करता है ऐसी बुद्धि निगोद का कारण है (७) उपादान के अनुकूल ही उचित निमित्त कारण होता है, (८) निमित्त कारण आये, तभी उपादान में कार्य होता है ऐसी मान्यता झूठी है; (९) उपादान-निमित्त दोनों एक साथ अपने- अपने कारण से होते है, (१०) कार्य उपादान से ही होता है निमित्त की अपेक्षा कथन होता है ऐसा पात्र जीव जानता है।

प्रश्न २२४—प्रेरक का अर्थ क्या है ?

उत्तर—अपने में प्रकष्ट रूप से इरण और प्रेरणा करे वह प्रेरक है।

प्रश्न २२५—क्या प्रेरक निमित्त दूसरों को प्रेरणा करता होगा ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—बिल्कुल नही; क्योंकि सब निमित्त उपादान के लिए अकिंचित्कर हैं।

प्रश्न २२६—इच्छा आदि वाले जीव और गमन क्रिया वाले जीव से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—(१) मुनि है, किसी धर्म लोभी जीव को उपदेश देने का विकल्प आवे, तो वह (मुनि) इच्छादि वाले निमित्त कहलायें, (२) अरहंत भगवान इच्छादि वाले निमित्त नहीं है, परन्तु अरहंत भगवान गमन क्रिया वाले निमित्त है।

प्रश्न २२७—सिद्ध भगवान को इच्छा नहीं है और गमन भी नहीं हैं तव वह कौन से निमित्त कहलावेंगे ?

उत्तर—सिद्ध भगवान उदासीन निमित्त कहलाये जावेंगे।

प्रश्न २२८—जब उत्पाद होता है वहाँ पर उत्पाद् के अलावा तीन बातें और कौन-कौन सी होती है ?

उत्तर—जब उत्पाद् अपनी योग्यता से होता है वहाँ पर (१) त्रिकाली उपादान कारण (२) अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादानकारण का व्यय और (३) अनुकूल निमित्त भी होता है।

प्रश्न २२९—धर्म द्रव्य ने जीव को चलाया, इसमें जीव चला, इसमें चारों बातें कैसे लगती हैं ?

उत्तर—(१) जीव चला, उत्पाद; (२) अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय का क्षणिक उपादानकारण का व्यय, (३) क्रियावती शक्ति ध्रौव्य, (४) धर्म द्रव्य निमित्त।

प्रश्न २३०—(१) मैंने किताब बनाई (२) जीव ने विकार किया तो कर्मबंध हुआ। (३) सम्यग्दर्शन हुआ (४) कुम्हार ने घड़ा बनाया इनमें उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य और निमित्त बताओ ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—(२) किताब बनी उत्पाद, (२) अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादानकारण का व्यय, (३) आहारवर्गणा के स्कंध ध्रौव्य (४) निमित्त। इसी प्रकार बाकी तीन वाक्यों में लगाकर बताओ।

प्रश्न २३१—पूर्वक का क्या अर्थ है दृष्टान्त देकर समझाइये ?

उत्तर—'पूर्वक' का अर्थ अभाव है ? जैसे :—(१) संसारपूर्वक (अभाव करके) मोक्ष होता है। (२) श्रुतज्ञान मतिज्ञान पूर्वक (अभाव करके) होता है। (३) शुभभाव पूर्वक (अभाव करके) शुद्धभाव होता है। (४) मिथ्यात्वपूर्वक (अभाव करके) सम्यग्दर्शन होता है। (५) श्रुतज्ञानपूर्वक (अभाव करके) केवल ज्ञान होता है।

प्रश्न २३२—श्री समयसार जी गाथा १०० के चार बोल क्या-क्या हैं ?

उत्तर—(१) यदि आत्मा व्याप्य-व्यापक भाव से पर द्रव्य का कर्ता बने, तो तन्मयपने का प्रसंग उपस्थित होवेगा अर्थात् अभिप्राय में आत्मा के नाश का प्रसंग उपस्थित होवेगा; (पररूपपना) (२) यदि आत्मा निमित्त नैमित्तिक भाव से पर द्रव्य का कर्ता बने, तो नित्य कर्तृत्व का प्रसंग उपस्थित होवेगा अर्थात् उसका संसार तीनों काल कायम रहेगा। (त्रिकाल संसारपना) (३) अज्ञानी का योग और उपयोग पर द्रव्य की पर्याय का निमित्त-नैमित्तिक भाव से कर्ता बनता है; (अज्ञानीपना) (४) ज्ञानी का योग और उपयोग पर द्रव्य की पर्याय का निमित्त-नैमित्तिक भाव से कर्ता नहीं, मात्र ज्ञाता है। (ज्ञानीपना)

प्रश्न २३३—नीचे लिखे वाक्यों मे सौवीं गाथा के चार बोल स्पष्ट करो–(१) कुम्हार ने घड़ा बनाया, (२) मैं जोर शोर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से बोल सकता हूँ, (३) बढ़ई ने अलमारी बनाई, (४) मैंने यह पुस्तक बनाई, (५) मैंने झाड़ू दी, (६) दर्शन मोहनीय के अभाव से क्षायिक सम्यक्त्व होता है, (७) केवलज्ञान से केवलज्ञानावरणीय कर्म का अभाव होता है, (८) आत्मा इन्द्रियों से ज्ञान करता है, (९) शास्त्र से ज्ञान होता है, (१०) मुझे कर्म चक्कर कटाता है। इन दश वाक्यों में सौवीं गाथा के चार बोल स्पष्ट करो ?

उत्तर—इन सब के उत्तर (प्रश्न २३४ से २४२ तक के अनुसार उत्तर दो)।

प्रश्न २३४—कुम्हार ने घड़ा बनाया। क्या कुम्हार व्यापक और घड़ा व्याप्य, ठीक है ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं; क्योंकि मिट्टी व्यापक और घड़ा व्याप्य है।

प्रश्न २३५—कोई चतुर कहे, कुम्हार व्यापक और घड़ा व्याप्य, तो क्या होगा ?

उत्तर—कुम्हार नष्ट होकर यदि मिट्टी बन जावे तो ऐसा कहा जा सकता है, परन्तु व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध तत्स्वरूप में ही होता है अतत्स्वरूप में नहीं होता है।

प्रश्न २३६—व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध तो एक द्रव्य का उसकी पर्याय में होता है यह बात आपकी ठीक है। लेकिन घड़ा बना नैमित्तिक और कुम्हार निमित्त तो है ना ?

उत्तर—(१) कुम्हार निमित्त नहीं है। यदि कुम्हार घड़े का निमित्त-नैमित्तिक भाव से कर्ता बने, तो कुम्हार को नित्य कर्तृत्वपने का प्रसंग उपस्थित होवेगा अर्थात् उसका संसार तीनों काल कायम रहेगा, (२) निमित्त-नैमित्तिक दो द्रव्यों की स्वतंत्र पर्यायों के बीच में होता है द्रव्य-गुण के बीच में निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध नहीं होता है, दूसरा बोल द्रव्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को अपेक्षा से है; (३) जब-जब घड़ा बने, तो कुम्हार को उपस्थित रहना पड़ेगा, वह कभी अपने बाल बच्चों को भी ना खिला सकेगा, स्वर्ग-मोक्ष में भी ना जा सकेगा, उसका संसार तीनों काल बना रहेगा। इसलिए कुम्हार निमित्त नहीं है।

प्रश्न २३७—हम द्रव्य-गुण में निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध नहीं मानते हैं इसलिए आपकी बात ठीक है, परन्तु घड़ा बना नैमित्तिक, कुम्हार का उस समय का राग निमित्त तो है ना ?

उत्तर—(१) जैसे गाय का माँस निकला हो, तो कौव्वा वहीं पर बैठता है; उसी प्रकार अज्ञानी को दृष्टि निमित्त पर ही रहती है; (२) वास्तव में अज्ञानी पर्याय में निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध शास्त्र के आधार से कहता है, उसकी बुद्धि में कर्ता-कर्म बैठा है, इसलिए कहता है कि एक समय का निमित्त तो है ना।

प्रश्न २३८—हमारी दृष्टि में कुछ बैठा हो हम तो यह पूछते हैं कि घड़ा बना नैमित्तिक, कुम्हार का उस समय का राग निमित्त है ना ?

उत्तर—जैसे घड़ा बना १० नम्बर पर, कुम्हार का राग भी १० नम्बर पर, हाथ आदि की क्रिया भी १० नम्बर पर यह तीनों अलग-अलग द्रव्यों की स्वतंत्र क्रियायें हैं; अज्ञानी को इनकी स्वतंत्रता का पता नहीं हैं। यहाँ पर कुम्हार के ज्ञान का कषायों के साथ जुड़ना—उसे उपयोग कहा और हाथ आदि की क्रिया—का मन-वचन-काय के निमित्त से आत्म प्रदेशों का चलन—वह योग है, और घड़ा बना, यह पर द्रव्य की क्रिया है। अज्ञानी योग और उपयोग पर द्रव्य को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर्याय का निमित्त-नैमित्तिक भाव से कर्ता बनता है, है नहीं ।

चार्ट को देखो

त्रिकाली उपादान	कुम्हार का चारित्र गुण	आहारवर्गणा के स्कंध	मिट्टी
	१	१	१
	२	२	२
	४	४	४
	६	६	६
	८	८	८
अनन्तरपूर्व क्षणवर्तीपर्याय क्षणिक उपादान कारण	९	९	९
उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण	१०	१०	१०
कार्य उपादेय	कुम्हार का राग	हाथ आदि की क्रिया	घड़ा बना

यह तीनों स्वतंत्र रूप से परिणमन करते हुए अपने-अपने क्रम काल में १० नम्बर पर आये, अज्ञानी कुम्हार को इसका पता नहीं है, इसलिए कुम्हार का योग और उपयोग घड़े की पर्याय का निमित्त-नैमित्तिक भाव से कर्ता बनता है ।

प्रश्न २३९—अज्ञानी कुम्हार घड़े की पर्याय का निमित्त-नैमित्तिक भाव से कर्ता बनता है; तो क्या ज्ञानी कुम्हार हो, वह स्वतंत्र पर्यायों का निमित्त-नैमित्तिक भाव से कर्ता नहीं है ?

उत्तर—वास्तव में ज्ञानी तो नं० १० अस्थिरता के राग का १० नं० हाथ आदि क्रिया का, १०. नम्बर पर घड़ा बना, उन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सबका मात्र व्यवहार से ज्ञाता है; क्योंकि ज्ञानी जानता है सब द्रव्य अपने-अपने रूप से परिणमते है कोई किसी का परिणमाया परिणमता नाहीं।

प्रश्न २४०—क्या ज्ञानी कुम्हार का घड़ा बनने में निमित्त-नैमित्तिकपना नहीं है ?

उत्तर—ज्ञातापना है, ज्ञेय-ज्ञायक सम्बन्ध भी व्यवहार से है,

चार्ट को ध्यान से देखो

त्रिकाली उपादान	कुम्हार का ज्ञान गुण	कुम्हार का चारित्र गुण	हाथ आदि आहारवर्गणा के स्कंध	मिट्टी
	१	१	१	१
	२	२	२	२
	४	४	४	४
	६	६	६	६
	८	८	८	८
अनन्तरपूर्वक्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान करण:	९	९	९	९
उस समयकी योग्यता क्षणिक उपादानकारण	१०	१०	१०	१०
कार्य—उपादेय:—हुआ	ज्ञान	अस्थिरता का राग	हाथआदि की क्रिया	घड़ा बना

क्योंकि ज्ञानी कुम्हार तो योग हाथ क्रिया का, अस्थिरता के राग का, घड़ा बनने की क्रिया का, निमित्त-नैमित्तिक भाव से कर्ता नहीं है, मात्र ज्ञाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २४१—क्या ज्ञानी कुम्हार ज्ञायक और अस्थिरता का राग हाथ आदि की क्रिया, घड़ा बना यह सब ज्ञेय है ?

उत्तर—हाँ, यह सब व्यवहार से ज्ञान का ज्ञेय है वास्तव में ज्ञानी ने अपनी ज्ञान पर्याय का ज्ञान किया है।

प्रश्न २४२—क्या आत्मा ज्ञायक, ज्ञान की पर्याय ज्ञेय यह तो ठीक है ?

उत्तर—यह भी व्यवहार कथन है, बस ज्ञायक तो ज्ञायक ही है। इसी प्रकार बाकी के ६ वाक्यों को लगाओ।

प्रश्न २४३—सौवीं गाथा में योग और उपयोग किसे कहा है ?

उत्तर—(१) योग अर्थात् मन-बचन-काय के निमित्त से आत्म-प्रदेशों का चलन; (२) उपयोग अर्थात् ज्ञान का कषायों के साथ उपयुक्त होना जुड़ना।

प्रश्न २४४—योग और उपयोग तो घटादिक द्रव्य कर्म का निमित्त-कर्ता कहा जाता है, किन्तु आत्मा को उनका कर्ता क्यों नहीं कहा जाता है ?

उत्तर—(अ) त्रिकाली आत्मा उसका कर्ता नहीं है और जिसको स्वभाव की दृष्टि हुई है वह ज्ञानी आत्मा-योग उपयोग और घटादिक द्रव्य कर्म का निमित्त-नैमित्तिक भाव से भी कर्ता नहीं है, मात्र ज्ञाता हैं। इसलिए आत्मा को उनका कर्ता नहीं कहा जाता है। (आ) आत्मा को संसार दशा में अज्ञान से मात्र योग उपयोग का कर्ता कहा जा सकता है। परन्तु घटादिक और द्रव्य कर्म का कर्ता तो किसी भी अपेक्षा से नहीं का जा सकता है। इसी प्रकार प्रश्न नं० २३३ में बाकी के ६ वाक्य हैं उनका सबका उत्तर इसी प्रकार दो।

Ganesh Varni.Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २४३—समयसार की १००वीं गाथा के चार बोलों से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—(१) द्रव्य दृष्टि से तो कोई द्रव्य अन्य किसी द्रव्य का कर्ता नहीं है, परन्तु पर्याय दृष्टि से किसी द्रव्य की पर्याय किसी समय, किसी अन्य द्रव्य की पर्याय को निमित्त होती है, इसलिए इस अपेक्षा से एक द्रव्य के परिणाम अन्य के परिणाम के निमित्त कर्ता कहलाते हैं। परमार्थतः प्रत्येक द्रव्य अपने ही परिणामों का कर्ता है, अन्य के परिणामों का अन्य द्रव्य कर्ता नहीं है।

प्रश्न २४५—१०० वीं गाथा के चार बोल समझने से क्या-क्या लाभ हैं ?

उत्तर—(१) पर में कर्ता-भोक्ता बुद्धि का अभाव होकर धर्म की प्राप्ति, (२) पंच परावर्तन का अभाव, (३) मिथ्यात्वादि पांच संसार के कारणों का अभाव, (४) पंचम पारिणामिक भाव का महत्व आ जाता है, (५) पंच परमेष्ठियों में गिनती होने लगती है, (३) क्रम से निर्वाण का पथिक होता है।

प्रश्न २४६—पर्याय का सच्चा कारण कौन है और कौन नहीं है ?

उत्तर—वास्तव में 'उस समय की योग्यता' क्षणिक उपादान कारण ही पर्याय का सच्चा कारण है, अन्य कोई कारण नहीं है।

प्रश्न २४७—द्रव्य को पर्याय का कारण क्यों कहा है ?

उत्तर—अन्य द्रव्यों से अलग करने की अपेक्षा से द्रव्य को पर्याय का कारण कहा है। वास्तव में द्रव्य पर्याय का कारण नहीं है; क्योंकि द्रव्य अनादि अनन्त है और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर्याय सादिसांत है; पर्याय के अभाव होने पर, द्रव्य का अभाव नहीं होता है; पर्याय का यदि द्रव्य कारण हो तो पर्याय अनादिअनन्त होनी चाहिए, इसलिए द्रव्य पर्याय का सच्चा कारण नहीं है।

प्रश्न २४८—अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण को अनन्तर उत्तर क्षणवर्ती पर्याय का कारण क्यों कहा है ?

उत्तर—वहाँ अभाव रूप कारण का ज्ञान कराया है। वास्तव में अभाव में से भाव की उत्पत्ति नहीं होती है और पर्याय में से पर्याय नहीं आती हैं, इसलिए पर्याय का सच्चा कारण "उस समय की योग्यता" क्षणिक उपादान कारण ही है।

प्रश्न २४९—क्या निमित्त उपादान में कुछ करता है ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं करता है, क्योंकि दोनों का स्वचतुष्ट्य पृथक-पृथक है।

प्रश्न २५०—सोनगढ़ में निश्चय की बात तो ठीक है, परन्तु व्यवहार की बात ठीक नहीं है, क्या यह बात सत्य है ?

उत्तर—एक सेठ के एक लड़का था। उसे जवानी में वेश्या सेवन का व्यसन पड़ गया। जब सेठ ने लड़के से शादी की बात कही तो लड़का कहने लगा, मैं शादी नहीं कराऊंगा परन्तु सेठ ने सोचा, यह कैसे हो सकता है। सेठ ने खानदान की एक सुन्दर लड़की से उसकी सगाई कर दी। लड़का कहता है, कि मुझे शादी नहीं करनी है; क्योंकि मैं उसका मुंह देखूंगा, तो अन्धा हो जाऊंगा तब सेठ लड़की वालों को बुलाकर कहा, कि हमारे यहाँ फेरे लड़के की आँख पर पट्टी बाँध कर होते हैं ऐसा रिवाज है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लड़की वाला राजी हो गया और शादी हो गई। लड़का घर में आँखों पर पट्टी बाँधकर आवे, तुरन्त चला जावे। लड़की होशियार थी उसे पता चल गया, मेरा पति वेश्या-गामी है तथा वेश्या ने उसे कहा है तू उसका मुँह देखेगा तो अंधा हो जावेगा। एक दिन लड़की ने अपने पति का हाथ पकड़कर कहा, आपको मालूम है कि आप मुझे देखेंगे तो अंधे हो जावोगे। आप मेरे कहे से, एक आँख पर पट्टी बँधी रहने दो और एक आँख से मुझे देख लो। तो उसने ऐसा ही किया, तो देखा आँख तो फूटी नहीं; तब उसने कहा अब दूसरी पर पट्टी बाँध लो और अब दूसरी आँख से मुझे देखो तब वह भी नहीं फूटी; तब उसने कहा अब दोनों आँखों से मुझे देखो; तो उसने जब दोनों पट्टियों को उठाकर देखा. तो आँख फूटी नहीं, और तब वेश्या पर से दृष्टि उठ गई; उसी प्रकार सोनगढ़ का निश्चय तो ठीक है, व्यवहार ठीक नहीं है तो भाई वहां जाकर देख, कैसा व्यवहार सोनगढ़ में है, लाखों रुपयों का दान होता है, नाम कोई लिखाता नहीं, दो बार प्रवचन, पूजा भक्ति होती है वह देख; कन्दमूल कोई खाता नहीं, रात्रि को पानी तक पीते नहीं। ज्यादातर पति-पत्नि ब्रह्मचर्य से रहते हैं; ६० के करीब बहिनें आजन्म ब्रह्मचर्य से रहती हैं। इसलिए हे भाई! निश्चय तो सोनगढ़ से सीखना पड़ेगा, परन्तु व्यवहार भी सोनगढ़ से सीखना पड़ेगा। जहाँ पर व्यवहार को हेय कहा जाता है देखो, वहाँ का व्यवहार कैसा है इसलिए सोनगढ़ की निश्चय की बात ठीक है और व्यवहार की बात ठीक नहीं है यह बात बिल्कुल झूठ है।

प्रश्न २५२–केवलज्ञान में लोकालोक के सब पदार्थ जानने में आते हैं उसमें उपादान-उपादेय, निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २५३—केवलज्ञान को नैमित्तिक कहें तो निमित्त कौन है ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २५४—लोकालोक को नैमित्तिक कहें तो निमित्त कौन है ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २५५—केवलज्ञान को निमित्त की अपेक्षा क्या कहते हैं ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २५६—केवलज्ञान का त्रिकाली उपादान कारण क्या है ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २५७—'उपादेय' शब्द कितने अर्थों में प्रयुक्त होता है ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २५८—केवलज्ञान को उपादेय क्यों कहा है ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २५९—कार्य को निमित्त की अपेक्षा क्या कहते हैं ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २६०—कार्य को उपादान की अपेक्षा क्या कहते हैं ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २६१—मैं जोर-शोर से बोलता हूँ इसमें १००वीं गाथा के चार बोल लगाओ ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २६२—क्या निमत्ति-नैमित्तिक, एक द्रव्य में होता है ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २६३—क्या उपादान-उपादेय दो द्रव्यों में होता है ?

उत्तर—जबानी बताओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २६४— त्रिकाली उपादान कारण को जानने का क्या लाभ है ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २६५—अनन्तरपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण को जानने का क्या लाभ है ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २६६—'उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण' को जानने का क्या लाभ है ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २६७—'मैंने रोटी बनाई' इसमें निमित्त की परिभाषा लगाओ।

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २६८—मैंने किताब उठाई, इसमें निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २६९—सिद्ध दशा में निमित्त-नैमित्तिक क्या है ?

उत्तर—जबानी बताओ।

प्रश्न २७०—भैय्या भगवतीदास जी ने "ब्रह्मविलास" में निमित्त उपादान के सम्बन्ध में क्या-क्या कहा है ?

दोहा—पाद प्रणमि जिनदेव के, एक उक्ति उपजाय।
उपादान अरू निमित्त को, कहूँ संवाद बनाय ।।१।।

अर्थ—जिनेन्द्रदेव के चरणों में प्रणाम करके एक अपूर्व कथन तैयार करता हूँ। उपादान और निमित्त का संवाद बनाकर इसे कहता हूँ।

प्रश्न—पूछत है कोऊ तहाँ, उपादान किह नाम।
कहो निमित्त कहिये कहा, कब कै है इह ठाम।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—यहाँ कोई पूछता है कि उपादान किसका नाम है ? निमित्त किसे कहते हैं ? और उनका संबंध कब से है ? सो कहो ।

उत्तर—उपादान निज शक्ति है जियको मूल स्वभाव ।
है निमित्त परयोग तें, बन्यो अनादि बनाव ॥३॥

अर्थ—उपादान अपनी जिनकी शक्ति है वह जीवका मूल स्वभाव है और पर संयोग निमित्त है उनका सम्बन्ध अनादिकाल से बना हुआ है ।

निमित्त—निमित्त कहै मोको सबै, जानत है जगलोय ।
तेरो नाव न जान ही, उपादान को होय ॥४॥

अर्थ—निमित्त कहता है कि जगत् के सभी लोग मुझे जानते हैं और उपादान कौन है, उसका नाम तक नहीं जानते ।

उपादान—उपादान कहैं रे निमित्त, तू कहा करै गुमान ।
मोकों जानें जीव वे जो हैं सम्यक् वान ॥५॥

अर्थ—उपादान कहता है कि हे निमित्त ! तू अभिमान किस लिये करता है । जो जीव सम्यक् ज्ञानी हैं वे मुझे जानते हैं ।

निमित्त—कहैं जीव सब जगत के, जो निमित्त सोई होय।
उपादान की बात को, पूछे नाहीं कोय ॥६॥

अर्थ—जगत के सब जीव कहते हैं कि—जैसा निमित्त होता है वैसा ही कार्य होता है । उपादान की बात को तो कोई पूछता ही नहीं है ।

उपादान—
उपादान बिन निमित्त तू, कर न सके इक काज।
कहा भयो जग ना लखै, जानत है जिनराज ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—उपादान कहता है कि अरे निमित्त एक भी कार्य बिना उपादान के नहीं हो सकता, इसे जगत नहीं जानता तो क्या हुआ ? जिनराज तो उसे जानते हैं।

निमित्त—देव जिनेश्वर गुरु यती, अरु जिन आगमसार।
इह निमित्त सें जीव सब, पावत हैं भवपार ॥८॥

अर्थ—निमित्त कहता है कि जिनेश्वरदेव, निर्ग्रंथ गुरू और वीतराग का आगमन उत्कृष्ट है, इन निमित्तों के द्वारा सभी जीव भव से पार होते हैं।

उपादान— यह निमित्त इह जीव के मिल्यों अनंतीबार।
उपादान पलट्यो नहीं तो भटक्यों संसार ॥९॥

अर्थ—उपादान कहता है कि यह निमित्त इस जीव को अनंतबार मिले, किन्तु उपादान-जीव स्वयं नहीं बदला, इसलिये वह संसार में भटकता रहा।

निमित्त— कै केवलि कै साधु के, निकट भव्य जो होय।
सो क्षायक सम्यक् लहै, यह निमित्त बल जोय ॥१०॥

अर्थ—निमित्त कहता है कि यदि केवली भगवान अथवा श्रुत-केवली मुनि के पास भव्य जीव हो तो क्षायिक सम्यक्त्व प्रगट होता है—यह निमित्त का बल देखो।

उपादान— केवलि अरु मुनिराज के, पास रहें बहु लोय।
पै जाको सुलटियो धनी क्षायिक ताकों होय ॥११॥

अर्थ—उपादान कहता है कि केवली और श्रुतकेवली भगवान के पास बहुत से लोग रहते हैं, किन्तु जिसका धनी [आत्मा] अनुकूल होता है, उसी को क्षायिक सम्यक्त्व होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निमित्त— हिंसादिक पापन किये, जीव नरक में जाहिं ।
जो निमित्त नहिं काम को, तो इम काहैं कहाहिं।।१२।।

अर्थ—निमित्त कहता है कि यदि निमित्त कार्यकारी न हो, तो फिर यह क्यों कहा जाता है कि—हिंसादिक पाप करने से जीव नरक में जाता है ?

उपादान— हिंसा में उपयोग जहाँ, रहे ब्रह्म के राच ।
तेई नरक में जात हैं, मुनि नहिं जाहिं कदाच ।।१३।।

अर्थ—हिंसादिक में जिसका उपयोग (चैतन्य परिणाम) हो और जो आत्मा उसमें रचा-पचा रहे वही नरक में जाता है। भावमुनि कदापि नरक में नहीं जाते ।

निमित्त— दया दान पूजा किये, जीव सुखी जग होय ।
जो निमित्त झूठौ कहो यह क्यों माने लोय ।।१४।।

अर्थ—निमित्त कहता है कि दया-दान-पूजा करने से जीव जगत में सुखी होता है। यदि आपके कथानुसार निमित्त झूठा हो, तो लोग उसे क्यों मानेंगे ।

उपादान— दया दान पूजा भली, जगत माहिं सुखकार ।
जहँ अनुभव को आचरण, तहँ यह बंध विचार ।।१५।।

अर्थ—उपादान कहता है—दया-दान-पूजा इत्यादि भले ही जगत में बाह्य सहुलियत दें, किन्तु जहाँ अनुभव के आचरण पर विचार करते हैं, वहाँ यह सब (शुभ भाव) बंध है [धर्म नहीं]

निमित्त—
यह तो बात प्रसिद्ध है, सोच देख उर माँहि ।
नर देहि के निमित्त बिन, जिय क्यों मुक्ति न जाँहि ।।१६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—निमित्त कहता है कि यह बात तो प्रसिद्ध है कि नरदेह के निमित्त बिना जीव मुक्ति को प्राप्त नहीं होता, इसलिए हे उपादान ! तू इस सम्बन्ध में अपने अन्तरंग में विचार कर देख।

उपादान— देह पींजरा जीव को, रोकै शिवपुर जात।
उपादान की शक्ति सों, मुक्ति होत रे भ्रात ॥१७॥

अर्थ—उपादान निमित्त से कहता है कि भाई ! देहरूपी पिंजरा तो जीव को शिवपुर (मोक्ष) जाने से रोकता है, किन्तु उपादान की शक्ति से मोक्ष होता है।

नोट—(देहरूपी पिंजरा जीव को मोक्ष जाने से रोकता है—यह व्यवहार कथन है। जीव शरीर पर लक्ष्य करके अपनेपन की पकड़ से स्वयं विकार में रुक जाता है, तब शरीर का पिंजरा जीव को रोकता है, यह उपचार से कथन है।)

निमित्त—
उपादान सब जीव पै, रोकन हारौ कौन।
जाते क्यों नहिं मुक्ति में, बिन निमित्त के हौन ॥१८॥

अर्थ—निमित्त कहता है कि उपादान तो सब जीवों के है तब उन्हें रोकने वाला कौन है ? वे मोक्ष में क्यों नहीं चले जाते ? स्पष्ट है कि निमित्त के न होने से ऐसा नहीं होता।

उपादान—
उपादान सु अनादिका, उलट रह्यौ जग माँहि।
सुलटत ही सूधे चलें सिद्धलोक को जाँहिं ॥१९॥

अर्थ—उपादान कहता है कि जगत में अनादि काल से उपादान उल्टा हो रहा है, उसके सुल्टे होते सच्चा-ज्ञान और सच्चा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्र प्रगट होता है और उससे वह सिद्ध लोक को जाता है—मोक्ष पाता है।

निमित्त—

कहुँ अनादि बिन निमित्त ही उलट रह्यौ उपयोग।
ऐसी बात न संभवै उपादान तुम जोग ॥२०॥

अर्थ—निमित्त कहता है कि क्या अनादि से बिना निमित्त के ही उपयोग (ज्ञान का व्यापार) उल्टा हो रहा है। हे उपादान! तुम्हारे लिए ऐसी बात तो संभव नहीं है।

उपादान—उपादान कहे रे निमित्त हम पै कहीं न जाय।
ऐसे ही जिन केवली, देखे त्रिभुवन राय ॥२१॥

अर्थ—उपादान कहता है कि हे निमित्त। मुझ से नहीं कहा जा सकता। जिनेन्द्र केवली भगवान त्रिभुवन राय ने ऐसा ही देखा है।

नोट—(यहाँ कहा है कि उपादान में कार्य होता है तब निमित्त स्वयं उपस्थित होने पर भी उपादान को वह कुछ कर सकता नहीं—ऐसा अनन्त ज्ञानियों ने अपने ज्ञान में देखा है)

निमित्त—जो देख्यो भगवान ने सो ही साँचो आहिं।
हम तुम संघ अनादि के वली कहोगे काँहि ॥२२॥

अर्थ—निमित्त कहता है भगवान ने जो देखा है वही सच है। मेरा और तेरा अनादि कालीन सम्बन्ध है। इसलिए दो में से बलवान किसे कहा जाय? अर्थात् कम से कम यह तो कहो, हम दोनों समान हैं। सम कक्ष हैं।

उपादान—उपादान कहे वह बली, जाको नाश न होय।
जो उपजत विनशत रहे, बली कहा ते सोय ॥२३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ— उपादान कहता है— जिसका नाश नहीं होता वह बलवान है। जो उत्पन्न होता है और जिसका विनाश होता है वह बलवान कैसे हो सकता है ?

नोट —(उपादान त्रिकाली अखंड एक रूप वस्तु स्वयं है इस लिए उसका नाश नहीं। निमित्त तो संयोगरूप है—आता और जाता है इसलिए नाशरूप है। अतः उपादान ही बलवान है)

निमित्त—उपादान तुम जोर हो तो क्यों लेत अहार।
पर निमित्त के योग सों जीवत सब संसार ॥२४॥

अर्थ—निमित्त कहता है कि हे उपादान ! यदि तेरा बल हो तो तू आहार क्यों लेता है ? संसार के सभी जीव पर निमित्त के योग से जीते हैं।

उपादान—
जो अहार के जाग सों, जोवित है जगमाँहि।
तो बासी संसार के, मरते कोऊ नाँहि ॥२५॥

अर्थ—उपादान कहता है कि यदि आहार के योग से जगत के जीव जोते हों, तो संसारवासी कोई भी जीव नहीं मरता।

निमित्त—
सूर सोम मणि अग्नि के, निमित्त लखें ये नैन।
अन्धकार में कित गयो, उपादान दृग दैन ॥२६॥

अर्थ—निमित्त कहता है—सूर्य, चन्द्रमा, मणि अथवा अग्नि का निमित्त हो तो आँख देख सकती है। यदि उपादान देखने का काम कर सकता हो तो अंधकार में उसकी देखने की शक्ति कहाँ चली जाती है (अन्धकार में आँख से क्यों नहीं दिखाई देता)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपादान—

सूर, सोम, मणि, अग्नि जो करे अनेक प्रकाश ।
नैन शक्ति बिन ना लखैं, अन्धकार सम भास।।२७।।

अर्थ—उपादान कहता है कि सूर्य, चन्द्रमा, मणि और दीपक अनेक प्रकार का प्रकाश करते हैं। तथापि देखने की शक्ति के बिना कुछ भी नहीं दिखाई देता, सब अन्धकार सा भासित होता है।

निमित्त—

कहै निमित्त वे जीव को मो बिन जग के माँहि ।
सबै हमारे वश परे, हम बिन मुक्ति न जाहिं ।।२८।।

अर्थ—निमित्त कहता है कि मेरे बिना जगत में मात्र जीव क्या कर सकता है ? सभी मेरे वश में हैं, मेरे बिना जीव मोक्ष भी नहीं जा सकता।

उपादान—

उपादान कहै रे निमित्त ! ऐसे बोल न बोल ।
तोको तज निज भजत हैं, ते ही करें किलोल।।२९।।

अर्थ—उपादान कहता है कि हे निमित्त ! ऐसी बात मत कर। तेरी ऊपर की दृष्टि को छोड़कर जो जीव अपना भजन करता है वही आनन्द करता है।

निमित्त—कहैं निमित्त हमको तजैं, ते कैसे शिव जात ।
पंच महाव्रत प्रगट हैं और हु क्रिया विख्यात् ।।३०।।

अर्थ—निमित्त कहता है कि मुझे छोड़कर कोई मोक्ष कैसे जा सकता है ? पंच महाव्रत तो प्रगट हैं ही और दूसरी क्रियाएँ भी प्रसिद्ध हैं। जिन्हें लोग मोक्ष का कारण मानते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपादान—पंच महाव्रत जोग त्रय और सकल व्यवहार।
पर कौ निमित्त खपाय के तब पहुँचे भवपार ।।३१।।

अर्थ—उपादान कहता है पंच महाव्रत, तीन योग की ओर का लक्ष्य और समस्त व्यवहार तथा पर निमित्त का लक्ष दूर करके ही जीव भव से पार होता है।

निमित्त—
कहैं निमित्त जग मैं बड़्यौ, मोतें बड़ौ न कोय।
तीन लोक के नाथ सब, मो प्रसाद तें होय ।।३२।।

अर्थ—निमित्त कहता है कि जगत में मैं बड़ा हूँ, मुझ से बड़ा कोई नहीं है, तीन लोक का नाथ भी मेरी कृपा से होता है।

नोट—(सम्यग्दर्शन की भूमिका में ज्ञानी जीव के शुभ विकल्प आने पर तीर्थंकर नाम कर्म का बंध होता है, इस दृष्टान्त को उपस्थित करके निमित्त अपनी बलवत्ता को प्रगट करना चाहता है।)

उपादान—उपादान कहैं तू बड़ा, चहुँ गति में ले जाय।
तो प्रसाद तें जीव सब दुःखी होंहि रे भाय ।।३३।।

अर्थ—उपादान कहता है अरे निमित्त! तू कौन? तू तो जीव को चारों गतियों में ले जाता है। भाई, तेरी कृपा से सभी जीव दुःखी ही होते हैं।

नोट—(निमित्ताधीन दृष्टि का फल चारों गति संसार है, निमित्त के कारण जीव चार गति में जाता है—ऐसा नहीं है।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निमित्त—

कहै निमित्त जो दुःख सहै, सो तुम हमहि लगाय ।
सुखी कौन तें होत है, ताको देहु बताय ।।३४।।

अर्थ—निमित्त कहता है—जीव तो दुःख सहन करता है उसका दोष तू हमारे ऊपर लगाता है, किन्तु यह भी बताओ कि जीव सुखी किससे होता है ?

उपादान—

जो सुख को तूं सुख कहै सो सुख तो सुख नांहि ।
ये सुख दुःख के मूल हैं, सुख अविनाशि मांहि ।।३५।।

अर्थ—उपादान कहता है कि तू जिस सुख को सुख कहता है वह सुख ही नहीं है, वह सुख तो दुःख का मूल है। आत्मा के अन्तरंग में अविनाशी सुख है।

निमित्त—

अविनाशी घट घट बसे, सुख क्यों विलसत नाहिं ।
शुभ निमित्त के योग बिन परे परे बिल लाहिं ।।३६।।

अर्थ—निमित्त कहता है कि अविनाशी सुख तो घट घट में प्रत्येक जीव में विद्यमान है। तब फिर जीवों को सुख का विलास—सुख का भोग क्यों नहीं होता। शुभ निमित्त के योग के बिना जीव क्षण क्षण में दुःखी हो रहा है।

उपादान—

शुभ निमित्त इह जीव को मिल्यों कंई भवसार ।
पै इक सम्यक् दर्श बिन, भटकत फिर्‌यो गंवार ।।३७।।

अर्थ—उपादान कहता है—शुभ निमित्त इस जीव को कई भावों में मिले, परन्तु एक सम्यग्दर्शन के बिना यह मूर्ख जीव [अज्ञान भाव से] भटक रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निमित्त—

सम्यक्दर्श भये कहा त्वरित मुक्ति में जाहिं ।
आगे ध्यान निमित्त है ते शिव को पहुँचाहिं ॥३८॥

अर्थ—सम्यग्दर्शन होने से क्या जीव तत्काल मोक्ष में चला जाता है ? नहीं। आगे भी ध्यान निमित्त है। जो मोक्ष में पहुँचाता है। यह निमित्त का तर्क है।

उपादान— छोर ध्यान की धारणा मोर योग की रीत ।
तोरि कर्म के जाल को जोर लई शिव प्रीत ॥३९॥

अर्थ—उपादान कहता है कि ध्यान की धारणा को छोड़कर, योग की रीति को समेटकर, कर्म जाल को तोड़कर जीव अपने पुरुषार्थ के द्वारा शिवानन्द की प्राप्ति करते हैं।

निमित्त—तब निमित्त हार्यो तहाँ अब नहिं जोर बसाय ।
उपादान शिव लोक में पहुंच्यौ कर्म खपाय ॥४०॥

अर्थ—तब निमित्त हार गया। अब कुछ जोर नहीं करता और उपादान कर्म का क्षय करके शिव लोक में पहुँच गया।

उपादान—उपादान जोत्यों तहाँ, निज बलकर परकाश ।
सुख अनन्त ध्रुव भोगवे अंत न वरन्यो तास ॥४१॥

अर्थ—इस प्रकार निज बल का प्रकाश कर उपादान जीता (वह उपादान अब) उस अनन्त ध्रुव सुख को भोगता है जिसका अन्त नहीं है।

तत्व स्वरूप—उपादान अरु निमित्त ये, सब जीवन पै वीर
जो निज शक्ति संभाल ही सो पहुँचे भवतीर ।४२।

अर्थ—उपादान और निमित्त सभी जीवों के हैं किन्तु जो वीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपनी उपादान शक्ति की संभाल करते हैं वे भव के पार को प्राप्त होते हैं।

आत्मा की महिमा—

भैया महिमा ब्रह्म की, कैसे वरनी जाय।
वचन अगोचर वस्तु है कहिवो वचन बताय ॥५३॥

अर्थ—भगवतीदास जी आत्म स्वभाव की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि भाई! ब्रह्म की (आत्म-स्वभाव की) महिमा का वर्णन कैसे किया जा सकता है। वह वस्तु वचन अगोचर है, उसे किन वचनों के द्वारा बताया जा सकता है।

सरस संवाद—

उपादान आतम निमित्त को, सरस बन्यौ संवाद।
समदृष्टि को सरल है, मूरख को बकबाद ॥४४॥

अर्थ—उपादान और निमित्त का यह सुन्दर संवाद बना है यह सम्यग्दृष्टि के लिये सरल है और मिथ्या दृष्टि के लिये बकवाद मालूम होगी।

जो आत्मा के गुणों को पहिचानता है वह इस स्वरूप को जाणे—

जो जाने गुण ब्रह्म के, सो जाने यह भेद।
साख जिनागम सो मिलै, तो मत कीज्यो खेद ॥४५॥

अर्थ—आत्मा के गुणों को जो जानता है, वह इसका मर्म जानता हैं। इस स्वरूप की साक्षी जिनागम से मिलती है इसलिए इसमें शंका नहीं करना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आग्रा में संवाद बनाया—

नगर आगरा अग्र है, जैनी जनको वास ।
तिह थानक रचना करी, 'भैया' स्व मति प्रकाश ॥४६॥

अर्थ—आगरा में जैनियों का वास ज्यादा है। वहाँ पर भगवती दास ने अपने ज्ञान के अनुसार यह रचना की है अथवा अपने ज्ञान के प्रकाश के लिये यह रचना की है।

रचना काल—

संवत् विक्रम भूप को सत्तरह सै पचास ।
फाल्गुन पहले पक्ष में दशों दिशा परकाश ॥४७॥

अर्थ—विक्रम संवत् १७५० के फाल्गुन मास के प्रथम पक्ष में इस संवाद की रचना की गई है।

प्रश्न २७१—निमित्त उपादान का बड़ा भारी झगड़ा लगता है ?

उत्तर—निमित्त उपादान का सच्चा ज्ञान तो झगड़े को समाप्त कर देता है परन्तु एक को दूसरे का कर्ता मानना यह झगड़ा है।

प्रश्न २७२—निमित्त-उपादान का झगड़ा क्यों नहीं मिटता है ?

उत्तर—उपादान-निमित्त का सच्चा ज्ञान ना होने से अपने कार्यों का कर्ता निमित्त पर लगाकर स्वयं निर्दोष बना रहना चाहता है इसलिए निमित्त-उपादान का झगड़ा नहीं मिटता है।

प्रश्न २७३—अब क्या करें तो निमित्त उपादान का झगड़ा समाप्त हो जावे ?

उत्तर—जैसा उपादान-निमित्त का स्वरूप इस शास्त्र में समझाया है उसी प्रकार समझकर अपनी ओर दृष्टि करें तो निमित्त-उपादान का झगड़ा समाप्त होकर धर्म की प्राप्ति कर क्रम से मोक्ष रूपी लक्ष्मी का नाथ बन जावे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न २७४—एक वाक्य पर कितनी बातें लगावें तो पर में कर्ता-कर्म व भोक्ता-भोग्य की खोटी मान्यता का अभाव होकर धर्म की प्राप्ति का अवकाश है ?

उत्तर— (१) जैसे बाई ने रोटी बनाई—इस पर कितने प्रश्न उठते हैं ? (२) इस पर छह कारक लगाकर बताओ ? (३) निमित्त कर्ता को जानने का क्या लाभ है ? (४) व्यवहार कारक को सत्य माने उसे शास्त्रों में क्या-क्या कहा है ? (५) त्रिकाली कर्ता को जानने का क्या लाभ है ? (६) त्रिकाली कर्ता पर छह कारक लगाकर बताओ ? (७) अनन्तपूर्व क्षणवर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण को जानने का क्या लाभ है ? (८) अनन्तपूर्व क्षण-वर्ती पर्याय क्षणिक उपादान कारण पर छह कारक लगा कर बताओ ? (९) क्या अभाव में से भाव की उत्पत्ति होती है ? (१०) क्या उस समय की योग्यता क्षणिक उपादान कारण ही सच्चा कारण है ? (११) तीन प्रकार के उपादान उपादेय किस प्रकार सिद्ध हुए ? (१२) योग्यता से क्या सिद्ध हुआ ? (१३) इस पर निमित्त की परिभाषा लगाकर बताओ ? (१४) इस पर निमित्त नैमित्तक सम्बन्ध लगाकर बताओ ? (१५) इस पर व्याप्य व्यापक लगाकर बताओ ? (१६) समयसार गाथा १०० के चार बोल लगा कर बताओ ? (१७) इतना जानने-मानने से क्या सिद्धि हुई ? इतने प्रश्न प्रत्येक वाक्यों पर लगाकार स्वयं उत्तर दो ।

॥ इति ॥

जय महावीर जय गुरुदेव

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री वीतराग विज्ञान साहित्य प्रकाशन समिति
उत्तरप्रदेशीय मुमुक्षु मंडल के द्वारा प्रकाशित
पुस्तकों का सूची-पत्र

१	जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला प्रथम भाग	१-६०
२	जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला द्वितीय भाग	१-४०
३	जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला तीसरा भाग	१-६०
४	जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला चौथा भाग	१-४०
५	जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला पाँचवाँ भाग	२-५०
६	जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला छठा भाग	१-५०
७	लघु दर्शन पूजा तत्त्वचर्चा भजन-संग्रह तथा मुमुक्षुओं के नाम खुलापत्र सहित	०-५०

पात्र जीव नीचे लिखे पतों पर पुस्तकें मंगा सकते हैं
(डाक व्यय अलग लगेगा)

नेमचन्द्र जैन
जैन बन्धु
पलटन बाजार, देहरादून
(यू० पी०)

पदमचन्द्र जैन सर्राफ
चैतन्य विलास ३/२०
महात्मा गांधीरोड
आगरा-२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi